भगवत् कृपा

स्वामी नारायण

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री,११६

वर्ष 35 अंक : 1 4.1.2012 बुधवार (जनवरी - फरवरी) शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

સ્વામિશ્રીજી

હે ગુરુજી !
આજે વિચારે આપ આવ્યા
દિવાસ્વપ્ન જ હતું
માહાત્મ્યમાં સરી પડાયું
કાકાજીને અનંત વંદન થયાં
તેઓએ ઉપદેશ્યાં જે દિવ્યજ્ઞાન
તેનાં મનન ચિંતન ચાલ્યાં...
સર્વદેશીયતા... નિર્દોષબુદ્ધિ
સત્પુરુષનો સર્વોપરીભાવ સ્વીકાર
તેઓ પ્રતિ [illegible]ભાવ
તેઓમાં પ્રત્યક્ષતાની દૃઢ નિષ્ઠા
વિચારોની હારમાળા ચાલી
તેઓને વંદન થતાં જ રહ્યાં.
તેઓની યોગીનિષ્ઠા
તેઓની સંબંધની ભક્તિ
તેઓની સ્વરૂપ એકાકાર સ્થિતિ
જેમ જેમ વિચારોમાં આવતી રહી

તેમ તેમ ગદ્ગદ્ભાવ ઉભરાતો રહ્યો
આપ આ વિચાર દોર સાથે રહ્યા
કેટલાંય વર્ષોથી આપને સાંભળ્યા છે
આપે જે કહ્યું તેનાં ચિંતન થયાં છે
ડાકોરજી પ્રત્યેની આપની ભક્તિ નિષ્ઠા
સૌ સ્વરૂપો પ્રત્યે આપની માહાત્મ્ય નિષ્ઠા
જેવા શ્રીજી તેવા જ બાપાજી
જેવા સ્વામીજી તેવા સાહેબજી
જેવા દિનકરભાઈ તેવા જ ભરતભાઈ
આપ કેવળ જ્ઞાનગંગોત્રી ધારા
શ્રીજીના દિવ્ય સ્વરૂપને પ્રસન્ન કરતા રહ્યા
તેઓના જ્ઞાનામૃતને આપ જપતા રહ્યા
આપની સંબંધ જપવાની રીત
એમ સાધકો માટે પ્રેરણામૃત છે
જ્ઞાનને જીવન બનાવવું
પ્રતિક્ષણ જીવને બનાવવું
આપને જ આચાર ને જીવન સમર્પ
તેના રોમેરોમ તે જ્ઞાન જીવંત કરતું
તે સૌ ભક્તોને મળીએ- દર્શન કરીએ
ત્યારે તે પ્રતીત થાય છે
આપ સૌના ગુરુજી છો
નિર્મળ અને પવિત્ર સંત છો
સહજ અને સરળ સાધુ છો
તે આપને સહવાસે દર્શન થાય છે
Phone પર પણ એ બ્રહ્મનાદ
આપનો હલ્લો.... એ સાંભળીએ તે
આપના પ્રતિ આત્મીયતા દઢ કરાવે છે
આપે જ્ઞાન જીવન બનાવ્યું
બાપા-શ્રીજીએ કરાવ્યું તે માનો છો
બાપાજી-સ્વામીજીએ સાથ દીધો
સાહેબજી - અક્ષરવિહારીજીએ સુહૃદભાવ દાખવ્યો

તેનો આપના હૃદયે અહોભાવ છે
ને કણ પ્રતિકણ આપના વર્તને છલકે છે.
આપની સહજ સરલ દિવ્ય મૂર્તિ
તેનાં હલન ચલન ને વર્તન
તેની સ્મૃતિઓ અમારાં અંતર આનંદે છે
આપનું સંબંધવાળા સાથે વર્તન
નિરપેક્ષભાવની બાપા-સ્વામીભક્તિ
અમ માટે પ્રેરણાનું દિવ્ય ઝરણું છે
હે દયાળુ!
આપના અમૃત મંગલે
અમારાં જીવન અમૃતમય બને
આપને યથાર્થ પામી અમૃત સમ બન્યાં
ને સૌ સંતો-ભક્તો સૌના માહાત્મ્ય
અમારાં અંતર ઉભરાતાં રહે
તેવી પ્રાર્થના ધરીએ છીએ!
આપના જેવી સુહૃદ પરાભક્તિ
આપનાં કૃપા યશભાગી સૌમાં
આપે દઢ કરાવી છે
તેવી ભક્તિ અમને કરાવજો
આપે બાપા-સ્વા-પપ્પાને
આજ પ્રગટ રાખ્યા...
તેઓના જ્ઞાનામૃતને જીવને
તેવું નિર્દંભ નિર્મળ જીવન
અમને જીવવા શક્તિ ભક્તિ દેજો
ને આપના અમૃત મંગલે
અમારી પ્રાર્થના છે.
સ્વામીજી ને ધન્ય કરજો!

[हिन्दी अनुवाद]

हे गुरुजी!

आज विचारों में आप आए
दिवास्वप्न ही था
माहात्म्य में डूब गया
काकाजी को अनंत वंदन किए
उन्होंने उपदेशा-जो दिव्यज्ञान
उसका मनन-चिंतन होने लगा...
सर्वदेशीयता... निर्दोषबुद्धि
सत्पुरुष का सर्वोपरिभाव से स्वीकार
उनके प्रति कर्ताहर्ता का भाव
उनमें प्रत्यक्षता की दृढ़ निष्ठा
विचारों की श्रृंखला चली
निरंतर वंदन होते ही रहे
उनकी योगीनिष्ठा
उनकी 'संबंध' की भक्ति
स्वरूप में उनकी एकाकार स्थिति
जैसे-जैसे विचारों में आती गई
वैसे-वैसे गद्‌गद्‌भाव उमड़ता गया
आप इन विचारों के साथ-साथ रहे
कई वर्षों से आपकी वाणी सुनी है
आपने जो कहा उसका चिंतन हुआ है
काकाजी के प्रति आपकी भक्ति निष्ठा
सभी स्वरुपों के प्रति आपकी माहात्म्य निष्ठा
जैसे काकाजी वैसे ही पप्पाजी
जैसे स्वामिजी वैसे ही साहेबजी
जैसे दिनकरभाई वैसे ही भरतभाई
आपने केवल ज्ञानगरीबी पकड़ी
काकाजी के दिव्य स्वरुप को प्रसन्न करते रहे
उनके ज्ञानामृत से आप जीते रहे
संबंध से जीने की आपकी रीति
हम साधकों के लिए प्रेरणामृत है
ज्ञान को जीवन बनाना
प्रतिक्षण जीकर दिखाना
आपको जो स्वीकारे और जीवन समर्पित करे
उसके रोम-रोम में उस ज्ञान को जीवंत करना
उन सभी भक्तों से मिलें-दर्शन करें
तब वह प्रतीत होता है
आप सभी के गुरुजी हो
निर्मल और पवित्र संत हो
सहज और सरल साधु हो
आपके सहवास से इसका दर्शन होता है
फोन पर भी वह ब्रह्मनाद
आपका हॅलो... मात्र सुनते ही
आपके प्रति आत्मीयता दृढ़ कराता है
आपने ज्ञान को जीवन बनाया
बापा-काका ने वह कराया यह मानते हो
पप्पाजी-स्वामिजी ने साथ दिया
साहेब-अक्षरविहारीस्वामिजी ने सुहृद्‌भाव दर्शाया
इस तथ्य का आपके हृदय में जो अहोभाव है
वह क्षण-प्रतिक्षण आपके वर्तन में छलकता है।
आपकी सहज सरल दिव्य मूर्ति
हलन-चलन और वर्तन की स्मृति
हमारे अंतर को आनंदित करती है
संबंध वालों के साथ आपका वर्ताव
निरपेक्षभाव की बापा-काका की भक्ति
हमारे लिए प्रेरणा का दिव्य झरना है
हे दयालु!
आपके अमृत मंगल पर
हमारा जीवन अमृतमय बने
आपको यथार्थ पाकर अमृत सरीखे बने
उन सभी संतों-भक्तों के माहात्म्य में
हमारा अंतर आनंदित रहे

ऐसी प्रार्थना करते हैं!
आपके जैसी सुहृद् पराभक्ति
जो आपकी कृपा के सभी यशभागियों को
आपने दृढ़ कराई है
ऐसी भक्ति हमें करवाना
आपने बापा-काका-पप्पा को
आज प्रगट रखा है...
उनके ज्ञानामृत को जीकर
वैसा ही निर्दंभ निर्मल जीवन
जीने की हमें शक्ति-भक्ति देना
आपके अमृतमंगल पर
है हमारी यह प्रार्थना
इसे स्वीकारना और धन्य करना!

– पू. शांतिभाई साहेब, अनुपम मिशन

✡✡✡

उत्सवों की झड़ी के संग 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' यानि– 'साक्षात्कार की हीरक जयंती' का आगमन!

२०१२ पौष मास के प्रांरभ में ही –

८ जनवरी – बृहद् गुणातीत समाज के शिरछत्र **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी का प्रागट्य पर्व** मनाने का अवसर...

९ जनवरी पौषी पूर्णिमा – आध्यात्मिक इतिहास में अद्बितीय दिन – जब संवत १८६६ में 'डभाण' गाँव में भगवान स्वामिनारायण ने अपने रहने के धाम **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी को दीक्षा** देकर गुणातीत ज्ञान का-मोक्ष का द्वार खोला। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने तो अपनी बातों में स्पष्ट रूप से बता दिया –

'भगवान का और इस साधु का जिसे ज्ञान हुआ है, उसे शेष कुछ करना नहीं। वह तो यहाँ है, तब भी अक्षरधाम में ही बैठा है... बस भगवान और इस साधु – इन दो को ही जीव में रखना। हमारा बड़प्पन साधन के बल से नहीं, बल्कि उपासना के बल से है।'

२८ जनवरी, वसंत पंचमी – शिक्षापत्री जयंती

जगत में – सत्संग में रहते हुए हमारी हर प्रकार से रक्षा हो और हम सर्वथा सुखी रहें, इस हेतु भगवान स्वामिनारायण ने **शिक्षापत्री** रची

एवं

अक्षर और पुरुषोत्तम की-ब्रह्म और परब्रह्म की सनातन युगल उपासना को मूर्तस्वरूप देकर जिन्होंने व्यापक में रख दिया, उन **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन!**

इन्होंने मोक्ष का साधन सरल भाषा में समझा कर निहाल कर दिया –

मोक्ष के सभी साधनों में एक ही श्रेष्ठ साधन है और वह है 'शरणागति' – जिससे भगवान राजी होते हैं। क्योंकि 'शरणागति' होने पर हमारे सभी कार्य भगवान स्वयं ही संपन्न करने लग पड़ते हैं...

इन उत्सवों की श्रृंखला से **'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'** का वर्ष अविस्मरणीय बन गया, क्योंकि वर्ष के आंरभ से ही गुणातीत समाज के सभी मुक्त इन दिव्य विभूतियों की मूर्ति और स्मृतियों से भरपूर रहेंगे...

धन्य है गुणातीत स्वरुपों को जिन्होंने जीवों को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने का ही केवल उद्यम किया और ऐसे भगवदी संत दिए जिन्होंने प्रगट स्वरुप की प्रसन्नता प्राप्त करने की अनोखी सूझ दी। प्रसंग

पर मनुष्यभाव या अभाव में हम न पड़ें, यूँ हमारी रक्षा की। ब्रह्म-परब्रह्म के व्यक्तिस्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज ने जीवनभर हमेशा इसी बात पर जोर दिया और इन्हें अपने आप में सम्यक् रूप से समाहित कर इसी गुणातीत भावना की अभिव्यक्ति करते हुए **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने हमारी ऐसी ही परवरिश की है। उनकी ऐसी परवरिश के फलस्वरूप ही अक्षरधाम की रीति से जीते चार पंखुड़ी वाला दिव्य गुणातीत समाज आज फला फूला है।

तो आइए, उनकी ही परावाणी के शब्दों द्वारा उन्हें समझने का न केवल प्रयास करें, अपितु इसी मार्ग पर अग्रसर रहने के लिए हमारे जीव को बल देने के लिए उनसे याचना करें...

दो चीज :

एक – *किसी भी तरह प्रभु के ही होकर रहना है यह दृढ़ ठहराव रखते हुए सुरुचि छोड़ना नहीं। सिर्फ उन्हें राजी करने की भावना छोड़ना नहीं। फलस्वरूप हमारी वृत्तियों का प्रवाह बदल जाने में समय नहीं लगेगा।*

दूसरा– *किसी के लिए अभिप्राय देना नहीं, बांधना नहीं। प्रत्यक्ष स्वरूप के संबंध में आने के बाद उसके जैसा अन्य कोई पाप धरती पर नहीं है। कोई व्यक्ति भूल करता हो, तो समझ लेना कि अच्छे के लिए कर रहा है। उससे भूल करवा कर यदि आगे ले जाने की सूझ देनी होगी, तो क्या प्रभु तुमसे कह कर उससे भूल करवाएँगे ? तुमसे पूछेंगे ? भूल करवाते हैं, उसे और तुम्हें - दोनों को आगे ले जाने के लिए। उसकी भूल में तुम भ्रमित होकर अपना ध्येय न भूल जाओ, इसका तुम्हें ध्यान रखना है।*

सहज अभिप्राय देने का मानव का स्वभाव है। मानो अपने बाप का राज चलता हो। इसी का सोच - विचार करने का या उसके बारे में अभिप्राय देने का तुम्हें क्या अधिकार है ? जो प्रसंग बनता है, उसे प्रेम से स्वीकार लो। जाग्रत रहना। अभिप्राय देना या बाधंना नहीं। चौधरी नहीं, सेवक ही रहना है। यही हमारी सर्वोपरि साधना है। ऐसे थोड़े सूत्रों को घोटने की भावना जीवन में पक्की करनी, उनकी जुगाली करनी है। ऐसा जीने के लिए महाराज और स्वामी, शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी जैसे पुरुष खूब बल दें, यही प्रार्थना!

३ फरवरी – 'गुणातीत समाज के प्राकट्य दिन की हीरक जयंती' ! भव्यातिभव्य स्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज ने अपने शूरवीर मानसपुत्र ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज को अक्षरधाम में असली नारायण के दर्शन करवा कर निज स्वरूप की यथार्थ पहचान करवाई। फलस्वरूप गुणातीत समाज के इस बेताज बादशाह ने अपने संपर्क में आए मुक्तों को जिस दिलेरी से अमृत प्रदान किया, वह कल्पना से परे की बात है। जिन - जिनको यह 'अमृत' प्राप्त हुआ, वे सभी निहाल हो गए। ब्रह्मस्वरुप काकाजी के अमृतसंकल्प की परिधि में हम सभी आ गए, यह कितने सौभाग्य की बात है।

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के जीवन में प्रारंभ से ही **'अर्चिमार्ग'** था। तभी तो आजीवन केवल गुरुहरि योगीजी महाराज की ओर ही दृष्टि रख कर भक्ति रूप जीवन जिए और... माया के भयंकर तांडव उन्हें तनिक भी विचलित नहीं कर पाए। इतना ही नहीं उनके मुखारविंद का हास्य हमेशा बरकरार रहा। हर प्रसंग पर खुद भजन किया और सभी से करवाया। पर,

जैसे कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज अकसर कहते– *'स्थिति वाले पुरुष को (पहुँची हुई विभूति को) स्थिति वाला ही पहचान सकता है।'*

इस न्याय से अक्षरधाम की इस विभूति के साक्षात्कार की यथार्थ महिमा **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज के शब्दों** में पढ़ कर, उनके साक्षात्कार की हीरक जयंती मनाने के लिए तत्पर हों...

मैत्रीभाव, सुहृद्भाव, निर्दोषभाव यानि काकाजी। *काकाजी यानि सहज आनंद स्वरूप।*

२४ घंटे, उनके अंतर का उल्लास-कैफ़, मस्ती और नशा कभी जाता नहीं था।

अच्छे या बुरे सभी प्रसंगों में–भयंकर परिस्थिति आईं, तब भी उनका स्मित... उनकी विषम अलमस्ती...

वैसी की वैसी बरकरार रही और स्वामी की ओर अखंडवृत्ति रख कर वे २४ घंटे मस्ती से घूमते ही रहे।

स्वामिनारायण के अल्प संबंध वालों में भी शास्त्रीजी महाराज को ही देखा

और

उनके साथ आत्मीयता रख कर अपेक्षारहित सेवा करते ही रहे।

काकाजी के पूरे जीवन का सार इतने में है।

किसी के सखा बन कर, तो किसी के लिए प्रभु के रूप में, और किसी के गुरु बन कर जीते हुए

काकाजी वाकई तो स्वामिनारायण का ही स्वरूप थे।

भावात्मक एकता के स्वरूप और प्रवर्तक थे *और यूँ... 'संप, सुहृद्भाव, एकता'– काकाजी के जीव का जीवन था।*

यही करवाने का उनका संकल्प या ध्येय था और वह कराए बिना वे छोड़ेंगे भी नहीं।

तो काकाजी का अखंड सान्निध्य महसूस करते हो जाएँ।

उनके जैसा ही कैफ़, उमंग, मस्ती और लगन कि–'मैं काकाजी का हूँ!'

ऐसे सुख की लहरें अखंड उछलें।

हमारी मूलवृत्ति हो, कोई 'स्व' हो, उसे निकालने के लिए ऐसे सत्पुरुष कोई न कोई प्रयोग करते ही रहते हैं।

काकाजी ने हमारे लिए बलिदान दिया।

जब काकाजी अंतर्धान हुए, उस समय विद्यानगर में मुकुंदजीवन में सॉलीड बैठ गए।

देखो! जोगी महाराज ने काकाजी को साक्षात्कार करवाया।

उसके बाद ***जोगी महाराज ने पहला प्रवचन किया कि–***

शास्त्रीजी महाराज काकाजी के अखंड वश में हो गए;

काकाजी में शास्त्रीजी महाराज बैठ गए। काकाजी शास्त्रीजी महाराजमय हो गए

और

तब से अब तक वे अखंड वैसे के वैसे ही वर्ते हैं।

यूँ उन्होंने अपने जैसा बनाया है।

और

अब अपने जैसे ही तैयार हो जाने की जब गारंटी हो गई, तब स्वतंत्र रूप से चल बसे।
सूक्ष्म रूप से अंतर में बैठे ही हैं।
आज काकाश्री से प्रार्थना करें।
वो तत्त्व जाता नहीं। एक बार प्रगट होने पर, वो जाता नहीं। रहेगा, रहेगा और रहेगा ही।
तो जो कोई भी वच. ग. अत्यं. २६ के जैसी स्थिति करना चाहता है,
वह सुख, शांति, आनंद से वर्तने के लिए तत्पर हो –
ऐसा संकल्प करके धुन करें
और
महाराज, स्वामी, काकाश्री इस संकल्प को पूरा करें, ऐसी प्रार्थना और आशीर्वाद।

ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज ने करुणा करके ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की जो महिमा बताई, उसी का हुबहू एहसास कई मुक्तों के उद्गारों द्वारा आज भी होता है। सच, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज संबंध में आए हर मुक्त के निजी बन कर, उसके अंतर को भेद कर कैसे बैठ गए, उसकी झांकी निम्न लेख द्वारा प्राप्त करके, उनके द्वारा दी गईं स्मृतियों, अनुभवों और शाश्वत् सुख की गहराई को समझ कर प्रगट स्वरुप को राजी करने की दौड़ में लग पड़ें, यही उनके प्रति **साक्षात्कार की हीरक जंयती** का सच्चा अर्घ्य कहा जाएगा...

दिल है कि मानता नहीं...!

पू. काकाजी का व्यक्तित्व अद्भुत था। वे खूब प्रतिभाशाली थे। डबल घोड़ा बॉस्की का रेशमी कुर्ता, धोती, सिर पर टोपी, गले में उनका लाक्षणिक पट्टा, हाथ में घड़ी, चेहरे पर मुक्त हास्य और मगरूर गजगति चाल से पू. काकाजी अनुपम सोहते थे। १९७७ में उनके दर्शन किए थे। प. पू. काकाजी के परम प्रिय कृपापात्र पू. हर्षदभाई भट्ट की पुत्री भावना के साथ चौपाटी के 'भवन्स हज़ारीमल सोमाणी कॉलेज' में पढ़ते हुए हमारी मैत्री हुई और वो मुझे ताड़देव ले गई थी। मुझे तब स्वामिनारायण संप्रदाय के विषय में जानकारी नहीं थी। 'स्वामिनारायण' यानि भगवान का नाम, बस इतना ही ख्याल था! जब ताड़देव जाता, तब पू. काकाजी जोर-जोर से धुन करते और करवाते। यह देख कर कुछ विचित्र लगता! भगवान स्वामिनारायण और गुणातीत संत पुरुषों की धुन ही उनका अभिमंत्र था और उससे उन्होंने अनेक जीवों का कल्याण किया – यह तथ्य तो उनके अंतर्ध्यान होने के बाद ही समझ आया। **पू. काकाजी के प्रति मेरा स्नेह 'लव ऍट फर्स्ट साईट' जैसा था।** अब इस समय उनके प्रति स्नेह-आदरभाव शायद समझ आएगा या वह बुद्धिगम्य है; परंतु उस समय बस... काकाजी हमें जँचते हैं-यानि जँचते हैं... और कुछ नहीं। पू. काकाजी यूं तो बिल्कुल निर्मानी और... प्रेमी स्वभाव के थे, परंतु **उनका रौब जबरदस्त था।** उनके लिए वह कृत्रिम नहीं, बल्कि सहज था। **हर एक को उन्हें 'बड़ा' मानना ही पड़े, ऐसी आभा के वे स्वामी थे।** यह 'ब्रह्मतेज' था। **उनका व्यक्तित्व लौहचुंबक जैसा, जबरदस्ती खींचे और मुग्ध कर दे। ऐसा होने के कारण शायद वे सभी को सहनीय भी नहीं थे।** उन्होंने गुरुहरि पू. शास्त्रीजी महाराज – पू. योगीजी महाराज के पास जो समर्पण किया, वह एक इतिहास

है; **बहनें भगवान भजें, इसके लिए उन्होंने पू. पप्पाजी और पू. हरिप्रसादस्वामिजी के साथ मिल कर विमुख प्रकरण सहित जो बलिदान दिया, उसका ऋण समग्र गुणातीत समाज भजन के सिवा किसी भी प्रकार अदा नहीं कर सकता।**

ऐसे अनन्य महापुरुष पू. काकाजी ने अपने हाथों से भावना के साथ मेरा विवाह करवाया–यह मेरा कितना बड़ा सद्भाग्य कहा जाए ? पू. काकाजी के चमत्कारों के विषय में कुछ बातें मैंने पहले भी अपने प्रसंगों में वर्णित की हैं। फिर भी कई यादें प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

जब मैं ताड़देव जाता तो पू. काकाजी मेरा कितना ख्याल रखते थे, इसका अंदाजा कई बार लग जाता था। उस समय युवा नॅरोकट चपोचप पेन्ट पहनते थे; मैं भी पहनता ! एक बार पू. काकाजी ने मुझे सहज ही कहा; ऐसे बहुत फिट कपड़े मत पहना करो। उस समय वहाँ हाज़िर अक्षरनिवासी पू. रमेशभाई सोनी ने मेरा क्षोभ दूर करने के लिए मेरी ओर से जबाव देते हुए कहा–काकाजी फिलहाल सभी ऐसे ही कपड़े पहनते हैं...! काकाजी... मन ही मन हँसते हुए बोले; ओह...! फिर भी ढीले कपड़े ज्यादा अच्छे !

मैं ताड़देव जाता, तब मुझसे भोजन-प्रसाद लेने के लिए आग्रह किया जाता। अधिकतर मैं 'ना' ही करता...! उस समय वैसे भी खाने-पीने में मेरी ज्यादा रुचि नहीं रहती थी। तब पू. काकाजी कहते–देखो... खा नहीं पाते हो, तो ज्यूस तो पियो...! वह तो चलेगा न ?

पू. काकाजी मेरे विवाह के बाद मुझे अधिकतर 'जमाईराज' ही कहते। मैं सुरत से मुंबई ताड़देव जाता, तब पू. काकाजी ने मुझसे कहा था कि सुरत से आओ तो घारी तो लेकर ही आनी...! पैसे मेरे पास से ले लेना। उसके बाद मैं जब भी पू. काकाजी के पास जाता, तब घारी लेकर जाता !

मैं सुरत आया तब पू. काकाजी ने मुझसे बातचीत में कहा था कि नवसारी में दिनकरभाई देसाई हैं; वे अपने हैं। जरुरत हो तो उनका संपर्क करना। तब वे प्रधान थे। बाद में उनके साथ बहुत अच्छे संबंध स्थापित हुए और हमेशा के लिए बन गए।

मुंबई में मैं 'जनशक्ति' अखबार में काम करता था, तब पू. काकाजी ने वज्रेश्वरी में सर्वरोग निदान शिविर का आयोजन किया था। उसके लिए पू. हर्षदभाई भट्ट और पू. देवी बहन जनशक्ति के तंत्री श्री हरिन्द्रभाई दवे को आमंत्रित करने के लिए गए। वे मुझे पहचानते थे; सो उन्होंने मुझे उस शिविर में भेजा था और कवरेज भी किया था। उसके बाद पू. काकाजी ने 'स्वामिनारायण' मंत्र के बारे में अंग्रेजी में 'रीयल ऍसेन्स ऑफ तंत्र' पुस्तक लिखी थी। उसका रिव्यु पू. हरिन्द्रभाई दवे ने स्वयं लिख कर प्रसिद्ध किया था। तब मुझे पू. काकाजी, पू. पप्पाजी, पू. हरिप्रसादस्वामिजी इत्यादि के बोचासण संस्था द्वारा अलग किए जाने के बारे में ज्ञात नहीं था। पू. हरिन्द्रभाई दवे दादर मंदिर के साथ जुड़े हुए थे और वहां के पू. हर्षदभाई दवे के साथ उनके कौटुंबिक संबंध थे। वैसे उन्हें पू. काकाजी के प्रति अहोभाव था; साथ ही वे पू. देवी बहन के भी संबंधी थे। मैंने फिर जाना कि पू. भगवतराय दवे से ही वे सत्संग का पाठ पढ़े थे और हर्षदभाई दवे भी पू. भगवतराय दवे के कुटुंबी थे। भगवान स्वामिनारायण का दवे परिवार के प्रति पहले से लगाव होने के कारण सभी प्रवाहों से कोई न कोई किसी भी प्रकार से उनसे जुड़ा हुआ था। इसीलिए शायद पू. हरिन्द्रभाई ने पू. काकाजी के प्रति अहोभाव व्यक्त किया था। हाँलाकि वे पू. काकाजी से योग के बारे में जानने के लिए काफी इच्छुक थे, परंतु मुझे ख्याल है कि वह संभव नहीं हो सका था।

पू. काकाजी कैसे प्रतिभावान थे, इसका एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत करता हूँ। कन्हैयालाल मुन्शी को कौन नहीं जानता? बहुत बड़े गुजराती साहित्यकार और राजनीति में भी बहुत अग्रणी राजपुरुष थे। सरदार वल्लभभाई पटेल के नज़दीकी थे। उनकी पत्नी लीलावती बहन भी साहित्यकार और प्रसिद्ध महिलाअग्रणी थीं। मेरे पिता मणीलाल वडिया के बड़े भाई जयशंकरभाई वर्षों से कनैयालाल मुन्शी के यहाँ नौकरी करते थे और उनके परिवार की रसोई बनाते थे। उनके खास व्यक्तियों में से थे। वे लाईब्रेरियन भी थे। जैसे कि उन्होंने बताया कि लीलावती बहन बहुत होशियार व जाग्रत महिला थीं और संत, धर्म इत्यादि को बिना प्रमाण के मानती नहीं थीं, ऐसी बौद्धिक भावना से युक्त आस्तिक थीं। पू. काकाजी से उनका जैसे ही संपर्क हुआ, तो वे खूब प्रभावित हो गई थीं। पू. काकाजी के द्वारा उन्होंने योगी डिवाइन सोसाइटी के लिए बड़ी भेंट दान के रूप में दी थी। यह देख कर-सुन कर जानने वाले स्तब्ध रह गए थे।

पू. काकाजी किसी भी अल्प संबंध वाले के संबंधी का भी काम करने के लिए तैयार रहते। मेरे चाचा के पौत्र को कांदीवली विस्तार में रहने के कारण वहाँ के स्कूल में दाखिला चाहिए था… मेरे और भावना की काफी कश्मकश के बाद कहने पर पू. काकाजी ने भट्ट साहेब द्वारा तुरंत सिफारिश पत्र लिखवा कर दे दिया था।

पू. काकाजी बहुत सरल, सीधे-सादे थे। किसी भी परिस्थिति के अनुकूल हो जाते थे। हम सुरत में नए-नए आए थे और जब किराए का मकान बदल कर, फ्लॅट लिया तब १९८१ में पू. काकाजी और पू. कांतिकाका पवई के बहनों तथा अन्य सत्संगी भाई-बहनों के साथ सुरत पौंक खाने के लिए पधारे थे। कोई व्यवस्था नहीं थी। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। पू. देवी बहन, अरुण तथा भावना ने मुंबई से आए हुए भक्तों के साथ मिल कर सारी व्यवस्था कर दी थी। पौंकनगर पू. काकाजी के जाने योग्य नहीं, ऐसा पू. घनश्यामभाई ने बातचीत में बताया। सो, घर पर ही पौंक लाए और पू. काकाजी ने खूब आनंद करवाया। उन दिनों हमारे यहाँ एक पलंग था। उस पर किराए से लाए हुए गद्दे बिछाए हुए थे। पू. काकाजी ने उस पर आराम किया और पू. कांतिकाका दूसरे पाँचेक गद्दों पर ऐसे ही सो गए। सुरत में पू. काकाजी के मिल वाले एक बड़े भक्त थे, फिर भी पू. काकाजी ने हमारे यहाँ ऐसी परिस्थिति में पधार कर-रह कर आशिष वर्षा की थी। उस समय शाम को पवई की बहनों के साथ पौंकनगर में हमने सामूहिक फोटो भी खिंचवाई थी– जो मेरे लिए एक स्मृति है।

मेरी बड़ी बेटी चि. नेहल का जन्म मुंबई में हुआ था। तब पू. काकाजी, पू. कांतिकाका इत्यादि आए थे। पू. काकाजी ने उसे जन्मघुट्टी पिलाई थी! इतना ही नहीं, बाद में उसका नाम 'नेहल' भी पू. काकाजी ने दिया था। उस समय 'नेहल' नाम कुछ विचित्र लगता था। परंतु आज के समय में वह प्रचलित बन गया है! नेहल का अर्थ कइयों ने ढूँढा, लेकिन नहीं मिला। परंतु संस्कृत की संधि विच्छेद के द्वारा हमें तुरंत समझ आया कि न + इह = यानि यहाँ का–इस लोक का नहीं वह 'नेहल'! सामान्य गुजराती अर्थ स्नेह से भरा हो वह! कैसा अच्छा नाम कहा जाए!

मेरी दूसरी पुत्री चि. सिद्धि की जन्म दिनाँक है ७ मार्च! यह कैसा योग? पू. काकाजी के स्वधामगमन की तारीख–उस दिन उसका जन्मदिन! हमारे लिए तो स्मृति ही स्मृति!

पू. काकाजी ब्रह्मलीन हुए, उस दिन दिनाँक ७ को हम घर बदल कर अन्यत्र रहने जाने के लिए सामान पेक करके खिसका रहे थे। तब हमें पू. काकाजी के बारे में खबर मिली! मालूम नहीं क्यों? लेकिन हम में से किसी ने भी माना नहीं और ऐसा ही लगा कि पू. काकाजी गए ही नहीं। मानो कुछ हुआ ही न हो ऐसी अवस्था– आज भी

समझ नहीं आता। आज भी ऐसा ही लगता है कि पू. काकाजी हैं ही... कहीं भी गए नहीं। वे सदेह नहीं, यह हक़ीक़त है; **फिर भी दिल है कि मानता नहीं...!** कोई भी शोक क्यों नहीं हुआ या नहीं होता, यह तो वे ही जानें...! परंतु एक अफसोस हमेशा के लिए है कि पू. काकाजी को राजी नहीं कर सका...! मुझे निजी तौर पर हमेशा ऐसा लगता है कि पू. काकाजी को शायद ही कोई राजी कर सका है...! शायद कोई भी राजी नहीं कर सका है – ऐसा कहते हुए मन इसलिए हिचकिचाता है कि पू. काकाजी नाराज होंगे...! **हमारे घर पधरामनी के समय बातचीत के दौरान पू. गुरुजी** ने कहा था कि जिसका जो होता है, उसके साथ भगवान जोड़ ही देते हैं...! मेरे केस में भगवान ने मुझे सभी के साथ जोड़ दिया है - यह मेरा अहोभाग्य है...!

काकाजी तूने कर दी कमाल...!

पू. काकाजी ने पवई में बहनों के लिए 'ज्योत' शुरू की, तब उत्सव में उपस्थित रहने का मुझे सद्भाग्य मिला था। तब 'ज्योत' क्या, इसकी कोई जानकारी नहीं थी। पू. हर्षदभाई भट्ट और पू. महेन्द्रभाई - बापु के नाम पर एक फ्लॅट था, उसमें पू. देवी बहन सहित पाँच-सात बहनें वहाँ रहने के लिए जाने वाली थीं। वहाँ बड़ा उत्सव हुआ, तब भी पू. काकाजी इत्यादि को सुनने का मौका मिला था। 'गुणातीत ज्ञान का संदेश सारे विश्व में छाएगा' – पू. योगीजी महाराज का यह संकल्प, उनके आशीर्वाद, उनकी प्रसादी, गुलज़ारीलाल नंदा, जमीन देने वाले शर्माजी इत्यादि के विषय में पू. काकाजी ने उल्लेख किया था। उस बारे में अब कुछ-कुछ समझ आता है। अब ख्याल आता है कि पू. काकाजी की वह आर्षवाणी थी। कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी, पवई ऐसा 'तीर्थधाम' बन गया है। वहाँ से मुंबई, महाराष्ट्र, गुजरात और विदेश में पू. काकाजी की आशिष-सौरभ फैल रही है।

– अमृत वडिया, सुरत

[મૂળ ગુજરાતી]

દિલ હૈ કિ માનતા નહીં.... !

પૂ. કાકાજીનું વ્યક્તિત્વ અદ્‌ભુત હતું. તેઓ ખૂબ પ્રતિભાશાળી હતા. ડબલ ઘોડા બૉસ્કીનો કડકડતો રેશમી ઝભ્ભો, ધોતિયું, માથા પર ટોપી, ગળામાં એમનો લાક્ષણિક પટ્ટો, હાથમાં ઘડિયાળ, ચહેરા પર મુક્ત હાસ્ય અને મગરૂર ગજગતિ ચાલે પૂ. કાકાજી અનુપમ શોભતા. ૧૯૭૭ માં મેં તેમના દર્શન કર્યા હતા. પૂ. કાકાજીના પરમ પ્રિય કૃપાપાત્ર પૂ. હર્ષદભાઈ ભટ્ટની પુત્રી ભાવના સાથે ચોપાટી પરની 'ભવન્સ હજારીમલ સોમાણી કોલેજ'માં ભણતા, અમારી મૈત્રી બંધાતા તે મને તારદેવ લઈ ગઈ હતી. મને ત્યારે સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય અંગે કશી ગતાગમ ના હતી. 'સ્વામિનારાયણ' એટલે ભગવાનનું નામ, બસ એટલો જ ખ્યાલ! તારદેવ જાઉં ત્યારે પૂ. કાકાજી જોર - જોરથી ધૂન કરે અને કરાવે, તે જોઇને કંઈ વિચિત્ર લાગતું! ભગવાન સ્વામિનારાયણ અને ગુણાતીત સંત પુરુષોની ધૂન એ જ તેમનો અભિમંત્ર હતો અને તેનાથી તેમણે અનેક જીવોનું કલ્યાણ કર્યું– એ તો તેઓ અંતર્ધ્યાન થયા પછી જ સમજાયું. **મારો પૂ. કાકાજી પ્રત્યેનો સ્નેહ 'લવ ઍટ ફર્સ્ટ સાઈટ' જેવો હતો.** હવે આ સમયે તેમના પ્રત્યે સ્નેહાદર ભાવ કદાચ સમજી શકાય અથવા તે બુધ્ધિગમ્ય છે; પરંતુ તે સમયે બસ... કાકાજી આપણને ગમે છે– એટલે ગમે છે... બીજું કંઇ નહીં. પૂ. કાકાજી આમ તો સાવ નિર્માની અને મળતાવડા, પ્રેમાળ સ્વભાવના હતા, પરંતુ **તેમનો રુઆબ જબ્બર હતો.** તેઓ માટે તે કૃત્રિમ નહીં, પંરતુ સહજ હતો. **કોઈએ પણ તેમને 'મોટા' માની જ લેવા પડે એવી**

આભાના તેઓ સ્વામી હતા. એ 'બ્રહ્મ તેજ' હતું. **તેઓનું વ્યક્તિત્વ લોહ ચૂંબક જેવું, પરાણે ખેંચે અને મુગ્ધ કરી દે એવું હોવાથી જ કદાચ તેઓ બધા માટે સહ્ય પણ ના હતા.** તેમણે ગુરુહરિ પૂ. શાસ્ત્રીજી મહારાજ—પૂ. યોગીજી મહારાજને જે સમર્પણ કર્યું તે એક ઇતિહાસ છે; **તેમણે પૂ. પપ્પાજી અને પૂ. હરિપ્રસાદસ્વામી સાથે મળીને બહેનો ભગવાન ભજે તે માટે જે વિમુખ પ્રકરણ સહિતના બલિદાન આપ્યા તેનું ઋણ સમગ્ર ગુણાતીત સમાજ તેમના ભજન સિવાય કોઈ રીતે ફેડી શકે એમ નથી.**

આવા અનન્ય મહાપુરુષ પૂ. કાકાજીએ પોતાના હસ્તે ભાવના સાથે મારા લગ્ન કરાવ્યા તે કેટલું મોટું સદ્‌ભાગ્ય કહેવાય ? પૂ. કાકાજીના ચમત્કારો અંગે કેટલીક વિગતો અગાઉના પુસ્તકમાં મારા પ્રસંગમાં વર્ણવી જ છે. પરંતુ કેટલાક સંભારણા પ્રસ્તુત કરવા યોગ્ય માનું છું.

હું તારદેવ જતો ત્યારે પૂ. કાકાજી કેવો ખ્યાલ રાખતા તેનો અવાર નવાર નિર્દેશ મળતો. એ સમયે યુવાનો નૅરોકટ ચપોચપ પેન્ટ પહેરતા; હું પણ પહેરતો ! એક વાર પૂ. કાકાજીએ મને સહજ જ કહ્યું; આવા બહુ ફીટ કપડાં નહીં પહેરવાના ! તે સમયે ત્યાં હાજર અ.નિ. પૂ. રમેશભાઈ સોનીએ મારો ક્ષોભ દૂર કરવા મારા વતી જ જવાબ આપ્યો હતો, કાકાજી અત્યારે બધા આવા જ કપડાં પહેરે છે...! કાકાજી... મરક મરક હસતા બોલ્યા; ઓહ...! પણ ખુલતા સારાં !

હું તારદેવ જતો ત્યારે મને જમવાનો - પ્રસાદ લેવાનો આગ્રહ કરાતો, ત્યારે મોટા ભાગે હું 'ના' જ પાડતો...! એ સમયે આમ પણ મને ખાવામાં બહુ રુચિ ના હતી. ત્યારે પૂ. કાકાજી કહેતા—જુઓ... ખવાય એમ ના હોય તો જ્યૂસ પીવાનો...! એ તો ચાલે ને ?

મારા લગ્ન બાદ પૂ. કાકાજી મને મોટા ભાગે 'જમાઈરાજ' જ કહેતા. હું સુરતથી મુંબઈ તારદેવ જતો ત્યારે પૂ. કાકાજીએ મને કહેલું કે સુરતથી આવો ત્યારે ઘારી તો લાવવાની જ....! પૈસા મારી પાસેથી લઇ લેવાના. ત્યાર બાદ હું જ્યારે પણ પૂ. કાકાજી પાસે જતો ત્યારે ઘારી લઈ જતો !

હું સુરત આવ્યો ત્યારે પૂ. કાકાજીએ મને વાતચીતમાં કહ્યું હતું કે નવસારીમાં દિનકરભાઈ દેસાઈ છે; તે આપણા છે. જરૂર હોય તો સંપર્ક કરવો. ત્યારે તેઓ પ્રધાન હતા. બાદમાં તેઓ સાથે ખૂબ સારો સંબંધ બંધાયો. એ કાયમી થઈ ગયો.

મુંબઈમાં હું 'જનશક્તિ' છાપામાં હતો ત્યારે પૂ. કાકાજીએ વજેશ્વરીમાં સર્વરોગ નિદાન શિબિર યોજી હતી. તે અંગે પૂ. હર્ષદભાઈ ભટ્ટ અને પૂ. દેવીબહેન જનશક્તિના તંત્રી હરીન્દ્રભાઈ દવેને આમંત્રણ આપવા આવ્યા હતા. તેઓ મને ઓળખતા હતા; તે હિસાબે તેમણે મને તે શિબિરમાં મોકલ્યો હતો અને કવરેજ પણ કર્યું હતું. એ પછી પૂ. કાકાજીએ 'સ્વામિનારાયણ મંત્ર' વિશે અંગ્રેજીમાં 'રીયલ ઍસેન્સ ઑફ તંત્ર' પુસ્તક લખ્યું હતું. તેનો રિવ્યુ ખુદ પૂ. હરીન્દ્રભાઈ દવેએ લખીને પ્રસિધ્ધ કર્યો હતો. ત્યારે મને પૂ. કાકાજી, પૂ. પપ્પાજી, પૂ. હરિપ્રસાદસ્વામિજી વગેરે ને બોચાસણ સંસ્થાએ અલગ કર્યા હોવાનો ખ્યાલ ન હતો. પૂ. હરીન્દ્રભાઈ દવે દાદર મંદિર સાથે સંકળાયેલા હતા અને ત્યાંના પૂ. હર્ષદભાઈ દવેની સાથેના તેમના કૌટુંબિક સંબંધો હતા. આમ છતાં તેમને પૂ. કાકાજી પ્રત્યે અહોભાવ હતો ; તેમજ તેઓ પૂ. દેવીબહેનના પણ સંબંધી હતા. મેં પછી જાણ્યું કે પૂ. ભગવતરાય દવે પાસેથી જ તેઓ સત્સંગના પાઠ ભણ્યા હતા અને પૂ. હર્ષદભાઈ દવે પણ પૂ. ભગવતરાય દવેના કુટુંબી હતા. ભગવાન સ્વામિનારાયણને દવે પરિવાર પ્રત્યે પ્રથમથી જ હેત હોવાથી બધા જ પ્રવાહોમાં તેઓ કોઇને કોઈ રીતે સંકળાયેલા રહ્યા જ છે. કદાચ એટલે જ પૂ. હરીન્દ્રભાઈએ પૂ. કાકાજી પ્રત્યે

અહોભાવ વ્યકત કર્યો હતો. જો કે તેઓ પૂ. કાકાજી પાસે યોગ વગેરે વિશે જાણવા ઘણાક ઈચ્છુક હતા, પરંતુ મને જાણ છે ત્યાં સુધી તે શકય બન્યું ના હતું.

પૂ. કાકાજી કેવા પ્રતિભાવંત હતા તેનો એક દાખલો અહીં પ્રસ્તુત કરૂં છું. કનૈયાલાલ મુન્શીને કોણ ન જાણે ? મોટા ગજાના ગુજરાતી સાહિત્યકાર અને રાજકારણમાં ખૂબ આગળ પડતા રાજપુરુષ હતા. સરદાર વલ્લભભાઈ પટેલના નિકટવર્તી હતા. તેમના પત્ની લીલાવતીબહેન પણ સાહિત્યકાર અને પ્રબુધ્ધ મહિલાઅગ્રણી હતા. મારા પિતા મણીલાલ વડિયાના મોટા ભાઈ જયશંકરભાઈ વર્ષોથી કનૈયાલાલ મુન્શીને ત્યાં નોકરી કરતા અને તેમના પરિવારનું જમવાનું બનાવતા. તેમના ખાસ માણસોમાંના તે હતા. તેઓ લાઈબ્રેરિયન પણ હતા. તેમની પાસેથી જાણ્યા મુજબ લીલાવતીબહેન બહુ હોશિયાર, ચોકકસ અને સંતો, ધર્મ વગેરેમાં ખાતરી વિના માને નહીં એવા બુધ્ધિવાદી આસ્તિક હતા. પૂ. કાકાજીનો તેમને જોગ થતાં જ તેઓ ખૂબ પ્રભાવિત થઇ ગયા હતા. પૂ. કાકાજી થ્રુ તેમણે યોગી ડિવાઈન સોસાઈટીને મોટી ભેટ-દાન પેટે આપી હતી. તે જોઈને - સાંભળીને તેમને જાણનારા સ્તબ્ધ થઇ ગયા હતા.

પૂ. કાકાજી કોઇ પણ જરા સરખા સંબંધવાળાના સંબંધવાળાનું ય કામ કરવા તૈયાર રહેતા. મારા કાકાના પૌત્રને તે કાંદીવલી વિસ્તારમાં રહેતા હોવાથી ત્યાંની શાળામાં ઍડ્‌મિશન જોઇતું હતું.... ખૂબ મૂંઝવણ બાદ મેં અને ભાવનાએ પૂ. કાકાજીને ભટ્ટ સાહેબ મારફત કહેતા તરત ભલામણપત્ર લખી આપ્યો હતો.

પૂ. કાકાજી ખૂબ સરળ, સાદા, સીધા હતા. કોઇ પણ પરિસ્થિતિને તેઓ અનુકૂળ થઈ જતા. અમે સુરતમાં નવા-નવા હતા અને ભાડાનું ઘર બદલી, ફ્લૅટ ભાડે લીધો ત્યારે જ ૧૯૮૧માં પૂ. કાકાજી, પૂ. કાંતિકાકા અને પવઈની બહેનો તથા અન્ય સત્સંગી ભાઈ - બહેનો સાથે સુરત પોંક ખાવા પધાર્યા હતા. કોઇ વ્યવસ્થા ના હતી. મને કંઇ સમજ ના પડે. પૂ. દેવીબહેન અને અરૂણ તથા ભાવનાએ મુંબઇથી આવેલા સૌ સાથે મળીને બધી વ્યવસ્થા ગોઠવી દીધી હતી. પોંકનગરમાં પૂ. કાકાજીને લઈ જવા યોગ્ય ના ગણાય એમ પૂ. ઘનશ્યામભાઈએ વાતચીતમાં જણાવતા ઘરે જ પોંક લાવ્યા અને પૂ. કાકાજીએ ખૂબ આનંદ કરાવ્યો. તે દિવસોમાં અમારે ત્યાં એક પલંગ હતો. તેના પર ભાડે લાવેલા ગાદલા પાથરતા. પૂ. કાકાજીને તેના પર આરામ ફરમાવ્યો હતો અને પૂ. કાંતિકાકા બીજા પાંચેક ગાદલા પર પલંગ હોય તેમ સૂતા હતા. સુરતમાં પૂ. કાકાજીના મીલવાળા એક મોટા ભકત હતા, છતાં પૂ. કાકાજીએ અમારે ત્યાં આ પરિસ્થિતિમાં પધારીને – રહીને આશિષ વર્ષા કરી હતી. તે સમયે સાંજે પવઈની બહેનો સાથે પોંકનગરમાં અમે સામૂહિક તસવીર પણ પડાવી હતી – જે સંભારણું છે.

મારી મોટી પુત્રી ચિ. નેહલનો જન્મ મુંબઈમાં થયો હતો. ત્યારે પૂ. કાકાજી, પૂ. કાંતિકાકા વગેરે આવ્યા હતા. પૂ. કાકાજીએ તેને ગળથૂથી પીવડાવી હતી ! એટલું જ નહીં, બાદમાં તેનું નામ 'નેહલ' પણ પૂ. કાકાજીએ પાડ્યું હતું. એ સમયે 'નેહલ' નામ કંઇક વિચિત્ર લાગતું હતું. પરંતુ આજના સમયે એ પ્રસ્તુત બની ગયું છે ! નેહલનો અર્થ ઘણાએ શોધ્યો, પણ ના મળ્યો. પરંતુ અમે સંસ્કૃતનો આશરો લેતા તરત સમજાયું કે ન + ઇહ = એટલે કે અહીંનું – ઈહ લોકનું નહીં તે નેહલ ! સામાન્ય ગુજરાતી અર્થ નેહથી ભર્યું હોય તે ! કેવું સરસ નામ કહેવાય !

મારી બીજી પુત્રી ચિ. સિધ્ધિની જન્મ તારીખ છે ૭મી માર્ચ ! આ કેવો યોગ ? પૂ. કાકાજીના સ્વધામગમનની તારીખ- એ તેનો જન્મ દિન ! અમારે માટે તો સ્મૃતિ જ સ્મૃતિ !

પૂ. કાકાજી બ્રહ્મલીન થયા, તે તા. ૭મીએ અમે ઘર બદલીને અન્યત્ર રહેવા જવા માટે સામાન પેક કરીને ખસેડી રહ્યા હતા. ત્યારે અમને પૂ. કાકાજી અંગેના સમાચાર મળ્યા! કોણ જાણે કેમ પણ અમને કોઈને એ માન્યામાં ના આવ્યુ અને એવું લાગ્યું કે પૂ. કાકાજી ગયા જ નથી. જાણે કંઈ ના થયું હોય એવી અવસ્થા– આજે ય સમજાતી નથી. આજે પણ એવું જ લાગે છે કે પૂ. કાકાજી છે જ.... ક્યાં ય ગયા નથી. એ સદેહે નથી, એ હકીકત છે. **છતાં દિલ હૈ કિ માનતા નહીં...!** કોઈ જ શોક કેમ નથી થયો કે નથી થતો, તે તેઓ જ જાણે...! પરંતુ એક અફસોસ હંમેશા માટેનો છે કે પૂ. કાકાજીને રાજી કરી ના શક્યો...! મને પોતાને અંગત રીતે એવું હંમેશા લાગ્યા કરે છે કે પૂ. કાકાજીને ભાગ્યે જ કોઈએ રાજી કર્યા છે...! કદાચ કોઈએ નહીં એમ કહેતા મન એટલા માટે અચકાય છે કે પૂ. કાકાજી નારાજ થશે....! **અમારે ઘરે પધરામણી વેળા વાતચીત દરમિયાન પૂ. ગુરૂજી** એવું બોલ્યા હતા કે જેના જે હોય તેની સાથે ભગવાન જોડી જ દે....! મારા કેસમાં ભગવાને મને બધા સાથે જોડી દીધો છે એ મારું અહોભાગ્ય છે...!

કાકાજી તૂને કર દી કમાલ...!

પૂ. કાકાજીએ પવઇમાં બહેનો માટે 'જ્યોત' શરૂ કરી ત્યારે યોજાયેલા સમૈયામાં ઉપસ્થિત રહેવાનું સદ્‌ભાગ્ય સાંપડ્યું હતું. ત્યારે 'જ્યોત' શું તેની કોઈ ગતાગમ નહીં. પૂ. હર્ષદભાઈ ભટ્ટ અને પૂ. મહેન્દ્રભાઈ શાહ (પૂ. બાપુ) ના નામે એક ફ્લેટ હતો, એમાં પૂ. દેવીબહેન ભટ્ટ સહિતની પાંચ સાત બહેનો ત્યાં રહેવાના હોવાની જાણ થઈ હતી. પછી મોટો સમૈયો થયો, ત્યારે પણ પૂ. કાકાજી વગેરેને સાંભળવાનો લ્હાવો મળ્યો હતો. ત્યારે 'ગુણાતીત જ્ઞાનનો સંદેશ આખા વિશ્વમાં છવાશે'– એ પૂ. યોગીજી મહારાજનો સંકલ્પ, તેમના આશીર્વાદ, તેમની પ્રસાદી, ગુલઝારીલાલ નંદા, જમીન આપનારા શર્માજી વગેરેનો પૂ. કાકાજીએ એ સ્થળેથી ઉલ્લેખ કર્યો હતો. એ અંગે હવે કશું સમજાય છે. હવે ખ્યાલ આવે છે કે પૂ. કાકાજીની એ આર્ષવાણી હતી. કદી કોઈએ કલ્પના નહીં કરી હોય એવું 'તીર્થધામ' પવઈ બની ગયું છે. ત્યાંથી મુંબઈ, મહારાષ્ટ્ર, ગુજરાત અને વિદેશમાં પૂ. કાકાજીની આશિષ-સૌરભ, પ્રસરી રહી છે.

– અમૃત વડિયા, સુરત

काका तुझ में, तू काका में हुए दोनों एकाकार...

अहो हो! **'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव'** के जयनाद से गूंज उठेगा 'ताड़देव' मंदिर का परिसर!
और... उसके अंतर्गत मनाया जाएगा **प.पू. गुरुजी का ७५वाँ प्राकट्य दिन!**
ब्रह्मस्वरुप काकाजी के साक्षात्कार की हीरक जयंती के वर्ष २०१२ में ही
प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्य दिन का मंगल अवसर 'अमृतपर्व' आना,
अपने आप में खूब सांकेतिक है...
प.पू. गुरुजी पूर्व के ही मुक्त हैं, तभी तो बापा ने डायरी में आशीर्वाद लिखा था–
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने जिन २०० मुक्तों को ब्रह्मविद्या पढ़ाई थी,
उनमें से तुम एक हो।
१७ वर्ष की आयु में प.पू. गुरुजी, प.पू. बापा और प.पू. काकाजी के संपर्क में आए...

उनसे लगाव के वश २२-२३ वर्ष की आयु में साधु की दीक्षा ली।
गुरुहरि योगीजी महाराज तो प.पू. गुरुजी के चैतन्य को हस्ताकमलवत् देख रहे थे कि–
भविष्य में यह अनेकों को प्रभु के मार्ग पर अग्रसर करेगा और मोक्षदाता बनेगा।
इसीलिए उन्होंने प.पू. गुरुजी को साधु बनाने का खूब आग्रह पकड़े रखा और...
अपने इस पसंदीदा हीरे को तराशने के लिए गुणातीत स्वरूप काकाजी के सुपुर्द कर दिया।
कुशाग्र बुद्धि होने के बावजूद प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी की रीति से वर्तने के लिए
अपने मन-बुद्धि को हमेशा ठुकराया। किसी व्यक्ति, शक्ति, पदार्थ, महोब्बत, सत्य, मान्यताएँ, वृत्ति के बजाय
एक 'स्वरूप'– प.पू. काकाजी से ही अपने आपको जोड़े रखा; साथ ही बाप-बेटे का खुल्ला संबंध दृढ़ किया।
सच, **प.पू. काकाजी कैसे विज़नरी होंगे कि–**
इतने सारे संतों में उन्होंने प.पू. गुरुजी को ही दिल्ली के लिए चुना।
प.पू. काकाजी की वचनरूपी मूर्ति लेकर वे दिल्ली आ गए।
ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने प.पू. बापा के इस हीरे को इस कदर तराशा कि–
उसने अपना अस्तित्व उनमें लीन करके, उनकी जीवनशैली और सिद्धांतों को अपनाते हुए,
दासत्वभक्ति से संबंध में आए मुक्तों के जीवन की 'होली' को 'दीवाली' में परिवर्तित कर दिया।
उन्हें जीवदशा में से उबार कर अर्चिमार्ग की ओर अग्रसर करने के लिए
प्रार्थना और संकल्प से निरंतर उद्यम कर रहे हैं।
ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के दूत-पैगंबर समान **प.पू. गुरुजी का जीवन खुली किताब के जैसा है।**
उपेदश से नहीं बल्कि अपने पारदर्शी व्यवहार से मुक्तों के दिलों में स्थान बनाया है।
उनकी कथनी और करनी एक ही है।
वे जो कहते हैं, उसे दिल की सच्चाई से मानते हैं और वैसा ही उनके वर्तन में रहता है।
इसीलिए **प.पू. शांतिभाई** ने अपने उद्गार में लिखा है– ***ज्ञान जीकर बताया...***
आध्यात्मिकता के गूढ़ रहस्य भी खूब सिम्पलीफाई करके समझाते हैं,
जो सबको आसानी से समझ में आ जाते हैं।
हर समस्या का समाधान उन्हें एकमात्र भजन से ही लेते हुए पाया है
और अपने आश्रितों को भी इसी राह पर अग्रसर किया है।
प.पू. काकाजी की भाँति प.पू. गुरुजी को क्वॉंटिटी नहीं, बल्कि क्वॉलिटी चाहिए।
इसलिए भीड़ इकट्ठी करने की एप्रोच लेने की बजाय,
प्रभु के होकर-प्रभु के बल से जीने वाले नूतन गुणातीत कबीले का उन्होंने विकास किया है।
विचरण में जाते हैं, तो भक्तों को आनंद कराते हुए देर रात तक बैठते हैं।
भक्तों के सुख से सुखी, भक्तों के दुःख से दुःखी... भक्तों के आनंद में ही मानो उनका आंनद समाया है।
उनकी जीवनशैली में–
करुणा, निःस्वार्थ, निर्व्याज व निष्काम प्रेम, दृढ़ता, माहात्म्य व अनुशासन का अद्भुत समन्वय है।
संतों-युवकों-बहनों-गृहस्थों, बड़े-बूढ़े, युवा-बच्चों– सभी के जीवन में उनके लेवल पर आकर

प.पू. गुरुजी ऐसे ओत-प्रोत हुए हैं कि हर एक को लगता है कि वे मेरे हैं...
प्रभु को अखंड रखी हुई विभूति ही ऐसा अनुभव करा सकती है न!
प.पू. गुरुजी की प्रतिभा ऐसी न्यारी व दिव्य है कि–
जो भी एक बार उन्हें मिल लेता है, वह उनकी छवि भूला नहीं पाता। वे उसके स्वजन ही बन जाते हैं।
उनके द्वारा तैयार किए गए समाज को देखकर प.पू. गुरुजी के सामर्थ्य का सहज दर्शन होता है।
वे उनके जीवन के केन्द्रबिन्दू बन जाते हैं। सच्चाई तो यही है कि–
प.पू. गुरुजी के भजन, प्रार्थना, संकल्प से साधना के प्रगति के पथ पर हम सब चल पा रहे हैं।
ऐसे समर्थ होते हुए भी अल्प संबंध वालों के समक्ष शून्य बन कर रहते हैं।
उनके रोम-रोम में केवल प.पू. काकाजी की भक्ति ही निहित है।
प.पू. काकाजी का सेवन इस कदर किया कि आज वे खुद उनका स्वरूप बन गए–
ऐसी अनेकों को अनुभूति होती है।
मेरी कीर्ति फैले, यश बढ़े या बहुत लोग मुझे पूजने लगें, टोले के टोले इकट्ठे हो जाएँ, लोकप्रियता बढ़ जाए ऐसी महत्वाकांक्षा उनमें कभी रंचमात्र दिखाई नहीं पड़ी।
बस प.पू. काकाजी को कैसे अमर कर दूँ, संबंध में आने वाले का कैसे श्रेय कर दूँ– यही उनकी जीवनभावना रही है।
आज जो भी प.पू. गुरुजी के पास आता है, वह शांति पाता है। आत्मा के आनंद की तृप्ति पाता है।
प.पू. गुरुजी अपने स्वरूप को अधिक से अधिक छिपाए ही रखते हैं।
उनके व्यक्तित्व को पहचानना खूब कठिन है।
प.पू. काकाजी की मूर्ति उनकी दौलत है!
प.पू. पप्पाजी के शब्दों में– *उन्होंने वच. प्रथम ५८ सिद्ध किया है।*
प.पू. काकाजी से अनुपम संबंध करके निष्कामी, निर्लोभी, निःस्वादी, निर्मानी गुणों के धारक बन कर आज अनेकों के प्राणाधार-पथप्रदर्शक बने हैं।
प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के शब्दों में– *'गुरुजी का जीवन साधक मात्र के लिए आदर्श रूप है।'*
यह बात भी पक्की है कि प.पू. काकाजी को स्थूल शरीर छोड़े २६ साल हुए,
लेकिन प.पू. गुरुजी ने कभी भी हमें उनकी कमी महसूस नहीं होने दी।
स्वामी की बातों में लिखा है– *जिसे देख कर छाती में ठंडक हो, ऐसा तो कोई विरल ही होता है।*
आज ऐसी ठंडक की अनुभूति प.पू. गुरुजी के द्वारा होती है।
प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की हीरक जयंती के उत्सव निमित्त प.पू. गुरुजी ने बताया है कि–
प.पू. काकाजी महाराज को शिविर खूब पसंद थी... तो, यह उत्सव भी हमें शिविर के रूप में मनाना है।
ताकि प.पू. काकाजी के रुचि, रहस्य, अभिप्राय को गहराई से समझ पाएँ।
और... दिल्ली मंदिर की कलशविधि के साथ सुहृद्भाव का कलश चढ़ा कर प.पू. काकाजी को हाश करें!
तो, आओ–हम सब मिलजुल कर एक-दूसरे का स्वीकार करके,
यह उत्सव इस प्रकार मनाएँ कि प.पू. गुरुजी का अंतर हर्ष से नाच उठे!

स्वामिश्रीजी

सौरभ - ४५

...जो मुक्त प.पू. गुरुजी को मानते हैं, उन सबके लिए गुरुजी ने आज एक ही वाक्य में जीवन का अर्थ बता दिया। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार शरीर को टिकाने के लिए–बल प्रदान करने के लिए, ख़ुराक की आवश्यकता है, उसी प्रकार आत्मा को भी ख़ुराक की जरूरत होती है। **आत्मा की ख़ुराक भजन और सत्संग है। आत्मा को जब तक उन्नत नहीं बनाएंगे, तब तक गुरुजी के हृदय तक हम नहीं पहुँच पाएंगे।** परमात्मा की बात तो दूर रही, हम तो प.पू. गुरुजी तक भी नहीं पहुँच पाएँगे। अगर इतनी ऊँची आत्मा बनना है तो हमें भजन और सत्संग करना चाहिए...

मैं जब मंत्री बना तो पहली बार गुरुजी के संपर्क में आया... गुरुजी से मिलने के बाद मुझे लगने लगा कि **गुरुजी को इस जन्म से नहीं, बल्कि पिछले कई जन्मों से जानता हूँ।** आपसे मैं यही कहता हूँ कि **गुरुजी के अन्तरतम बन कर उनके नज़दीक रहकर, धीरे-धीरे आगे बढ़ोगे, तो आपको लगेगा कि जैसे परमात्मा में आत्मा मिल रही है,** उसी प्रकार गुरुजी से हमारा जीव, आत्मा और शरीर मिल जाता है। इतना प्यार, इतना प्रेम गुरुजी हमें देते हैं। कल मैंने देखा कि जब सत्संग सभा पूरी हुई, साऊथ अफ्रीका और इंडिया के बीच मैच चल रहा था; गुरुजी वह देखने के लिए बैठे हुए थे। आस-पास बैठे हुए भक्तजन खूब आनंद ले रहे थे। गुरुजी हमें कोई मैच दिखाने के लिए बैठे थे, ऐसा नहीं। जीवन में मानव के प्रति, भक्त के प्रति व्यवहार कैसा होना चाहिए, यह गुरुजी ने हमें सिखाया...

मुझे नहीं लगता है कि गुरुजी जैसे और भी कोई गुरु मिलेंगे। मिलना तो और बात है, मुझे लगता है जितना परमात्मा को मिलना-पाना असंभव है, उतना ही ऐसे गुरुजी का मिलना असंभव हैं। हमारे गुरुजी एक सरल–सहज आम आदमी जैसे हैं। ऐसे तो बहुत कम गुरु हमें मिलेंगे।

जब गुरुजी के साथ पहला मिलन हुआ, तब मैंने समझा था कि मिनिस्टर से मिलने तो सब आते हैं। माला पहनाएगें, बातें भी करेंगे। आगे जाकर उनकी कुछ न कुछ डिमांड भी होगी, कुछ न कुछ कहेंगे। लेकिन **मुझे आश्चर्य हुआ कि गुरुजी तो हमेशा सिर्फ मंदिर आने के लिए कहते। मंदिर में आने पर कभी कुछ काम करने को नहीं कहते।** बस, एक बार गुरुजी ने बड़े प्रेम से मुझसे कहा कि **प.पू. काकाजी** की स्मृति में एक पोस्टल स्टैम्प निकालनी है। गुरुजी ने कहा कि यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि **उनकी वजह से आज हम सब हैं।** मैंने भी ठान ली कि कम से कम एक काम तो करूँ। काकाजी की पोस्टल स्टेम्प निकालने की दिक्कत थी। एक बार रिजेक्ट भी हुई, लेकिन मैंने गुरुजी से कहा कि अगर मिनिस्ट्री में रहा तो जो भी होगा, मैं अपना सब कुछ दांव पर लगा दूँगा, लेकिन काकाजी की पोस्टल स्टेम्प तो निकलवा कर ही रहूँगा और... आख़िर यही हुआ। मुझे भी आज लगता है कि आप सब काकाजी के बारे में इतनी बातें करते हैं, मैंने तो उन्हें अपने जीवन में नहीं देखा। हाँ, पप्पाजी को जरूर देखा, लेकिन मन में ये जरूर मानता हूँ कि चलो काकाजी को नहीं देखा, फिर भी गुरुजी ही हमारे काकाजी हैं। उन्हें ही मानकर मैं चलता हूँ; **गुरुजी ही मेरे लिए काकाजी और पप्पाजी हैं।**

मैं कभी-कभी गुरुजी की अच्छी बातें करने में संकोच भी करता हूँ कि क्या कहूँ ? लेकिन एक घटना का मुझे जो अनुभव हुआ, जो मैंने महसूस किया, उससे मुझे लगता है कि चमत्कार गुरुजी भी करा सकते हैं। गुरुजी हमें मनाली ले गए थे। मैंने सोचा कि गुरु लोग मंदिर तो ले जाते हैं, पर, ये तो मनाली ले गए और अकेले या दो-तीन चार भक्त हों ऐसा नहीं; ओहो हो तीस-चालीस भाई-बहनों को भी साथ ले गए। खूब आनंद करवाया। जून का महीना था, सो बर्फ की सीज़न तो थी नहीं। हमारी गार्गी बहन की स्नो फॉल देखने की इच्छा हुई! होटल वाला बोला– कहाँ से अभी बर्फ पड़ेगी ? लेकिन गुरुजी ने कहा चलो हम चलें और रोहतांग पास ले गए। रोहतांग से दस-बारह किलोमीटर दूर हम पहुँचे, तो देखा– बर्फ की भारी वर्षा हो रही है –जिसका कोई अंदाजा भी नहीं कर सकता था। जिस समय बर्फ की वर्षा नहीं हो सकती थी, उस समय वर्षा हो गई ! मुझे हुआ कि गुरुजी में कोई न कोई अलौकिक गुण तो अवश्य हैं; जो यदा कदा ही जीवन में देखने को मिलता है, वो मुझे आज मिला। लेकिन तब भी एक इच्छा सबकी पूरी नहीं हुई– रोहतांग पास हम नहीं जा सके। बहुत बर्फ पड़ी थी, सो रास्ता बन्द हो गया था। शायद इसीलिए दूसरी बार मनाली ले गए और तब तो ऐसी सीज़न थी कि जाना ही असंभव था। गुरुजी तो सत्संग सभा कर रहे थे। इस दौरान साढ़े बारह बजे यकायक गुरुजी ने कहा– चलो उठो। सबको फटाफट तैयार किया और रोहतांग पास के लिए निकल पड़े। इतनी भारी बारिश के बीच रोहतांग पहुँचना असंभव था, लेकिन गुरुजी की कृपा से वो भी संभव हुआ। रोहतांग पास जो तब देखना बाकी था वो दिखाया। मैंने दीदी से बात की थी कि ये तो चमत्कार ही है, ऐसा कभी हो ही नहीं सकता...

...सिर्फ शब्दों से-कथा से – बात करना गुरुजी का लक्ष्य नहीं है। प.पू. गुरुजी ऐसी-ऐसी घटनाओं का सर्जन करते हैं जिससे सबको लगता है कि हमारे माँ-बाप, हमारे गुरुजी ही हैं। परमात्मा को देखने के लिए बहुत कठिन तपस्या करनी पड़ती है, साधना करनी पड़ती है; ऐसे ही नहीं मिल जाते। लेकिन कहा गया है कि **कलियुग में अगर परमात्मा को पाना है, तो जो देहधारी मनुष्य हैं उनमें ही परमात्मा मिलेंगे, देखने की दृष्टि चाहिए।** सही अर्थों में हमारे बीच **प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी की कृपा से ऐसे प.पू. गुरुजी हमें मिले हैं। प.पू. गुरुजी के स्वरूप में एक ऐसा देवपुरुष हमें मिला है...**

हम सभी बार-बार कई कथाएं सुनते हैं, सप्ताह में जाकर पाठ सुनते हैं, लेकिन हमारे गुरुजी कथा नहीं करते। प.पू. गुरुजी अपने नैतिक जीवन में घटी हुई घटना से हमें यही सिखाते हैं कि हम जितने ही नम्र होंगे, उतनी ही हमारी जीवात्मा ऊँची होगी, उन्नत होगी। **प.पू. गुरुजी हमें उसी दिशा में ले जाते हैं, जिस दिशा में प.पू. काकाजी प.पू. गुरुजी को ले गए।** मैं इस शुभ अवसर पर बहुत-बहुत बधाई देता हूँ कि गुरुजी के संपर्क में आने का मौका मिला, वर्ना मैं देवपुरुष को कभी देख भी नहीं सकता, कभी जान नहीं पाता। लेकिन, मिला यह हमारा सौभाग्य है और इसीलिए मैं बधाई देता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय स्वामिनारायण।

– प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब, सुरत

(ध्वनिमुद्रण से संकलित)

गुरु गुण गाया ना जाए...!

सौरभ - ४६

पू. 'गुरुजी' यानि?
यह शब्द ही ऐसा है जिसमें 'बड़प्पन' समाया है। यह बहुत गंभीरता प्रतिपादित करता है;
लेकिन, हम जिसके लिए यह शब्द प्रयोग करते हैं–
हमारे वे 'गुरुजी', भारीभरकम नहीं, बल्कि बिल्कुल हल्के फूल-से हैं।
संत आपस में बातचीत करते हुए 'गुरु' शब्द का प्रयोग करते हैं;
नाम के बदले संबोधन बन गया यह शब्द
दिल्ली वाले संत पू. मुकुंदजीवनस्वामिजी के लिए नाम का पर्याय बन गया।
'गुरुजी' कहो यानि सभी समझ जाएँ कि कौन!
पू. मुकुंदजीवनस्वामी का व्यक्तित्व ही ऐसी अभिप्सा जगाता है कि
कोई भी सहजभाव से उन्हें 'गुरुजी' कहे और अपना 'गुरु' बनाए।
उनकी निश्रा में आप अपने आपको सबसे अधिक 'सेईफ'–सुरक्षित महसूस करेंगे।
जो आपको निर्भय, चिंतारहित, मुक्त बना दे ऐसा व्यक्तित्व किसका होता है?
व्यक्ति भले कितना ही बड़ा क्यों न हो –
वह राजा हो, मंत्री या मुख्यमंत्री हो, आल्बर्ट आईन्स्टाईन जैसा वैज्ञानिक हो,
बिल गेटस या दूसरा कोई बड़ा उद्योगपति हो या अमिताभ बच्चन जैसा अभिनेता हो
या फिर वह
बिल्कुल सामान्य व्यक्ति हो, लेकिन वह हमेशा सुरक्षा ढूँढता रहता है।
एक माँ की गोद और दूसरा गुरु की छत्रछाया ही संपूर्ण सुरक्षा दे सकती है।
ईश्वर, भगवान या प्रभु की बात ही अलग, परंतु इतनी श्रद्धा उनमें होनी असंभव नहीं तो भी मुश्किल है।
बचपन बीतने पर व्यक्ति दुनियादारी वाला बने,
फिर भी वो 'माँ' से सुरक्षा को सबसे अधिक मानता है,
परंतु साथ ही वह व्यक्ति के रूप में माँ की मर्यादा को भी समझता है।
समय ऐसा भी आता है जब 'माँ' की सुरक्षा पुत्र को देखनी पड़ती है।
यह स्वभाविक प्रक्रिया है; इससे 'माँ' की महत्ता कोई कम नहीं होती।
परंतु 'गुरु' कोई अलग ही तत्त्व होता है।
वह तो जरुरत पड़े तो एक बार ईश्वर से भी टक्कर लेकर
अपने आश्रित शिष्यों के 'योगक्षेम' का वहन करके उनका जतन करता है।
भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को खूब सत्तावाही प्रभावी शब्दों में कह दिया था कि
सर्वधर्मान् परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज, अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः!
गुरु ऐसे होते हैं। गुरुजी ऐसे हैं।
हमारे पू. 'गुरुजी' हूबहू के ऐसे होने का उनके 'समीप' रहने वाले सभी अनुभव करते हैं।

यहाँ 'समीप' शब्द उपासना का द्योतक है।

पू. गुरुजी के सामने बैठ कर उन्हें एक टक देखते रहना ऐसा अर्थ यहाँ नहीं है!

पू. गुरुजी यानि–गुरुहरि पू. काकाजी कहते–ऐसा जीता जागता पावर हाउस है

जिनकी उर्जा सर्व व्यापी सूर्य जैसी है।

पू. काकाजी ने जो तीन सूर्य की बात की उसमें से एक!

पू. गुरुजी ने गुरुहरि पू. काकाजी की आज्ञा से दिल्ली में जो युगकार्य किया वह कोई खाने-खेलने की बात नहीं।

सुविधा, सहयोग और साधनों की सुगमता हो तो कोई भी कार्य उठा सकता है।

परंतु चारों ओर विरोध हो, प्रतिकूलता ही प्रतिकूलता हो,

मुसीबतों की आँधी हो और कोई साधन भी हाथ न हो फिर भी

'अकेला जाने रे' की भाँति, खुद याहोम होकर, मार्ग निकाल कर कार्य सिद्ध करने वाले को क्या कहा जाए?

पू. गुरुजी एक ही शब्द में छोटा-सा जवाब देते हैं 'गुरुकृपा...!'

हाँ... बात सच है, परंतु वह कृपा प्राप्त करने के लिए पात्रता कैसे मिले? वह ऐसे ही नहीं मिलती।

स्वयं में सत्त्व तो होना ही चाहिए, न!

अनजान प्रदेश में स्वामिनारायण का 'स' न जानने वालों के बीच

सांसारिक व्यवहारों से अनभिज्ञ व अकेला व्यक्ति यदि अपना अस्तित्व टिका सके, तो भी बहुत माना जाए!

परंतु पू. गुरुजी ने गुरुहरि पू. काकाजी की आज्ञा को शिरोधार्य करके,

उनकी इतनी अधिक शोभा बढ़ाई है कि पू. काकाजी के अंतर में ठंडक हो गई।

गुणातीत समाज के तख़्त पर पू. गुरुजी का एक अनूठा स्थान अंकित हो चुका है।

कौन जाने कैसे ? लेकिन पू. गुरुजी को चुनौतीयुक्त व मुश्किल काम करने में ही मज़ा आता है।

कोई भी काम हो, उसे करने में ऐसे लग पड़ते हैं कि फिर पूरा करके ही छोड़ते हैं।

पू. गुरुजी ने दिल्ली में मंदिर बनवाया,

मेईन रोड को **'स्वामिनारायण मार्ग'** नाम दिलवाया और **'काकाजी लेन'** बनवाई।

पू. काकाजी के साक्षात्कार दिन की महिमा दर्शाते हुए **'तीन फरवरी पार्क'** का सर्जन किया।

'अक्षरज्योति' के अति मनोहारी भवन का निर्माण कराया।

साथ ही दूसरे कार्य और उत्सव तो लगातार जारी हैं ही।

फिर भी गुरुजी बिल्कुल निर्लेपभाव से–मानो कुछ भी नहीं करते ऐसे वर्तते हैं।

कहीं कोई कमी न रहे, वह गुरुजी खास देखते हैं।

जरुरत पड़ने पर डाँटते भी हैं और फिर दूसरे ही पल सब कुछ भूल जाते हैं...!

नीति-नियमों को पालने का तनिक भी आग्रह नहीं रखते।

संपर्क में आया व्यक्ति आज नहीं तो कल अपने आप समझ जाएगा, ऐसा उनका मानना है।

जबरदस्ती करना निरर्थक है; कुछ भी जबरदस्ती से नहीं, बल्कि समझदारी से होना चाहिए–
उनकी यह भावना स्पर्श हुए बिना नहीं रहती।

अनजान हो या फिर छोटा हो–
स्वामिनारायण के साथ, किसी के भी संबंध से, किसी भी प्रकार, कैसे भी कोई जुड़ा हुआ हो,
पू. गुरुजी उसका गर्मजोशी से सत्कार करते हैं।
पू. गुरुजी को पू. काकाजी से इतनी अधिक प्रीति है कि–
वे यदि जानें कि यह व्यक्ति पू. काकाजी को किसी न किसी प्रकार जानता है,
तो बस, फिर तो बात खत्म...! वह व्यक्ति आश्चर्यचकित हो जाएगा!
उसमें भी यदि पू. काकाजी का माहात्म्य गाने वाला मुक्त हो तो पूछना ही क्या?
इसीलिए तो पू. गुरुजी ने अपने मंदिर में सब की मूर्तियाँ रख कर उनका माहात्म्य गाया है।
पू. काकाजी ने सामने आए मुक्त को सिर का मुकुट मानने के लिए कहा है।
फिर, पू. काकाजी को समर्पित या उनके साथ किसी न किसी रीति से जुड़े हुए की तो बात ही क्या पूछनी?
इस सबके पीछे उनकी संप, सुहृद्भाव, एकता की भावना प्रतीत होती है।

गुणातीत या ब्रह्मस्वरुप हुए बिना सिद्धत्व प्राप्त होता नहीं...

छोटे-बड़े चमत्कार सिद्धपुरुष या सिद्धता के द्योतक नहीं...
ब्रह्मांड को हिलाने वाले, अन्य कोटि-कोटि ब्रह्मांडों का सर्जन करने का सामर्थ्य रखने वाले,
पर तब भी **दास का दास होने का सिद्धत्व रखने वाले पू. गुरुजी का निम्न एक वाक्य ब्रह्मसूत्र जैसा है– 'गुणातीत को गुणातीत ही पहचान सकता है!'**
पूरी थीसीस लिख सकें ऐसे पाँच शब्दों का यह छोटा वाक्य है।

पू. गुरुजी यूँ बिल्कुल भोले, निर्दोष और सरल हैं,

परंतु उनकी गहनता का कोई पार नहीं। खूब मंथन करें तो जरुर एक झलक मिलती है!
पू. गुरुजी पहली बार हमारे यहाँ सुरत आए तब–
टेक्सटाईल मिनीस्टर काशीराम राणा के घर पधरामनी की थी।
फिर तो काशीरामभाई गुरुजी के रंग में रंग गए
और
पू. गुरुजी द्वारा पू. काकाजी की स्मृति को सुदृढ़ करने के प्रयास में उन्होंने सहयोग दिया।
पू. काकाजी की पोस्टल स्टेम्प जारी होना कोई सामान्य बात नहीं थी!
यह एक चमत्कार था।

काशीरामभाई राणा द्वारा की गई पू. काकाजी की सेवा को पू. गुरुजी ने हमेशा ध्यान में रखा है।

पू. गुरुजी ने सुरत में पारसी अरदेशर कोतवाल को स्वामिनारायण भगवान द्वारा भेंट में दी गई
पाघ के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की थी।
संजोगवश वह पाघ अरदेशरजी के जिन वारिसदारों के पास थी,
उनकी पुत्री नाज़नीन मेरी पुत्री नेहल के साथ पढ़ती थी!
यूँ तो यह पाघ केवल भैयादूज के दिन दर्शन के लिए रखी जाती है,
परंतु पू. गुरुजी ने ऐसे संजोग बना दिए कि नेहल और नाज़नीन की मित्रता साधन बन गई!

और... पाघ के अन्य दिन भी दर्शन हो सके।
पू. गुरुजी ने पाघ के नज़दीक पू. काकाजी की प्रतिमा वाला चाँदी का सिक्का पधराया!
जो अभी भी वहाँ साथ में रखा हुआ होगा...!
प्रसादी की इस पाघ के लिए स्वामिनारायण धर्म से जुड़े मुक्तों से
करोड़ों रुपयों का प्रस्ताव मिलने के बावजूद भी
पारसी परिवार ने उसे न देकर महाराज की प्रसादी की महत्ता आंकी है! यह भी याद रखने योग्य है।

पू. गुरुजी आडंबर में विश्वास नहीं करते। वे खूब स्पष्ट और क्रांतिकारी भी हैं।

सत्संगी राजी हों तो टेलिविज़न देखने में भी उन्हें हर्ज नहीं होता।
सहजता से आसक्तिरहित रहना जरुरी है; झूठा दिखावा नहीं...!

'मौज' शब्द गुरुजी का पसंदीदा शब्द है।

वे हमेशा सभी को निर्दोष आनंद में रहने के लिए कहते हैं; भजन करो और मौज करो...!

गंभीर स्वभाव उन्हें पसंद नहीं।

यदि ऐसा कोई हो तो उसे, निर्दोष मौज-मस्ती में, महाराजमय बनाने से पू. गुरुजी चूकते नहीं।
जब पू. गुरुजी हरिभक्तों को साथ लेकर भगवान स्वामिनारायण के समय में सुरत में बनाए गए
पुराने स्वामिनारायण मंदिर के दर्शन करने गए,
तब वहाँ के कोठारीस्वामी तथा अन्य संतों ने उनका पुष्पहार पहना कर स्वागत किया था!
यह सामान्य घटना नहीं थी!
अन्य बड़े संतों को भी पुराने मंदिरों में प्रवेश करने से रोका जाता है,
जबकि पू. गुरुजी की जो आवभगत की
वह उनके पूर्व के आध्यात्मिक आत्मीय आकर्षण का ही प्रभाव माना जाना चाहिए।
जब हमारा परिवार दिल्ली मंदिर गया था, तब पू. गुरुजी ने अपनी कार हमें देकर
हरिद्वार-ऋषिकेश इत्यादि स्थलों पर जाने की सुविधा कर दी थी।
हरिद्वार में पू. गुरुजी के संबंध के कारण
पुराने ए.सी. स्वामिनारायण मंदिर में ठहरने-खाने की सारी व्यवस्था हो गई थी!
अन्य हिन्दू संप्रदाय के संतों-महंतों के साथ भी पू. गुरुजी के संबंध हैं।
इससे उनके समभाव का दर्शन होता है।
छोटी-सी बात को भी खूब ध्यान में लेकर,
यूँ ही नहीं, परंतु प्रमाण के साथ पू. गुरुजी अपना मत व्यक्त करते हैं।
दिल्ली मंदिर में पू. गुरुजी के साथ बातचीत के दौरान मैंने कहा कि–
पू. शास्त्रीजी महाराज बहुत गुस्से वाले होंगे, ऐसा उनकी मूर्तियों से लगता है...!
तब गुरुजी ने हँसते–हँसते, 'ना... ना' कहते हुए
शास्त्रीजी महाराज की मुक्त हास्य वाली मूर्ति दिखाई थी!
एक्युरसी में मानते पू. गुरुजी
मंदिर में आने वाले हरिभक्तों इत्यादि का फोन-संदेश नोट न होने पर या सुचारु रूप से

जवाब न दिए जाने पर नाराज़ होकर कहते हैं– वह क्या मानेगा? हम इतना भी नहीं कर सकते?

पू. गुरुजी उमंग, उष्मा, कोमल हृदय के भावुक संत हैं।

उनका चेहरा भाववाही होने के कारण पारदर्शक है।

स्वामिनारायण भगवान के समय के व्यक्तियों पर ही नहीं,

उनके नाम वालों का भी पू. गुरुजी भाव से स्वागत करते हैं।

अरविंद महर्षि को मानने वाले 'परवतभाई' नाम का युवा विद्यार्थी इसका उदाहरण है।

नाम 'परवतभाई' था इतना ही!

हमें कई बार ऐसा होता है कि पू. गुरुजी जैसे संत व्यक्ति

छोटे से 'नक्षु' को ज्यादा लाड़ क्यों लड़ाते हैं?

लेकिन उसके पीछे कोई कारण तो होगा ही।

एक तो, वह पूर्व की ऐसी कोई बड़ी आत्मा होगी, जिसके कारण गुरुजी को भी प्रेम-आदर करना पड़ता हो।

कहते हैं कि बालक आठ वर्ष का होता है, तब तक उसके पूर्व के संस्कार जाग्रत रहते हैं।

फिर तो वह इस दुनिया के माहौल में,

कर्मानुसार या ईश्वर की इच्छा के अनुसार जुड़ कर, सब कुछ भूल कर, अन्यों की भाँति जीवन जीने लगता है।

किसी हेतु के कारण भी अवतरण हो सकता है!

दूसरा कारण, उन्हें या भगवान को समर्पित हुए हरिभक्त की संतान पर सहज ही प्रेम हो–ऐसा भी हो सकता है।

पू. गुरुजी मितभाषी हैं।

टु धी पोईन्ट और अर्थपूर्ण संभाषण ही करते हैं।

एक शब्द से काम चलता हो, तो दूसरा शब्द प्रयोग नहीं करेंगे!

स्वयं साधु हैं, साधना की है, तप का बल है, गुरुकृपा है

और जो धारें उन्हें संकल्प से पूर्ण करने में समर्थ हैं; फिर भी,

हरेक प्रश्न, हरेक समस्या या फिर आशीर्वाद का जवाब मात्र दो शब्दों में देते हैं – 'भजन करेंगे!'

किसी के लिए 'भजन करना' यानि?

यूँ तो बिल्कुल सीधी-सादी लगती यह बात बहुत मुश्किल है...!

और... उसमें सब कुछ करने के बावजूद यदि हल नहीं निकले तो भी–

'चिंता नहीं करना...! हम... हाँ... हम भजन करेंगे...!'

पू. गुरुजी द्वारा भजन का ऐसा अभयवचन देने के बाद

हमें ऐसा तो सोचना ही चाहिए या ऐसा बनना चाहिए कि

पू. गुरुजी को हमारे लिए तीव्र भजन न करना पड़े...!

इतना ही नहीं, प्रार्थना करें कि हमें भजन करने का बल मिले...!

मानो या ना मानो

एक बात मेरे मन में कई वर्षों से घूमा करती थी...

हम पहली बार–दिल्ली मंदिर गए थे तब–

रात को पू. गुरुजी के मंदिर वाले हॉल में मैं भी अन्य मुक्तों व संतों के साथ सो रहा था।
जहाँ दर्शन करने आने वाली बहनें आकर बैठती हैं, यह वह स्थान था।
पू. गुरुजी भी इसी जगह सो रहे थे।
कई भक्त-संत गुरुजी के पाँव दबाने के बाद सो गए।
थोड़ी देर में नीरव शांति के बीच एक 'चीख' सुनाई दी!
मैं हड़बड़ा कर उठ गया... मैंने दोबारा वह चीख सुनी...!
मैंने सब जगह देखा तो सभी गहरी नींद में सो रहे थे।
चीख जो आ रही थी, यह मेरा वहम नहीं था।
मुझे कुछ बहुत विचित्र लगा...!
मैंने फिर कई बार इस चीख के बारे में सोचा...!
किसी से कहता तो वह हँस देता...!
जिंदगी में कभी भी सुनी न हो, ऐसी इस चीख का जवाब
मुझे वर्षो के बाद अचानक पप्पाजी के बारे लिखे लेख में से मिल गया...!
उसमें लिखा था कि
पू. काकाजी ने जब अक्षरधामगमन किया तब
विद्यानगर में 'ब्रह्मज्योति' पर उनके अंतिम संस्कार के समय पू. गुरुजी ने चीख मारी थी...
और... पू. काकाजी पू. गुरुजी में समा गए!
ऐसा पू. पप्पाजी ने जो कहा था वो अर्थ स्पष्ट हो रहा था...!
बस... हमें तो याद है वो चीख...!

अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदंदर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

– अमृत वडिया, सुरत

[મૂળ ગુજરાતી]

ગુરુ ગુન ગાયો ના જાય...

પૂ. 'ગુરૂજી' એટલે ?
આ શબ્દ જ એવો છે કે તેમાં ગુરૂતા રહેલી છે. તે ખૂબ ગંભીરતા પ્રતિપાદિત કરે છે;
પણ, આપણે જેમના માટે આ શબ્દ પ્રયોજીએ છીએ–
તે આપણા 'ગુરૂજી' ભારેખમ નહીં, પણ સાવ હળવા ફૂલ છે.
સંતો અરસપરસ વાતચીતમાં 'ગુરૂ' શબ્દ પ્રયોજતા હોય છે;
નામને બદલે સંબોધન બની ગયેલો આ શબ્દ દિલ્હીવાળા સંત પૂ. મુકુંદજીવનસ્વામિજી માટે નામનો પર્યાય બની ગયો.
'ગુરૂજી' કહો એટલે બધા સમજી જાય કે કોણ!
કોઈને પણ સહજભાવે જ 'ગુરૂજી' કહેવાનું અને ગુરુજી બનાવવાની અભીપ્સા જગાડે

એવું વ્યક્તિત્વ પૂ. મુકુંદજીવનસ્વામી ધરાવે છે.

તેમની નિશ્રામાં તમે સૌથી વધુ 'સેઈફ'– સલામત અનુભવો.

જે તમને નિર્ભયી, ચિંતા રહિત, મુકત બનાવી દે તે વ્યક્તિત્વ કેવું હોય ?

માણસ ગમે તેટલો મોટો હોય–

તે રાજા હોય, પ્રધાન કે વડાપ્રધાન હોય, આલ્બર્ટ આઈન્સ્ટાઈન હોય,

બિલ ગેટસ કે બીજો કોઈ મોટો ઉધોગપતિ હોય કે અમિતાભ બચ્ચન જેવો અભિનેતા હોય

કે સાવ સામાન્ય વ્યક્તિ હોય, પણ તે હંમેશ સલામતી શોધતો હોય છે.

એક માનો ખોળો અને બીજી ગુરૂની છત્રછાયા જ સંપૂર્ણ સલામતી બક્ષી શકે.

ઈશ્વર, ભગવાન, કે પ્રભુની વાત જ જુદી, પરંતુ તેટલી શ્રધા તેનામાં હોવી અશક્ય નહીં તો ય અઘરી છે.

બચપણ છૂટ્યા બાદ માણસ પૂરો દુન્યવી બને તે પછી 'મા'ને સૌથી વધુ સલામત માને ખરો,

પરંતુ સાથે એ તેની માણસ તરીકેની મર્યાદાને પણ સમજી શકે.

સમય એવો ય આવે કે 'મા'ની સલામતી પુત્રે જોવી પડે.

આ સ્વભાવિક પ્રક્રિયા છે, તેથી કંઈ 'મા'ની મહત્તા ઘટી જતી નથી.

પરંતુ 'ગુરૂ' કંઈક અલગ જ તત્ત્વ હોય છે.

તે જરૂર પડે તો ઈશ્વરને ય ટક્કર આપીને પોતાના આશ્રિત શિષ્યોનું 'યોગક્ષેમ' વહન કરીને તેમનું જતન કરે છે.

ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે અર્જુનને ખૂબ સત્તાવાહી પ્રભાવક શબ્દોમાં કહી દીધું હતું કે–

સર્વધર્માન્ પરિત્યજ્ય, મામેકં શરણં વ્રજ, અહં ત્વાં સર્વ પાપેભ્યો મોક્ષયિષ્યામિ મા શુચઃ!

ગુરૂ એવા હોય છે. ગુરૂજી એવા છે.

આપણા પૂ. 'ગુરૂજી' અદ્દલ એવા હોવાનું તેમની 'સમીપ' રહેનારા સૌ અનુભવે છે.

આ 'સમીપ' શબ્દ ઉપાસના જેવો છે.

એટલે પૂ. ગુરૂજી સામે ડાચું ધરીને બેસી રહેવું એવો અર્થ તો નથી જ!

પૂ. ગુરૂજી એટલે ગુરુહરિ પૂ. કાકાજી કહેતા એવું જીવતું જાગતું પાવર હાઉસ છે.

તેમની ઊર્જા સર્વ વ્યાપી સૂર્ય જેવી છે.

પૂ. કાકાજીએ, જે ત્રણ સૂર્યની વાત કરી તેમાનાં એક!

પૂ. ગુરૂજીએ ગુરુહરિ પૂ. કાકાજીની આજ્ઞાથી દિલ્હીમાં જે યુગકાર્ય કર્યું તે કંઈ ખાવાના ખેલ નથી.

બધી સાનુકૂળતા, સહયોગ અને સાધનોની સુગમતા હોય, તો કંઇ પણ કાર્ય ઉપાડીને સિધ્ધ કરી શકાય.

પરંતુ ચારે બાજુ વિરોધ હોય, પ્રતિકૂળતા જ પ્રતિકૂળતા હોય,

આફતોની આંધી હોચ અને કોઇ સાધન હાથવગા ના હોય છતાં

'એકલો જાને રે'ની જેમ યાહોમ કરીને માર્ગ કાઢી કાર્ય સિધ્ધ કરવું એને શું કહેવું ?

પૂ. ગુરૂજી એક જ શબ્દમાં ટૂંકો ને ટચ જવાબ આપે કે 'ગુરુકૃપા... !'

હા… વાત સાચી, પરંતુ તે કૃપા મેળવવાની પાત્રતાનું શું? એ એમ જ ના જ મળે.
પોતાનામાં સત્ત્વ તો હોવું જોઈએને!
અજાણ્યા પ્રદેશમાં સ્વામિનારાયણનો 'સ' નહીં જાણનારાઓ વચ્ચે
સાંસારિક વ્યવહારોથી અનભિજ્ઞ અટૂલી વ્યક્તિ અસ્તિત્વ ટકાવી શકે તો ય બહુ કહેવાય!
પરંતુ પૂ. ગુરૂજીએ ગુરૂહરિ પૂ. કાકાજીની આજ્ઞાને શિરોધાર્ય કરી,
તેમનું એટલું બંધું શોભાડી બતાવ્યું કે પૂ. કાકાજીને હાશકારો થઇ ગયો.
ગુણાતીત સમાજના તખ્ત પર પૂ. ગુરૂજીનું સ્થાન અદકેરું અંકિત થઇ ચૂકયું છે.
કોણ જાણે કેમ પણ, પૂ. ગુરૂજીને પડકારજનક અઘરા કામ પાર પાડવામાં જ મજા આવે છે.
કોઈ પણ કામ હોય, પણ એવા મંડી પડે કે એનો નિવેડો લાવીને જ જંપે.
પૂ. ગુરૂજીએ દિલ્હીમાં મંદિર બાંધ્યું, મેઈન રોડને **'સ્વામિનારાયણ માર્ગ'** નામ અપાવ્યું,
'કાકાજી લેન' બનાવી.
પૂ. કાકાજીના આત્મસાક્ષાત્કાર દિનનો મહિમા છતો કરવા **'તીન ફરવરી પાર્ક'**નું સર્જન કર્યું.
'અક્ષરજ્યોતિ'ના અતિ મનોહારી ભવનનું નિર્માણ કર્યું.
સાથે બીજાં કાર્યો અને સમૈયા સતત ચાલુ જ છે.
એ બધા વચ્ચે ગુરૂજી સાવ નિર્લેપ ભાવે– જાણે કશું જ કરતા નથી તેમ વર્તે.
ગુરૂજી કયાંય કચાશ ના રહે તે ખાસ જુએ.
જરૂર લાગે તો તરત ટપારે ય ખરા અને પછી બીજી પળે બધું ભૂલી જાય…!
નીતિ– નિયમો પળાવવાનો જરાય દુરાગ્રહ નથી રાખતા.
સામેવાળો આજે નહીં તો કાલે આપમેળે જ સમજવાનો, એવું વલણ રાખે છે.
ખોટા નિગ્રહો નિરર્થક છે;
કશું પરાણે નહીં, પણ સમજદારીથી થવું જોઈએ એવો અભિગમ તેમનો હોવાનું લાગ્યા વિના રહે નહીં.
અજાણ્યો હોય, નાનો હોય–
સ્વામિનારાયણ સાથે કોઈને સંબંધે આડકતરી રીતે પણ સંકળાયેલો હોય
તો પૂ. ગુરૂજી એને ઉષ્માપૂર્વક આવકારે.
પૂ. ગુરૂજીને પૂ. કાકાજી પ્રત્યે એટલી બધી પ્રીતિ છે કે–
તેઓ જો જાણે કે સામેવાળો માણસ પૂ. કાકાજીને કોઈને કોઈ રીતે જાણે છે,
તો બસ પછી પત્યું…! પેલો માણસ આશ્ચર્યચકિત થઇ જાય!
એમાં ય જો પૂ. કાકાજીનું માહાત્મ્ય ગાનાર મુકત હોય તો પૂછવું જ શું?
પૂ. ગુરૂજીએ એટલે જ તો તેમના મંદિરમાં સૌની મૂર્તિઓ રાખી તેઓનું માહાત્મ્ય ગાયું છે.
પૂ. કાકાજીએ સામે આવેલા મુકતને માથાનો મુકુટ માનવા કહ્યું છે.
ત્યારે પૂ. કાકાજીને સમર્પિત કે તેમની સાથે કોઈ ને કોઈ રીતે સંકળાયેલાની તો વાત જ શી પૂછવી?
એની પાછળ તેમની સંપ, સુહૃદ્ભાવ, એકતાની ભાવના રહેલી પ્રતીત થાય છે.

ગુણાતીત કે બ્રહ્મસ્વરૂપ થયા વિના સિધ્ધત્વ પ્રાપ્ત થતું હોતું નથી...
નાના મોટા ચમત્કાર એ સિધ્ધપુરુષ કે સિધ્ધતાના ધોતક નથી....
બ્રહ્માંડને ડોલાવી નાખનારા, બીજા કોટિ કોટિ બ્રહ્માંડોના સર્જન કરવાનું સામર્થ્ય ધરાવનારા છતાં
દાસના દાસ થવાનું સિધ્ધત્વ ધરાવનારા પૂ. ગુરૂજીનું એક વાક્ય બ્રહ્મસૂત્ર જેવું છે–
'ગુણાતીતને ગુણાતીત જ ઓળખી શકે!'
આખો થિસીસ લખાય એવું આ પાંચ શબ્દોનું નાનકડું વાક્ય છે.
પૂ. ગુરૂજી આમ સાવ ભોળાભટાક નિર્દોષ અને સરળ છે,
પરંતુ તેમની ગહનતાનો કોઈ પાર નથી. કદાચ મથીએ તો ઝલક મળે ખરી!
પૂ. ગુરૂજી પહેલીવાર અમારે ત્યાં સુરત આવ્યા ત્યારે
ટેક્સટાઈલ મિનીસ્ટર કાશીરામ રાણાને ત્યાં પધરામણી કરી હતી.
પછી તો કાશીરામભાઈ ગુરૂજીના રંગે રંગાયા
અને
પૂ. ગુરૂજીના પૂ. કાકાજીની સ્મૃતિને સુદૃઢ કરવાના પ્રયાસમાં તેમણે સહયોગ આપ્યો.
પૂ. કાકાજીની પોસ્ટ સ્ટેમ્પ બહાર પડી, આ કંઇ સામાન્ય બાબત ના હતી!
એ ચમત્કાર હતો.
પૂ. કાકાજીની કાશીરામભાઈ રાણાએ કરેલી સેવાને પૂ. ગુરૂજીએ હંમેશા લક્ષમાં લીધી છે.
સુરતમાં પારસી અરદેશર કોટવાલને સ્વામિનારાયણ ભગવાને ભેટમાં આપેલી પાઘના
દર્શન કરવાની ઈચ્છા પૂ. ગુરૂજીએ દર્શાવી હતી.
યોગાનુયોગ એ પાઘ અરદેશરજીના જે વારસદારો પાસે હતી,
તેમની પુત્રી નાઝનીન મારી પુત્રી નેહલ સાથે ભણતી હતી!
આમ તો એ પાઘ માત્ર ભાઇબીજના દિવસે જ દર્શન માટે મૂકાય છે.
પરંતુ પૂ. ગુરૂજીએ એવો યોગ કરી આપ્યો કે નેહલ અને નાઝનીનની મિત્રતા સાધન બની ગઈ!
પાઘના અન્ય દિવસે દર્શન થઈ શક્યા.
પૂ. ગુરૂજીએ તે પાઘ પાસે પૂ. કાકાજીની પ્રતિમાવાળો ચાંદીનો સિક્કો પધરાવ્યો!
જે હજી ત્યાં સાથે હશે....!
સ્વામિનારાયણ ધર્મના સંલગ્નો દ્વારા આ પ્રસાદીની પાઘ કરોડો રૂપિયામાં માંગવામાં આવવા છતાં,
પારસી પરિવારે તે ના આપીને મહારાજની પ્રસાદીની મહત્તા આંકી છે! તે પણ નોંધવું જ રહ્યું.
પૂ. ગુરૂજી આડંબરમાં માનતા નથી. તેઓ ખૂબ સ્પષ્ટ હોય છે. તેઓ ક્રાંતિકારી પણ છે.
સત્સંગીઓ રાજી થતા હોય તો ટેલિવિઝન જોવાનો તેમને બાધ હોતો નથી.
સહજતાથી આસક્તિરહિત રહેવું જરૂરી છે; ખોટા દેખાડા નહીં...!
'મોજ' શબ્દ ગુરૂજીને ગમતો શબ્દ છે.
તેઓ હંમેશા સૌને નિર્દોષ આનંદ માણવા કહે છે; ભજન કરો અને મોજ કરો...!

સોગિયો સ્વભાવ તેમને પસંદ નથી
એટલે એવો કોઈ હોય તો તેને નિર્દોષ મોજ-મસ્તીમાં
મહારાજમય બનાવી દેવાનું પૂ. ગુરૂજી ચૂકતા નથી.
ભગવાન સ્વામિનારાયણના સમયમાં સુરતમાં બંધાવાયેલા જૂના સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં
હરિભક્તો સાથે પૂ. ગુરૂજી દર્શને ગયા ત્યારે
ત્યાંના કોઠારીસ્વામી તથા અન્ય સંતોએ તેમનું પુષ્પહાર પહેરાવીને સ્વાગત કર્યું હતું!
આ સામાન્ય ઘટના ના હતી!
અન્ય મોટેરા સંતોને પણ જૂના મંદિરોમાં પ્રવેશતા રોકાતા હોય છે,
ત્યારે પૂ. ગુરૂજીને આ રીતે આવકારાય
તે તેમનો પૂર્વનો આધ્યાત્મિક આત્મીય આકર્ષણનો પ્રભાવ માનવો રહ્યો.
અમારો પરિવાર દિલ્હી મંદિરે આવ્યો હતો ત્યારે પૂ. ગુરૂજીએ તેમની કાર ફાળવી
અમને હરિદ્વાર-ઋષિકેશ વગેરે સ્થળે ફરવા જવાની સુવિધા કરી આપી હતી.
હરિદ્વારમાં પૂ. ગુરૂજીના સંબંધના કારણે
જૂના એ.સી. સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં રહેવા-જમવાની તમામ વ્યવસ્થા થઈ ગઈ હતી!
પૂ. ગુરૂજીને અન્ય હિંદુ સંપ્રદાયોના સંતો–મહંતો સાથે ય સંબંધો છે.
તે તેમના સમભાવને દર્શાવે છે.
નાની વાતને પણ ધ્યાનમાં લઈ,
ઉડઝૂડ નહીં, પરંતુ પ્રમાણ સાથે પૂ. ગુરૂજી પોતાનો મત વ્યક્ત કરે છે.
મેં દિલ્હી મંદિર ખાતે પૂ. ગુરૂજી સાથે વાતચીતમાં કહ્યું કે–
પૂ. શાસ્ત્રીજી મહારાજ ભારે ગુસ્સાવાળા હોય એમ એમની મૂર્તિઓ પરથી લાગે છે...!
એટલે ગુરૂજીએ હસતા... હસતા, ના.... ના કહીને
શાસ્ત્રીજી મહારાજની મુક્ત હાસ્યવાણી, સસ્મિત મૂર્તિ દેખાડી હતી!
એક્યુરસીમાં માનતા પૂ. ગુરૂજી
મંદિરમાં આવતા હરિભક્તો વગેરેના ફોન–સંદેશા નોટ ના થાય કે યોગ્ય વ્યવસ્થિત
જવાબ ના અપાય તો નારાજ થઈ કહે–એ શું માનશે? આપણાથી આટલું ય ના થાય?
પૂ. ગુરુજી ઉમળકાના, ઉષ્માના, ઋજુ હૃદયના ભાવુક સંત છે.
તેમનો ચહેરો ભાવવાહી હોવાથી પારદર્શક છે.
સ્વામિનારાયણ ભગવાનના સમયની વ્યક્તિઓ પર જ નહીં,
તેમના નામેરીઓને પૂ. ગુરૂજી એ ભાવે જ આવકારે.
અરવિંદ મહર્ષિને માનતા 'પરવતભાઈ' નામના યુવાન વિદ્યાર્થી તેનો દાખલો છે.
નામ 'પરવતભાઈ' હતું એટલે!
આપણને ઘણીવાર થાય કે પૂ. ગુરૂજી જેવી સંત વ્યક્તિ
નાનકડા 'નક્ષુ'ને જરા વધુ પડતા લાડ કેમ લડાવતા હશે?

પણ તેની પાછળ કંઈ કારણ હોવાનું જ.
એક તો, એ પૂર્વનો કોઈ એવો મોટો આત્મા હશે કે જેને ગુરૂજી જેવાએ પણ પ્રેમ આદર કરવો પડે.
કહે છે કે બાળક આઠ વર્ષનું થાય ત્યાં સુધી તેને પૂર્વના સંસ્કારો જાગૃત રહે છે.
પછી તે આ દુનિયાના રંગમાં
કર્માનુસાર કે ઈશ્વરેચ્છાનુસાર ભળી જઈ બધું ભૂલી, અન્યો જેવું જીવન જીવવા માંડે.
ચોકકસ હેતુસરનું અવતરણ પણ હોઈ શકે!
બીજું કારણ, પોતાને–ભગવાનને સમર્પિત થયેલા હરિભકતના સંતાન પર
સહજ જ પ્રેમ હોય–તે હોઈ શકે.
પૂ. ગુરૂજી મિતભાષી છે.
ટુ ધી પોઈન્ટને અર્થસભર સંભાષણ જ કરે.
એક શબ્દથી કામ પતતું હોય તો બીજો શબ્દ ના વાપરે!
પોતે સાધુ છે, સાધના કરી છે, તપનું બળ છે, ગુરુકૃપા છે
અને ધારે તે સંકલ્પથી કરી શકવા સમર્થ છે છતાં,
દરેક પ્રશ્ન, દરેક સમસ્યા કે પછી આશીર્વાદનો જવાબ માત્ર બે જ શબ્દો છે–'ભજન કરીશું'!
કોઈના માટે 'ભજન કરવું' એટલે ? આમ તો સાવ સીધી લાગતી આ વાત અતિ અધરી છે....!
તેમાં બંધુ જ કરી છૂટવાથી ય ઉકેલ નહીં આવે તો ય–
'ચિંતા ના કરતા...! અમે... હા... અમે ભજન કરીશું...!'
પૂ. ગુરૂજી દ્વારા ભજનનું અભયવચન અપાયા પછી
આપણે એવું તો ઇચ્છવું જ જોઈએ કે એવા બનવું જોઈએ કે
પૂ. ગુરૂજીએ આપણા માટે તરણોપાય ભજન ના કરવું પડે....!
એટલું જ નહીં, પ્રાર્થના કરીએ કે આપણને ભજન કરવાનું બળ મળે....!

માનો યા ના માનો

એક વાત મારા મનમાં ઘણા વર્ષોથી રમ્યા કરતી હતી...
અમે પ્રથમવાર-દિલ્હી મંદિરે ગયા હતા ત્યારે
રાતે પૂ. ગુરૂજીના મંદિરવાળા ઓરડામાં હોલમાં હું સૌ સાથે સૂતો હતો.
એ જગ્યા મોટાભાગે દર્શનાર્થે આવતી બહેનો બેસે છે તે હતી.
પૂ. ગુરૂજી પણ તે ઓરડામાં જ શયન કરતા હતા.
કેટલાક ભકતો-સંતોએ ગુરૂજીને ચંપી કરી લીધા બાદ સૌ સૂઈ ગયા.
થોડીવારમાં નિરવ શાંતિ વચ્ચે એક 'ચીસ' સંભળાઈ!
હું ઝબકીને જાગી ગયો... મેં ફરી એ ચીસ સાંભળી....!
મેં બધે જોયું તો સૌ ઘસઘસાટ ઊંઘતા હતા.
ચીસ આ ઓરડામાંથી જ આવી હતી. એ મારો વ્હેમ ના હતો.

મને કંઈક ખૂબ વિચિત્ર લાગ્યું....!
મને પછી ઘણીવાર એ ચીસ અંગે વિચાર આવતા....!
કોઈને કહું તો હસી કાઢે...!
જીંદગીમાં ક્યારે ય ના સાંભળી હોય એવી એ ચીસનો જવાબ
મને વર્ષો પછી અચાનક પપ્પાજી વિશેના લખાણમાંથી મળી ગયો....!
એમા દર્શાવાયું હતું કે–
પૂ. કાકાજીએ જ્યારે અક્ષરધામગમન કર્યું ત્યારે
વિદ્યાનગરમાં 'બ્રહ્મજ્યોતિ' પર તેમના અંતિમસંસ્કાર વેળા પૂ. ગુરૂજીએ ચીસ પાડી હતી...
અને... પૂ. કાકાજી પૂ. ગુરૂજીમાં સમાઈ ગયા!
એવું પૂ. પપ્પાજીએ કહ્યું હતું એવો અર્થ અભિપ્રેત થતો હતો....!
બસ... હમે તો યાદ હૈ વો ચીસ...!

અખંડ મંડલાકારં વ્યાપ્તં યેન ચરાચરમ્।
તત્પદંદર્શિતં યેન તસ્મૈ શ્રી ગુરુવે નમઃ।।

ગુરુઃ અસ્માકં અસ્માકમ્

ગુરુરાજ્ઞયા યેન સર્વં ત્યજિતં, હસિતં હસિતમ્।
સુદૂર દિલ્હીખ્યાતં નગર્યામ્ વસિતં, વસિતમ્।।

નવ્ય ગુણાતીત સમાજં રચિતં રચિતમ્।
કાકા-પપ્પા-સ્વામી અદ્વૈતં સ્થાપિતં સ્થાપિતમ્।।

સર્વાનંદ પરમાનંદ સ્વયં સમુચિતં સમુચિતમ્।
નીજાનંદ મુકુંદજીવન 'ગુરૂ' કથિતં કથિતમ્।।

પૃથ્વ્યાં અક્ષરધામં સર્જિતં સર્જિતમ્।
સાક્ષાત્ ગુણાતીત સદેહે દર્શિતં દર્શિતમ્।।

જીવેત શરદઃ શતમ્ ગુરુઃ અસ્માકં ગુરુઃ અસ્માકમ્।
કૃપાદષ્ટિં આશીર્વચં યાચિતં યાચિતમ્।।

અહો...! ગુરુજી; તવ સ્મરણં મધુરં મધુરમ્।
અમૃત રસધારા સદા વહિતં વહિતમ્।।

કાકા-કાકા, પપ્પા-પપ્પા કિદ્દશં કિદ્દશમ્।
મુકુંદજીવનસ્વામી સદ્દશં સદ્દશમ્।।

સિદ્ધ સ્વામી સંત વૃંદ સંતુષ્ટં સંતુષ્ટમ્।
ગુરુણાં ગુરું ત્વમ્, વંદિતં વંદિતમ્।।

– અમૃત વડિયા, સુરત

स्वामिश्रीजी

सौरभ - ४७

महाराज की कृपा से प.मु. शोभना बहन द्वारा हमारी फॅमिली का प.पू. गुरुजी के साथ संबंध हुआ। मुंबई में हमारे तीन सौ स्कवॅर फीट की चाली के रुम के घर में प.पू. गुरुजी ने खूब उमंग से पधरामनी की थी और घर की परछत्ती में धुन करके, अपने गले से कंठी निकाल कर मुझे पहनाई। अभी भी वे सुखद स्मृतियाँ भुलाई नहीं जातीं। अहोहो! प.पू. गुरुजी ने अपनी कंठी मुझे पहनाई, यह स्मृति आज भी वैसा ही आनंद देती है। तब हमें 'स्वामिनारायण धर्म' के बारे में भी कुछ भी पता नहीं था। लेकिन प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी के प्रथम दर्शन के बाद से हम अत्यधिक लगाव से उनके साथ जुड़ गए...

इस प्रसंग के बाद मेरा भाई प.भ. समीरभाई और मैं पहली बार दिल्ली मंदिर–श्री ठाकुरजी और प.पू. गुरुजी के दर्शन करने आए।

तब प.भ. विजयभाई महेता के पुत्र निश्चय की मुंडनविधि थी। इस प्रसंग पर समीरभाई खूब ही भावविभोर हो गए और प.पू. गुरुजी के हस्त से मुंडनविधि करवाने की इच्छा व्यक्त की। प.पू. गुरुजी ने तो अगले दिन कई सारे हरिभक्तों को निमंत्रण दे दिया और प.भ. नवीनभाई शाह ने समीर को धोती और 'स्वामिनारायण शर्ट' पहना कर बहुत अच्छा तैयार किया था। नाई भी सुबह आ गया था। मंदिर का सारा हॉल हरिभक्तों से भर गया था। प.पू. गुरुजी ने थोड़ी धुन शुरु की। तब मेरे मन में विचार उठा कि हम तो ब्राह्मण हैं। बाल्यावस्था में बाल उतरवाए जाते हैं और फिर यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर या फिर पिता या माता की मृत्यु हो जाए तब मुंडन करवाते हैं। अब समीर मुंडन करवाएगा और पिता या माता की मृत्यु हो जाएगी तो ? और... मन में तुरंत ही संकल्प किया कि यदि समीर का मुंडन रुक जाए तो मैं मान लूँगा कि प.पू. गुरुजी भगवान का स्वरूप हैं और हमेशा उनकी आज्ञानुसार वर्तूंगा। एक मिनिट में तो धुन पूरी हुई और प.पू. गुरुजी ने अपने हाथ में कैंची ली और समीर के बालों की एक लट काटते हुए बोले–

चलो, मुंडन हो गया; मुझे गंजे लोग अच्छे नहीं लगते हैं।

बस उसी क्षण से मुझे प.पू. गुरुजी पर खूब भरोसा हो गया और मुझे विश्वास हो गया कि कुछ भी हो जाए, लेकिन जिंदगी में प.पू. गुरुजी की मर्जी में चलने में ही हमारा हित है।

प.पू. दीदी द्वारा भी हमारी बहुत परवरिश हो रही है और प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी के बल से ही जिंदगी के क्रीटिकल पिरियड में भजन करने का बल मिल रहा है।

जब मैं पहली बार दिल्ली आया था, तो मुझे गंगा नदी के दर्शन के लिए हरिद्वार और ऋषिकेश इत्यादि जगहों पर जाना था। साथ ही मेरे मन में विचार आया कि प.पू. गुरुजी भी हमारे साथ में आएँ तो कितना अच्छा! और उसी क्षण प.पू. गुरुजी ने सभा में कहा–चलो, मैं भी भाविन और समीर के साथ जाऊँगा और... कई हरिभक्तों के साथ प.पू. गुरुजी ने हरिद्वार, ऋषिकेश–गंगा नदी के घाट और प.पू. काकाजी की प्रसादी की जगहों पर खुद साथ आकर हमें कई स्मृतियाँ दीं। प.पू. गुरुजी ने जिंदगी में ऐसी और भी कई स्मृतियाँ दी हैं और संकल्प पूरे किए हैं।

प.पू. काकाजी का एक अनुभव लगभग १९९६ से ९८ के बीच 'ब्रह्मज्योति' में समाधि स्थल पर हुआ था।

प.पू. दीदी तब अमदावाद थीं और अपनी मॅडिकल ट्रीटमेन्ट पूरी होने पर विद्यानगर दर्शन करने गई थीं। हम पू. दीदी के खास दर्शन करने के लिए मुंबई से अमदावाद आए थे और उनके साथ प.पू. काकाजी के समाधि स्थल का दर्शन करने के लिए 'ब्रह्मज्योति' गए। तब समाधिस्थान पर प.पू. ज्योति बहन और प.पू. दीदी के साथ सभी हरिभक्त धुन कर रहे थे। मुझे उस समय ऐसा आभास हुआ मानो प.पू. काकाजी आकाश से उतर कर समाधि पर आ रहे हों। उन्होंने धोती-कुर्ता-टोपी पहनी थी। मेरी आँखों में से अपने आप ही आँसू बह रहे थे। धुन समाप्त होने के बाद मैंने समीर से कहा कि मुझे यहाँ से प्रसादी का फूल लेना है। उसने प.पू. दीदी की आज्ञा ली और मैंने सूरजमुखी का बड़ा फूल प्रसादी के रूप में लिया। मुंबई पहुँचने के दो-तीन दिन के बाद जब हमने अपनी बेग खोली, तो प्लास्टिक की थैली में वह सूरजमुखी का फूल वैसा ही खिला हुआ था। फोन पर प.पू. गुरुजी को यह बात बताई, तो प.पू. गुरुजी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने यह फूल लेकर ताड़देव मंदिर में पू. वशीभाई से मिलने के लिए कहा। बुधवार की सभा में वह फूल जब पू. वशीभाई को दिखाया तो वे बोले–

काकाजी तुम्हें इस तथ्य का साक्षात् दर्शन करवा रहे हैं कि वे प्रगट ही हैं और प.पू. गुरुजी द्वारा तुम्हारे साथ ही हैं।

प.पू. गुरुजी से यही प्रार्थना कि प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार हीरक महोत्सव और आपके अमृतपर्व पर ऐसे आशीर्वाद दें कि हम सब आपकी और प.पू. दीदी की मर्जी में ही रहें और आप दोनों को हमारा भरोसा आ जाए ऐसे पात्र बनें।

– भाविन दवे, अमदावाद

[મૂળ ગુજરાતી]

સ્વામિશ્રીજી

મહારાજની કૃપાથી પ.મુ. શોભનાબેન દ્વારા અમારા ફૅમીલીને પ.પૂ. ગુરૂજીનો સંબંધ થયો. અમારા મુંબઈનાં ઘરે ત્રણસો સ્કવૅર ફીટની ચાલીની રૂમમાં પ.પૂ. ગુરૂજીએ ખૂબ ઉમંગથી પધરામણી કરી હતી અને ઘરમાં જે માળિયું હતું તેમાં ધૂન કરીને મને પોતાનાં ગળામાંથી કાઢીને કંઠી પહેરાવેલી. હજુ પણ એ સુખદ સ્મૃતિ ભૂલાતી નથી, પણ એવો જ આનંદ આપે છે કે અહોહો પ.પૂ. ગુરૂજીએ પોતાની પહેરેલી કંઠી તેમણે મને પહેરાવી! ત્યારે અમને સ્વામિનારાયણ ધર્મ વિશે પણ કાંઈ જ ખબર ન હતી. પણ ખૂબ જ હેતે કરીને પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. દીદી સાથે જોડાઈ ગયા...

આ પ્રસંગ પછી હું અને મારા ભાઈ પ.ભ. સમીરભાઈ પ્હેલી વાર દિલ્હી મંદિરે – શ્રી ઠાકોરજી અને પ.પૂ. ગુરૂજીના દર્શન કરવા આવ્યા.

ત્યારે પ.ભ. વિજયભાઈ મહેતાના પુત્ર નિશ્ચયની મુંડનવિધિ હતી. આ પ્રસંગે સમીરભાઈ ખૂબ જ ભાવવિભોર બની ગયા અને પ.પૂ. ગુરૂજીના હસ્તે મુંડનવિધિ કરાવવાની ઇચ્છા દર્શાવી. પ.પૂ. ગુરૂજીએ તો બીજા દિવસે ઘણાં બધાં હરિભક્તોને ઇન્વાઈટ કરી દીધા અને પ.ભ. નવીનભાઈ શાહે સમીરને ખૂબ જ સરસ રીતે તૈયાર કરીને ધોતિયું અને સ્વામિનારાયણ લખેલું શર્ટ પહેરાવ્યું. વાળંદ પણ સવારે આવી ગયો હતો. મંદિરનો આખો હૉલ હરિભક્તોની હાજરીથી ફુલ થઈ ગયો. પ.પૂ. ગુરૂજીએ નાની ધૂન શુરૂ કરી. ત્યારે મારાં મનમાં વિચાર ઊઠયો કે અમે તો બ્રાહ્મણ છીએ. ફકત જનોઈ, બાબરી અને ફાધર કે મધરની ડેથ થાય ત્યારે જ મુંડન કરાવાય. તો હવે સમીર મુંડન

કરાવશે અને ફાધર કે મધરની ડેથ થઈ જશે તો ? અને... મનમાં તરત જ સંકલ્પ કર્યો કે–જો સમીરનું મુંડન અટકી જાય અને વાળ ન ઉતરાવે તો હું માની લઈશ કે પ.પૂ. ગુરૂજી ભગવાનનું સ્વરૂપ છે અને કાયમ એમની આજ્ઞામાં રહીશ. એક મિનિટમાં તો ધૂન પૂરી થઈ અને પ.પૂ. ગુરૂજીએ પોતાના હાથમાં કાતર લીધી અને સમીરના વાળની એક લટ જ કાપી અને બોલ્યા–

ચલો, મુંડન હો ગયા, મુઝે ગંજે લોગ અચ્છે નહીં લગતે હૈં.

બસ એ ક્ષણથી જ મને પ.પૂ. ગુરૂજીનો ખૂબ જ ભરોસો બેસી ગયો કે કાંઈ પણ થઈ જશે, પણ જીંદગીમાં પ.પૂ. ગુરૂજીની મરજીથી ચાલવામાં જ આપણું હિત છે.

પ.પૂ. દીદી દ્વારા તો અમારી ખૂબ કાળજી લેવાય છે અને પ.પૂ. ગુરૂજીની જેમ જ પ.પૂ. દીદીના બળથી પણ જીંદગીમાં ક્રીટીકલ પિરિયડમાં ભજન કરવાનું બળ મળી રહે છે.

અમારા દિલ્હીના આ રોકાણ દરમ્યાન જ મારે ગંગા નદી, હરિદ્વાર, ઋષિકેશ વગેરે જગ્યાએ જવું હતું, કારણ કે પહેલી વખત જ દિલ્હી આવ્યો હતો. વળી, મનમાં થયું કે પ.પૂ. ગુરૂજી પણ આપણી સાથે આવે તો કેવું સારૂં અને તે જ ક્ષણે પ.પૂ. ગુરૂજીએ ચાલુ સભામાં કહ્યું કે ચલો, હું ભાવિન અને સમીર સાથે જઈશ અને... ઘણાં હરિભક્તો સાથે પ.પૂ. ગુરૂજીએ હરિદ્વાર, ઋષિકેશ–ગંગા નદીના ઘાટ વગેરે જગ્યાએ અને પ.પૂ. કાકાજીની પ્રસાદીની જગ્યાઓ ઉપર જાતે આવીને ઘણી બધી સ્મૃતિઓ આપી. પ.પૂ. ગુરૂજીએ જીંદગીમાં આવી ઘણી બધી સ્મૃતિઓ આપી છે અને સંકલ્પો પૂરા કર્યા છે.

પ.પૂ. કાકાજીનો એક અનુભવ લગભગ ૧૯૯૬ થી ૯૮ વચ્ચે 'બ્રહ્મજ્યોતિ' પરના સમાધિસ્થાને થયો હતો.

પ.પૂ. દીદી ત્યારે અમદાવાદ હતા અને એમની મૅડિકલ ટ્રીટમેન્ટ પૂરી કરીને વિધાનગર દર્શન કરવા ગયા હતા. અમે મુંબઈથી ખાસ પ.પૂ. દીદીના દર્શન કરવા અમદાવાદ આવ્યા હતા અને પછી તેમની સાથે 'બ્રહ્મજ્યોતિ' પ.પૂ. કાકાજીના સમાધિસ્થાને દર્શન કરવા ગયા. ત્યારે સમાધિસ્થાન ઉપર પ.પૂ. જ્યોતિબેન અને પ.પૂ. દીદી સાથે સૌ હરિભક્તો ધૂન કરી રહ્યા હતાં. મને પ.પૂ. કાકાજી આકાશમાંથી ઉતરીને સમાધિ ઉપર આવતા હોય તેવું દર્શન થયું. તેમણે ધોતિયું-ઝબ્બો-ટોપી પહેર્યાં હતાં. મારી આંખોમાંથી આસું વહી રહ્યા હતાં. ધૂન પતી ગયા પછી મેં સમીરને કહ્યું કે મારે સમાધિ સ્થાન પરથી ફૂલ લેવું છે. તો તેણે પ.પૂ. દીદીની આજ્ઞા લીધી અને મેં સૂર્યમુખીનું મોટું ફૂલ પ્રસાદી તરીકે લીધું. મુંબઈ પહોંચ્યા પછી બે-ત્રણ દિવસ પછી અમારી બેગ ખોલી-કરી, તો પ્લાસ્ટીકની કોથળીમાં તે સૂર્યમુખીનું ફૂલ એવું જ ખીલેલું હતું. ફોનમાં પ.પૂ. ગુરૂજીને આ વાત જણાવી. તો, પ.પૂ. ગુરૂજી રાજી થયા અને એમણે તારદેવ મંદિરે પૂ. વશીભાઈને આ ફૂલ લઈને મળવાનું કહ્યું. બુધવારની સભામાં એ ફૂલને જ્યારે પૂ. વશીભાઈને બતાવ્યું તો એઓ બોલ્યા કે –

કાકાજી તમને દર્શન કરાવે છે કે હું પ્રગટ જ છું અને પ.પૂ. ગુરૂજી થકી તમારી સાથે જ છું.

પ.પૂ. ગુરૂજીને એજ પ્રાર્થના કે પ.પૂ. કાકાજી મહારાજના સાક્ષાત્કારના હીરક મહોત્સવ પર્વે અને આપનાં અમૃતપર્વે એવા આશીર્વાદ આપો કે અમે સૌ તમારી અને પ.પૂ. દીદીની મરજીમાં જ રહીએ અને તમને બન્નેને અમારો ભરોસો થઈ જાય તેવા પાત્ર બનીએ.

– ભાવિન દવે, અમદાવાદ

सौरभ - ४८

मानो, मेरा जन्म ही सत्संग में हुआ है... – *प.पू. गुरुजी*

प.पू. गुरुजी ने १९९१ की भगवत् कृपा में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के लिए लिखा था–
'वास्तव में वे इतने महान थे कि उनके साथ जब भी हम उठते-बैठते, हमें कभी यह महसूस ही नहीं हुआ कि हम उनसे छोटे हैं।'
आज ऐसा ही एहसास प.पू. गुरुजी के प्रति होता है। प्रभु को अखंड धारी हुई विभूति खूब सामान्य कक्षा पर आकर, संबंध में आए मुक्त के साथ इतनी ओतप्रोत हो यह सच में कल्पना से परे की बात है।

१९८१ में पूर्वाश्रम का परिवार मंदिर के नज़दीक रहने के लिए आया। ब्राह्मण होने के कारण सामान्य रूप से घर में रामायण-सुंदरकांड का पाठ होता या सत्यनारायण की कथा भी होती। परंतु, हरिद्वार से जुड़े होने के कारण, वहाँ के ढोंगी साधु-बाबाओं की अनैतिक छाप के कारण, परिवार में साधु-संतों के प्रति हमेशा शंका ही बनी रहती।

एक बार प.पू. गुरुजी मेरे पूर्वाश्रम के घर की पहली मंज़िल किराए पर लेने के लिए आए, तो परिवारजनों ने साफ़ कह दिया कि वे साधु-संतों को किराए पर मकान नहीं देंगे। प.पू. गुरुजी तो कुछ भी कहे बिना चले गए। थोड़े समय के बाद १९८३ में संयोगवश मंदिर का संपर्क हुआ और १९८४ की फरवरी में प.पू. काकाजी के पहली बार दर्शन हुए। तत्पश्चात्, परिवार की समस्या हल होने लगी और प.पू. काकाजी दिल्ली आने पर पूर्वाश्रम के घर में ही ठहरते। तब एक बार प.पू. गुरुजी ने बताया–
जब हम यहाँ किराए पर मकान लेने के लिए आए थे और हमें देने से मना कर दिया गया था, तभी मैंने ठान लिया था कि भले ये हमें अभी मना कर रहे हैं, लेकिन इस घर में तो आना ही है।
तब एहसास हुआ–जैसा कि प.पू. काकाजी कहा करते–***गुणातीत का संकल्प यानि–महाकाल!*** और... उन्हीं के संकल्प के बदौलत मैं प.पू. दीदी की निश्रा में भगवान भजने के लिए भी आ गई!

भक्ति से परिपूर्ण व्यावहारिक क़वायद

बाह्यदृष्टि से प.पू. गुरुजी की कार्यदक्षता की बात की जाए तो उनके समयपालन, लगन, दिल की सच्चाई और व्यवस्थित जीवन का कोई तोल नहीं है। अपने जॅस्चर्स से उन्होंने यही प्रयास किया है कि उनसे जुड़े हुए सभी मुक्त भी ऐसे ही अनुशासित होकर सुखी होने के साथ-साथ सत्पुरुष की प्रसन्नता प्राप्त करें।

मेरे अक्षर शुरु से ही साफ-स्पष्ट हैं। सो, १९८९ में प.पू. दीदी ने मुझ पर कृपा करके पहली बार ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्राकट्य दिन के पोस्ट कार्ड्स पर एड्रेसिस लिखने की सेवा दी। उस समय प.पू. गुरुजी स्वयं मंदिर की मेईलिंग लिस्ट तैयार करते थे और पोस्ट कार्ड्स या कार्ड्स पर लिखे हुए एक-एक एड्रेस को मेईलिंग लिस्ट से चैक करते थे। अतः पोस्ट कार्ड पर मेरे द्वारा लिखे एड्रेस को देख कर प.पू. गुरुजी ने प.पू. दीदी से पुछवाया कि यह किसने लिखा है। प.पू. दीदी ने मेरे विषय में कहलवाया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने मुझे लिखने की सेवा देनी शुरू की और साथ-साथ सभी को यह भी कहा करते कि देखो इसके अक्षर मेरे जैसे हैं। जबकि देखा जाए तो मेरे अक्षर तनिक भी उनके जैसे नहीं थे। **दरअसल यूं कहते हुए वे मुझे**

आशीर्वाद दे रहे थे और खुद से व प.पू. दीदी से लगाव करवाने का यह एक ज़रीया था। वर्ना यह नहीं कहा जा सकता कि मेरे अक्षर उनके जैसे हैं, क्योंकि **'अक्षर' के हस्ताक्षर की तो किसी से तुलना ही नहीं की जा सकती।**

लेखन की सेवा देते हुए प.पू. गुरुजी ने सेवक के माध्यम से मुझे जो कुछ सिखाया, वो शायद बड़े-बड़े इंस्टीट्यूस से ऑफिस मेनेजमेन्ट का कोर्स किए हुए लोग भी नहीं जानते होंगे। लेखन से संबंधित कोई भी कार्य हो तो जैसे–

- *लॅटरहेड के सीधे और उल्टे हाथ पर कितना मार्जिन छोड़ना चाहिए, खुद लॅटरहेड पर पेन्सिल से मार्क करके भिजवाते।*
- *लॅटरहेड पर लिखते हुए लाइनें टेढ़ी-मेढ़ी न जाएँ, इस हेतु उसके नीचे लाइनों वाला पेपर रख कर कैसे लिखना है यह समझवाते।*
- *लॅटर लिखते समय तारीख अवश्य लिखी होनी चाहिए।*
- *लॅटर लिखते हुए लाइनों के बीच स्पेस एक जैसा होना चाहिए।*
- *किसी वाक्य को हाईलाइट करना हो, तो अंडरलाइन करना चाहिए या उसे अन्यों के मुकाबले बड़े या अलग कलर की स्याही से लिखना चाहिए।*
- *संदेश या सूचना हमेशा आईकॅचिंग और टॅब्यूलर फॉर्म में होनी चाहिए, ताकि पढ़ने वाला आसानी से अवगत हो सके।*
- *लिखित मॅटर को हमेशा किसी से चॅक, रीचॅक और वॅरिफाई करवाना चाहिए, जिससे कि कहीं कोई गल्ती न रह जाए।*
- *लॅटरहेड का या पेपर का फोल्ड ठीक से कोने से कोना मिला कर करना चाहिए। यदि तीन फोल्ड करने हों, तो उनके मार्जिन बराबर होने चाहिए।*
- *ग्लू स्टिक से यदि पेपर चिपकाना हो, तो उसके नीचे पुराना अखबार रख कर चिपकाना चाहिए, ताकि नीचे टेबल या पटिया का सरफेस खराब न हो।*
- *पेपर कटर से यदि पेपर काटना हो, तो उसके नीचे भी पुराना अखबार या काँच का टुकड़ा रख कर करना चाहिए, ताकि नीचे की टेबल या फर्श पर निशान न पड़ें।*
- *कोई भी सामान जैसे – स्टेप्लर, स्केल, पेन, पेन्सील, रब्बर या मंदिर से ली गई किसी भी चीज को जहाँ से लिया हो, काम करने के बाद वहीं रख देना चाहिए। इसके लिए प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं कि यह घर नहीं, इन्स्टीट्यूट है। हमेशा चीजें इस्तेमाल करके उसी जगह रख देनी चाहिएँ, ताकि अन्यों को दोबारा वहीं से मिल सकें।*

इसके अतिरिक्त फोन पर किस प्रकार बात करनी है यह भी सिखाया।

- *सर्वप्रथम तो फोन कम्यूनिकेशन का साधन है न कि एन्टरटेईनमेन्ट या टाइम पास करने का। सो, शार्ट में बात करें।*
- *जिस भी व्यक्ति को यदि आप फोन करें, तो भले ही आप उसकी आवाज़ पहचानते हों, लेकिन उससे पहले पूछिए कि आप कौन बोल रहे हैं। सीधे ही बात करना जारी नहीं करना चाहिए। हो सकता है कि एक जैसी आवाज़ का अन्य कोई व्यक्ति हो।*

- *किसी को फोन करो, तो पहले उससे पूछिए 'आप कौन बोल रहे हैं?' फिर, वह व्यक्ति यदि हम से बड़े हों तो पूछना 'आप व्यस्त तो नहीं?' उसकी स्वीकृति के बाद ही बात करना शुरू करें, ताकि वह तसल्ली से आपकी बात सुन सके।*
- *किसी अफसर से बात करनी हो, तो ऑपरेटर से उस व्यक्ति के नाम से पहले मिस्टर 'फलां' करके न कहें, बल्कि नाम के पीछे साहेब, सर या मैडम इत्यादि का प्रयोग करें।*

ऐसी ट्रेनिंग देते हुए उन्हें यदि कहीं कड़ा भी होना पड़ा, तो वे हुए भी। पर, उनके ऐसे जॅस्चर्स से हमेशा के लिए ऐसी बातें अंतर में बैठ गईं।

यह तो ऑफिस वर्क से संबंधी केवल थोड़े ही उदाहरण हैं, बाकी ऐसा कोई भी विषय नहीं जिसके बारे में प.पू. गुरुजी ने सेवकों को उससे संबंधित ट्रेंनिग न दी हो। जब व्यावहारिक ट्रेंनिग देने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी, तो फिर आध्यात्मिक क़वायद की तो बात ही क्या?

जैसे कि प.पू. गुरुजी हमेशा अपनी बातों में कहा करते हैं कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज हमेशा उनसे कहते– *'भक्तों' के साथ कभी व्यावहारिक ढंग से संबंध नहीं करना, मीठे पेड़ की जड़ें नहीं काटी जाती...* उनकी इसी बात को नज़र समक्ष रखते हुए प.पू. गुरुजी ने दिल्ली में सत्संग समाज का नहीं, बल्कि एक **'दिव्य कुनबे'** का सर्जन किया है।

- गुजरात एपार्टमेन्ट्स में मंदिर से जुड़े करीब आठ-दस घर हैं। प.पू. गुरुजी वहाँ जब भी किसी के घर पधरामनी के लिए जाते हैं, तो वहाँ रहते सभी मुक्तों को कहे रखा है कि *भले ही मैं किसी एक के घर आऊं, लेकिन प्रसाद के लिए सभी के घरों से एक-एक व्यंजन बनवाएँ।* इसके पीछे उनकी यही भावना होती है कि आज महंगाई के दौर में एक ही मुक्त खर्च का बोझ न उठाए, न ही एक ही घर में सब कुछ बनाने का बोझ पड़े।

  इससे भी अधिक ऐसा करने से आपस में मेलजोल बढ़े। यूँ नहीं कह सकते कि ऐसा करने में उन मुक्तों के स्वभाव आड़े नहीं आते होंगे, लेकिन प.पू. गुरुजी को राजी कर लेने के लिए वे अपने स्वभावों को छोड़ देते हैं।

- इसी प्रकार प.पू. गुरुजी को या उनकी आज्ञा से मंदिर की जरुरत के लिए सेवक को यदि पाँच रुपये की भी कोई चीज किसी हरिभक्त से मंगवानी हो, तो प.पू. गुरुजी उसका पॅमेन्ट करने का हमेशा आग्रह रखते हैं। वस्तु लाने वाले मुक्त कई बार खूब आग्रह करते हैं कि *यह केवल पाँच रुपये की ही तो चीज है, इसमें क्या लेना?* परंतु प.पू. गुरुजी अपनी बात पर अटल रहते हुए यही कहते हैं –

  तुम्हें खुद मंदिर के लिए सेवा देनी हो तो भले ही लाख रुपये की दो, उसके लिए मैं मना नहीं करुँगा, परंतु यदि हम कोई जरुरत की चीज मंगाएँगे, उसके पैसे तो हम देंगे ही। वर्ना आगे से हम लाने के लिए नहीं कहेंगे।

  इसके पीछे का हेतु भी बहुत स्पष्ट रूप से बताते हैं –

  आज हम पाँच रुपये की चीज मंगाते हैं और उसके पैसे नहीं देते, तो कल को यदि हम हज़ार रुपये की वस्तु मंगाएँ और तब उस हरिभक्त की मानो गुंजाइश न हो, फिर भी वह लगाव के वश जैसे-तैसे लाकर ही देगा। परंतु एक समय के बाद उसकी श्रद्धा टूट जाएगी और वह हमारी सबसे बड़ी असेवा होगी।

यहाँ तक कि यदि किसी हरिभक्त के यहाँ से कभी कुछ नाश्ता वगैरह भी ज्यादा बनवाते हैं, तो उसका सीधा-सामान जैसे तेल-घी, काजू-किशमिश इत्यादि वे मंदिर से ही दे देते हैं!

इसके अतिरिक्त सेवकों को खास सूचना दी है कि बाज़ार से यदि मंदिर के लिए कोई सामग्री ले कर आएं, तो दुकानदार से यह अपेक्षा नहीं रखें कि वह तुम्हें मुफ्त में वस्तु दे और इसके लिए उससे आग्रह भी नहीं करना। प.पू. गुरुजी का कहना है कि

हमें ख्याल नहीं है कि थोड़े से पैसों के कारण हम भगवान की अपनी अनमोल मूर्ति लुटा देते हैं।

सच, इतनी बारीक-बारीक बातों की तो हम कभी कल्पना ही नहीं कर सकते। बल्कि अपनी मूर्ति खोकर मान में झूलते रहते हैं कि ओहो! हमने तो मंदिर की कितनी सेवा कर दी!

समूह में जीवन जीने की क़वायद

जैसे कि प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि उन्हें बचपन से ही समूह में रहने की आदत है; और... इसी कारण वे मंदिर में या बाहर भी कहीं गए हों, तो यही कोशिश करेंगे कि हॉल में सब के साथ ही सोएं। परंतु, एक बार उनके मुँह से सहज ही निकल गया–

साधु होने के बाद मुंबई में गुरुवर्य योगीजी महाराज ने उनसे कहा था–*हमेशा हॉल में ही सोना।*

तब से आज तक साधु की दीक्षा लेने के ५० साल के बाद, बाय पास सर्जरी होने के बावजूद भी वे हॉल में सभी के साथ सोते हैं। इससे भी अधिक अपने जॅस्चर द्वारा साधकों को प्रेरणा देते हैं कि समूह में ही रहना चाहिए, ताकि अपने स्वभाव का परिवर्तन हो सके। हॉल में सभी के साथ सोते हैं, तो स्वाभाविक है कि नींद में कइयों को जोर से खर्रांटे भी आते हैं। इस विषय में यदि कभी चर्चा हो रही हो, तब भी प.पू. गुरुजी के मुँह से कभी भी नहीं सुना कि फलां ऐसे करता है, तो मेरी नींद डिस्टर्ब हो जाती है। उल्टा मज़ाक में कहेंगे कि एक-दो जनरेटर चल रहे होते हैं, तो मुझे नींद अच्छी आती है। इससे जिसे खर्रांटे आने की आदत होती है, वह भी शर्मिंदगी महसूस नहीं करता और उसे अपने से दूर नहीं होने देते।

१९८४ में प.पू. गुरुजी के संपर्क में आना हुआ, तब से १९९७ तक सेवकों से यही सुना कि गुरुजी हॉल में पतले से गद्दे पर ही सोते हैं। बाय पास सर्जरी के बाद जब उन्हें शरीर के दाएँ भाग में तकलीफ आई, तब से वे पलंग पर सोते हैं। अभी जब फरवरी २०१० में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के अमृतपर्व में जाने का मौका मिला, तब प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन में यह प्रसंग सुन कर मैं स्तब्ध रह गई। प.पू. गुरुजी ने बात की–

जब मैं सांकरदा रहता था, तब भी हॉल में सब संतों एवं सेवकों के साथ ही सोता था। तो, एक बार मुझसे अक्षरविहारीस्वामिजी ने पूछा –*तुम्हारे लिए तो अलग कमरा है, फिर उसमें क्यों नहीं सोते?*

मैंने कहा– *मुझे तो हॉल में ही सबके साथ सोना अच्छा लगता है।*

अक्षरविहारीस्वामिजी ने पूछा– *तुम्हें यहाँ पलंग तो नहीं चाहिए?*

मैंने सहजता से कहा – *हो तो अच्छा है...*

प.पू. गुरुजी द्वारा कही यह बात सुन कर आश्चर्य हुआ कि १९६६-६७ में यह बात हुई और प.पू. गुरुजी तो अब तक नीचे ही सोते आए! मतलब उन्होंने दिल्ली में सेवकों को कभी भनक तक नहीं पड़ने दी कि उन्हें पलंग की जरुरत है। ऐसे तो उनके कितने जॅस्चर्स हैं, जो समूह में कैसे जीवन जीना चाहिए इसकी प्रेरणा देते हैं।

दासभाव - साधक की दृष्टिभरी क़वायद

हम सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी खूब सरलता व सहजता से स्वरूपों के साथ के अपने संबंधों-प्रसंगों का अकसर सभाओं में विवरण देते हैं। इस विषय में यदि गहनता से सोचें तो उन्होंने जीवों को प्रभु से जोड़ने के लिए अपनी त्रुटियों की ही हमेशा बात की है। कभी भी ऐसा नहीं कहा कि मैंने इतना सहन किया या अमुक व्यक्ति ने मेरे साथ ऐसा किया। इस विषय में कभी जिक्र तक नहीं किया और... उनके जॅस्चर्स को यदि गहनता से निहारें तो सत्संग की शुरुआत से ही उनके भीतर एक ही अरमान कि कैसे प.पू. बापा राजी हों या कैसे प.पू. काकाजी राजी हों...

- जैसा कि हम सभी जानते हैं कि गुरुजी सायन्स के विद्यार्थी थे। बापा ने संस्कृत पढ़ने के लिए कहा। बापा के साथ निष्कपट संबंध के कारण प.पू. गुरुजी ने भले ही कह दिया कि *संस्कृत इज़ ए डॅड लेंग्वेज...* परंतु अपने मन का भी न मानते हुए, उन्होंने बापा को राजी करने की भावना से संस्कृत का अध्ययन किया। केवल अध्ययन ही नहीं किया, बल्कि उसमें भी श्रेष्ठ अंक प्राप्त किए और...

  आज पचास साल के बाद भी उन्हें संस्कृत के श्लोक वैसे ही याद हैं और उनका उच्चारण कैसे किया जाए, यह भी वे भलीभाँति जानते हैं। भक्ति अदा करने की भावना से यदि संस्कृत में ओत-प्रोत नहीं हुए होते, तो क्या आज भी वह सब याद होता? जबकि हम जैसे तो स्कूल-कॉलेज में जो पढ़े, वह भी तकरीबन भूल गए हैं...
- इसी प्रकार प.पू. गुरुजी अपनी बातों में कहते हैं कि मैंने तो अक्षरभुवन इत्यादि में कोई सेवा नहीं की, वगैरह–वगैरह। पर, दूसरी ओर कई बार बातों-बातों में उन्होंने बताया कि पू. नंदगुरु ने उन्हें बाजरे की रोटी बनाना सिखाया। ऐसी बातें सुन कर लगता है कि बिना लगाव और भक्ति के ऐसा सीख पाना संभव ही नहीं। आश्चर्य होता है कि मुंबई के माहौल में पला-बढ़ा और नेशनल रॅयॉन जैसी कंपनी में कार्य करने वाला व्यक्ति साधु होने के बाद रोटी बनाना सीखे! उसके लिए अपने आपको उस माहौल में ढालना कितना मुश्किल पड़ा होगा? 'मनुस्मृति' के मुताबिक स्त्री तो जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी रूप में पुरुष के संरक्षण में ही अपना जीवन व्यतीत करती है। यूँ स्त्रियाँ तो अपने आप को सहजता से बंदिश के माहौल में ढाल लेती हैं। परंतु पुरुष को नियम-मर्यादा में रखना, वह तो समर्थ गुरु और आज्ञाकारी शिष्य द्वारा ही संभव है।
- दूसरी ओर-अकसर प.पू. गुरुजी कहते हैं कि शुरुआत में तो हमने सत्संग किया ही नहीं, मौज-मस्ती ही की। लेकिन, प.पू. बापा और प.पू. काकाजी के साथ के उनके प्रसंग जब हम सुनते हैं या सांकरदा रहते हुए प.पू. गुरुजी ने वचनामृत-स्वामी की बातें जिस गहनता से पढ़ीं, इतना ही नहीं साधना मार्ग की कुंजियों या सत्पुरुष के साथ संबंध की बातों को उन्होंने जिस प्रकार हाईलाईट किया हुआ है, वह देख कर स्पष्ट पता चलता है कि जिसे अपने ध्येय-लक्ष्य की स्पष्टता होगी, वही यूँ अंतर्दृष्टि करते हुए अपने प्रगट प्रभु के साथ खुल्ला-निष्कपट संबंध दृढ़ कर सकता है। वर्ना, यदि मौज-मस्ती ही की होती, तो 'स्वामी की फलां बात में' इतनी बार 'संग' शब्द आया है, यह भला कोई कैसे याद रख सकता?
- मुक्तों द्वारा महिमागान सुन कर प.पू. गुरुजी कई बार यह भी कहते हैं कि आप भले ही कहते हो कि *मैंने काकाजी की हर आज्ञा शिरोधार्य की; पर, मैं जानता हूँ कि काकाजी की बात पर मैं कितना चल पाया हूँ।*

उनका ऐसा कहना, उनके दासभाव की निशानी है। वर्ना, जिन्हें मुक्तों का भी इतना ही स्वीकार हो, तो स्वरूप की तो बात ही क्या ?

प.पू. गुरुजी ने निम्न प्रसंग बताया था –

दिल्ली में एक बार संस्था से प्रकाशित की गई 'योगी चरितम्' पुस्तक पर अक्षरनिवासी आर.के. पटेल साहेब के लिए प.पू. काकाजी द्वारा आशीर्वाद लिखवाने के लिए प.पू. गुरुजी ने एक प्रति सेवक से रखवाई। उसकी बाईन्डिग उल्टी थी। यह देख कर प.पू. काकाजी बोले –

यह देखो, ईश्वरचरणस्वामी ने बापा की पुस्तक छापी है; बापा की पुस्तक – जिसे स्वरूप मानते हो, उस विभूति पुरुष की पुस्तक – उसकी बाईन्डिंग तो उल्टी है।

अपनी लाक्षणिक ढब से यूँ काफी देर तक दोहराते रहे।

प.पू. गुरुजी खूब सोचते रहे कि *एक-दो प्रतियों में बाईन्डिंग उल्टी निकले उसमें ईश्वरचरणस्वामी का क्या दोष? दोष तो प्रेस वाले का कहा जाए। क्या मेरे भीतर अभी भी ईश्वरचरणस्वामी के प्रति कोई पूर्वाग्रह की गाँठ होगी, जो काकाजी लगातार यह बात मुझसे किया करते हैं?*

अगले दिन भी प.पू. काकाजी तो सुबह से लेकर दोपहर तक यही बात दोहराते रहे। शाम को पू. राजुभाई भट्ट के साथ प.पू. गुरुजी थोड़ा टहलने गए, तो वहाँ दोनों के बीच इस विषय पर चर्चा हुई। तब सहज ही पू. राजुभाई ने प.पू. गुरुजी से कहा –

मुझे ऐसा लगता है कि प.पू. काकाजी समझाना चाहते हैं कि तुम जिसे स्वरूप मानते हो, उसके वचन में तुम कितनी लापरवाही रखते हो। मतलब कि काकाजी को पुस्तक देने से पहले आपको यह देखना चाहिए था कि वह ठीक-ठाक है या नहीं। आपने इतनी भी सावधानी नहीं बरती।

सत्पुरुष स्वयं हमें यूँ समझाएँ, तब तो हम सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं, लेकिन **अपने सरीखे या छोटों द्वारा मिली सीख को सत्पुरुष की दृष्टि से ही स्वीकारना, यह तो सच में कोई विरल विभूति ही कर सकती है जिसने अपने प्रभु को राजी करने के लिए अपना कुछ भी बाकी न रखा हो।**

सच, क्या हम दिल की सच्चाई से कह पाएँगे कि हाँ, हमें अपने साथी-मुक्तों का भी ऐसा ही स्वीकार है जैसा कि प.पू. गुरुजी या प.पू. दीदी का है। अरे! अंतर में झाँकें तो शायद अभी तो हम स्वरूप का ही स्वीकार नहीं कर पाते होंगे, तो साथीमुक्त की बात ही कहाँ?

गुणातीत कबीले की क़वायद

ब्रह्मप्रवाह पुस्तक के पहले पृष्ठ पर प.पू. काकाजी की जो मूर्ति है, उसमें वे ब्रीफकेस के ऊपर काग़ज़ रख कर कुछ लिख रहे हैं। उसके नीचे सूत्र लिखा है – *पत्रलेखन में मशगूल सहृद्यी... जैसा-वैसा, जहाँ-वहाँ, जिधर-इधर कहीं भी!*

मेरा सौभाग्य था कि जब प.पू. काकाजी यह लेखन कर रहे थे, तब मैं उनके दर्शन कर रही थी। उस समय मुझे भी यह दृश्य देख कर आश्चर्य हुआ था कि प्रभुधारक विभूति हैं, लेकिन इतनी सामान्य रीति से बिना किसी सुविधा के हर जगह अपने आप को उसके अनुकूल बना लेते हैं। **आज वही दर्शन प.पू. गुरुजी में होता है।**

- मंदिर में तकरीबन दो साल से निर्माण कार्य चल रहा है। स्वाभाविक है कि सॅटिंग करने के लिए कहीं ड्रिल मशीन चलती है, तो कहीं हथौडों से दीवार टूट रही होती है और इस प्रकार की आवाज़ अत्यंत असहनीय होती है। हम थोड़ी देर के लिए दर्शन करने के लिए जाते, तब यह आवाज़ सुन कर कई बार सिर में दर्द जैसा हो जाता। लेकिन प.पू. गुरुजी सहजता से सारे दिन वहाँ बैठे रहते हैं; दैनिक कार्य करते हैं और आने-जाने वाले मुक्तों की बातें सुनते हैं तथा उनकी समस्याओं का समाधान भी करते हैं।

  और तो और… अब चार-पाँच महीने से वे ठाकुरजी के हॉल में रुकने आए हैं। हाँलाकि टॉप फ्लोर पर अब अच्छे कमरे भी बने हुए हैं, लेकिन वे तो ठाकुरजी के हॉल में ही फोल्डिंग पलंग बिछवा कर सोते हैं। उन्हें तकलीफ तो होती ही होगी, लेकिन उसका वे एहसास तक नहीं होने देते।

  प.पू. गुरुजी जब ए-१०३ में किराए की कोठी में रहते थे, तब उन्हें असुविधा में रहता देख कर मन में सोचते थे कि चलो, मंदिर बन जाएगा तो उनके लिए भी आराम हो जाएगा। परंतु आज भी देखें तो हमें हर प्रकार से सुखी करके वे स्वयं तो उसी कसनी में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। **उनके जीवन से ही ‘देहातीत’ की परिभाषा तादृश होती है।**

- किसी भी स्वरूप या उनसे जुड़े मुक्तों की सेवा के लिए प.पू. गुरुजी कोई समझौता नहीं करते, परंतु जहाँ अपने लिए सुख-सुविधा की बात आती है, वहाँ वे तुरंत ही कटौती की बात करते हैं।

  जब प.पू. गुरुजी ए-१०३ में रहते थे, तब एक बार उनका गातरिया थोड़ा फट गया था। मुझे भलीभाँति याद है कि उन्होंने वहाँ पर कपड़े का पॅच लगवा कर उसे इस्तेमाल किया। यहाँ तक कि उस समय तो वे मंदिर की ज़मीन के लिए डी.डी.ए. के अफ्सरों से मिलने जाते थे और वह पॅच आगे ही दिखाई देता था। उसे देख कर सभी सोचते कि प.पू. गुरुजी इसे बदल क्यों नहीं लेते, अच्छा नहीं लगता। लेकिन यही जवाब मिलता–इसमें क्या बुराई है? और काफी समय तक वे उसे ही इस्तेमाल करते रहे। एक ओर देखें तो प.पू. गुरुजी को सब कुछ ‘अप टु डेट’ चाहिए, लेकिन गुरुहरि योगीबापा के ‘मंकद’ तो उनके नक्शेकदम पर चलते हुए सेवकों को सिखाते हैं कि किस प्रकार ठाकुरजी के पैसे बचाने की सेवा करनी चाहिए।

  पिछले वर्ष प.पू. गुरुजी ने प.पू. स्वामिजी के दर्शन करने के लिए हरिधाम जाने का कार्यक्रम बनाया। एयर की टिकिट्स का पता करवाया तो वडोदरा की टिकिट, अमदावाद की टिकिट से महंगी मिल रही थी। टिकिट के पैसे बचें, इसलिए प.पू. गुरुजी ने अमदावाद की टिकिट करवाई और फिर एयरपोर्ट से बाय कार डेढ़ घंटे का सफ़र करके हरिधाम पहुँचे। प.पू. स्वामिजी को यह बात इतनी स्पर्श कर गई कि उन्होंने वहाँ सभा में करीब चार-पाँच बार यह बात दोहराई और यही कहा कि इस आयु में भी प.पू. गुरुजी के मन में ठाकुरजी के पैसे बचा कर सेवा करने की कैसी गरज? जबकि उन्हें अपने स्वास्थ्य और उम्र के कारण कष्ट-भीड़ा पड़ा ही होगा।

  पर, सच प.पू. गुरुजी का जॅस्चर खूब विचार करने लायक है कि उनके द्वारा इतनी सीख देने और उसे देखने के बावजूद भी क्या हम प्रसंग पर ऐसा वर्ताव कर पाते हैं?

- किसी को कैसे मान देना या उम्र का लिहाज़ करना, वह तो कोई प.पू. गुरुजी से ही सीखे… मंदिर में कई मुक्त ६० साल या उससे ज्यादा उम्र के हैं और… उन मुक्तों को आज भी शारीरिक रूप से सेवा करने की वैसी ही गरज है, जैसे कि युवा अवस्था में थी। सो, सहज ही वे वैसी सेवा करने के लिए तत्पर रहते हैं।

परंतु प.पू. गुरुजी ने सेवकों को खास सूचना दी है कि अब जो मुक्त वृद्ध हो गए हैं, उनसे शारीरिक श्रम की सेवा न करवाई जाए। यहाँ तक कि कभी, सेवक की गैरमौजूदी में, कोई उपस्थित वृद्ध मुक्त यदि प.पू. गुरुजी को पानी का गिलास भी दे दें, तो वह भी प.पू. गुरुजी को जँचता नहीं, ऐसा उनके चेहरे के भाव से स्पष्ट पता चलता है।

सो, जब कभी प.पू. गुरुजी को ख्याल पड़ता हो कि कुछ सत्संगी अपने परिवार में वृद्धों का आदर नहीं करते, तो उन्हें कितना दुःख होता होगा? जबकि प.पू. गुरुजी की पल-पल की क्रिया कुछ न कुछ सिखाती है...

प.पू. गुरुजी को संस्था में बापा के वचन से संस्कृत की शिक्षा देने वाले **पू. नर्मदाशंकर शास्त्रीजी**, प.पू. गुरुजी के आग्रह से, अबकी बार गुरुपूर्णिमा के मंगलकारी दिन पर पहली बार दिल्ली मंदिर आए थे। तब **प.पू. गुरुजी ने उनका जिस प्रकार आदर-सत्कार किया, उसे देख कर तो 'वेदयुग' कल्पना में आ गया और मन में आया** कि भाषा ज्ञान देने वाले गुरु का शिष्य के दिल में इतना मान, तो 'ब्रह्मज्ञान' के दाता 'ब्रह्मस्वरूप' सत्पुरुष के प्रति की भावना का तो मोल ही कहाँ?

सत्संग और सत्संगी को अपना परिवार–अपने सगे मानने की क़वायद

हम सभी जानते ही हैं कि प.पू. गुरुजी कोई किताब पढ़ते हैं या टी.वी. में कोई धार्मिक या सामाजिक सीरियल देखते हैं, तो साधना मार्ग पर काम आती बातें ढूँढ लेते हैं। पिछले वर्ष 'मीरां सीरीयल' के एक एपीसोड में महल छोड़ते हुए **मीरां की माँ वीरकुंवरी** अपने पति से कहती है–

'मैं जहाँ भी रहूँ , मैं इस घर से दूर तो कभी हो ही नहीं सकती, क्योंकि मैं इस घर में नहीं बसी, यह घर मेरे मन में बस गया है...'

प.पू. गुरुजी को यह संवाद खूब पसंद आया और इसे बदलते हुए प.पू. गुरुजी ने अपनी भावना व्यक्त की–

मैं इस सत्संग में नहीं बसा, यह सत्संग मेरे जी में बस गया है।

❋ प.पू. गुरुजी द्वारा व्यक्त की गई यह भावना वाकई उनके हर एक जॅस्चर में नज़र आती है। पूरे दिन में भक्तों के लगभग पचास से अधिक फोन प.पू. गुरुजी एटेन्ड करते होंगे। चाहे वे मंदिर के दूसरे कार्यों में व्यस्त हों या भोजन ग्रहण कर रहे हों, लेकिन उनसे पूछे बिना सेवक भक्त से फोन पर यह नहीं कह सकता कि प.पू. गुरुजी काम में व्यस्त हैं या भोजन कर रहे हैं। हाँ, प.पू. गुरुजी खुद कहें कि थोड़ी देर में फोन करें, तो ही सेवक ऐसा कहेगा। कई बार तो व्यस्त होने के बावजूद वे ऐसे मुक्तों का फोन भी एटेन्ड करते हैं, जिनका नाम सुन कर पास में बैठे मुक्त भी सोचने लगें कि केवल 'जय स्वामिनारायण' करने के लिए ही फोन किया है, सो यह तो सेवक से भी कहलवाया जा सकता है। और तो और आवाज़ से तनिक भी फोन करने वाले मुक्त को एहसास नहीं होने देते कि वे व्यस्त हैं।

थोड़े समय पहले ही २०१२ के उत्सव के निमित्त किसी विषय में प.पू. गुरुजी से कुछ पूछने के लिए गए। एक घंटा वह कार्य संपन्न होने में लगा। इस एक घंटे में प.पू. गुरुजी ने प्रकाशन इत्यादि के बारे में बात की,

मंदिर निर्माण कार्य के लिए कुछ एकाउन्ट्स देखे,

मंदिर के शिखर की गोलाई कितनी होनी चाहिए, इसके बारे में जानकार मुक्त से बात की

और

मंदिर में लगने वाले पत्थर पर नक्काशी करने वाले शिल्पियों के भोजन की व्यवस्था संबंधी फोन पर एक भक्त से दाल-चावल इत्यादि की बात की।

ये सभी कार्य उन्होंने जिस सहजता से किए, वह तो 'गुणातीत अस्मिता' से युक्त विभूति ही कर सकती है। हम जैसे तो एक ही फील्ड में व्यस्त रहते हुए, अन्यों को एहसास करवा देते हैं कि हम पर अमुक सेवा का भार है, वे हमें परेशान न करें...

❋ प.पू. गुरुजी ने हमेशा दिल से यही माना है कि उनका जन्म सत्संग में ही हुआ है और इस सत्संग में रहना ही अपना सौभाग्य मानते हैं। सो ही उन्हें 'रामायण' में उर्मिला पात्र खूब पसंद है और उन्हें प्रेरणादायक लगता है!

जगजाहिर है कि शादी होते ही चौदह वर्ष अपने पति लक्ष्मण से दूर रहने के बावजूद भी जब रामजी ने उनसे कुछ माँगने के लिए तो उर्मिला ने यही माँगा कि *जन्मोजन्म मुझे रघुकुल में रहने का अवसर मिले!*

यूँ, कई बार विचार आता है कि १९६१ में प.पू. गुरुजी साधु हुए और १९६६ में, संस्था से विमुख होने के कारण, गुरुहरि योगीजी महाराज के स्थूल सान्निध्य से वंचित हो गए। तत्पश्चात्, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने भी १९६७ में, यानि एक वर्ष के बाद, सत्संग प्रचार के लिए हर वर्ष दो-तीन बार दिल्ली भेजना शुरू किया और... १९७१में गुरुहरि योगीजी महाराज अंतर्धान हुए। १९७८ में तो प.पू. काकाजी ने स्थाई रूप से दिल्ली में रहने का आदेश दे दिया। यूँ प.पू. काकाजी का भी स्थूल सान्निध्य मिलना कम हो गया और १९८६ में तो ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के अंतर्धान होने के बाद...!

ऍवरेज निकालें तो जिनके लगाव के वश प.पू. गुरुजी साधु हुए, उन गुरुहरि योगीजी महाराज और ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्थूल सान्निध्य उन्हें बहुत कम प्राप्त हुआ। फिर भी प.पू. गुरुजी ने तो उन्हें पल-पल प्रत्यक्ष मान कर न केवल सत्संग का कार्य किया, बल्कि एक नर्स की भाँति सबकी परवरिश कर रहे हैं। इससे भी अधिक, साथी-मुक्तों, सत्संगियों को ही अपना निजी मान कर जीवन जीते हैं।

कई बार वे कहते हैं कि ***तुम लोगों के अलावा मेरा है ही कौन?***

यह सुन कर तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि प.पू. गुरुजी ने हमें कितना अपना माना है और हम...?

कुछ वर्ष पहले एक प्रसंग बना जब प.पू. गुरुजी ने जिन्हें अपना माना, वे ही प.पू. गुरुजी की निर्दोषता को भलीभाँति जानते हुए भी, 'पक्ष' कहो या 'महोब्बत' या अन्य प्रभाव के कारण, विरोध में बैठे दिखाई दिए। लेकिन, फिर भी ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के नक्शेकदम पर चलते हुए, प.पू. गुरुजी ने उनके प्रति तनिक भी भावफेर नहीं रखा। और तो और, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की कृपा और प्रेरणा से प्रसंग में से खरे उतरने के बाद प.पू. गुरुजी ने उन सभी के प्रति वैसा ही रवैया रखा, जैसा कि हमेशा रखते आए थे। इससे भी अधिक, उस प्रसंग के बाद प.पू. गुरुजी के स्वमुख से निरंतर यही सुना–

काकाजी ने मुझे इस दिव्य समाज में रख दिया, इससे अधिक सौभाग्य क्या हो सकता है? जन्मोंजन्म मुझे इस समाज में सेवा करने का मौका मिलता रहे...

जो सिलाई मशीन के जानकार होंगे, उन्हें मालूम होगा कि उसमें एक धागा ऊपर से पिरोया जाता है और एक धागा मशीन के अंदर बॉबिन में भरा जाता है। वे दोनों धागे एक साथ चलते हैं, तभी सिलाई होती है। परंतु, कपड़े के नीचे बॉबिन का धागा कब खत्म हो जाए, उसका ध्यान रखना पड़ता है। थोड़े दिन पहले सिलाई की मशीन पर मैं कुछ सिल रही थी। खूब स्पीड में मशीन चला रही थी कि जिससे जल्दी से यह काम हो जाए और... बॉबिन का धागा बीच में ही खत्म होने के कारण सिलाई तो थोड़ी ही हो पाई, पर मुझे लगा कि मैंने तो पूरा कपड़ा सिल लिया है। यह देख कर मुझे सहज ही विचार आया–

अपने ढाँचे के मुताबिक वर्त कर हम मन ही मन सोच लेते हैं कि–

ओहो, हमने तो कितनी साधना कर ली

या

अब तो सत्पुरुष को राजी करने की करामात हासिल कर ली

या

सत्पुरुष की मर्जी के मुताबिक हम वर्तने लग गए हैं।

इससे भी अधिक, सत्पुरुष द्वारा एक बार मिली प्रसन्नता को ही पूर्णाहुति मान कर सोच लेते हैं कि हमने तो बहुत प्रगति कर ली।

पर, यदि शांत मन से विचारें तो शटल के धागे के खत्म होने से जैसे सिलाई अधूरी रह जाती है, उसी प्रकार मन-बुद्धि के दायरे में रहते हुए, 'सत्पुरुषरूपी बॉबिन' के धागे का संपर्क-संबंध हम कहीं कोसों दूर तो नहीं छोड़ देते? और... हमारी प्रगति बीच में ही रूक तो नहीं जाती?

सो, **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती** एवं **प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्योत्सव** के पावन अवसर पर उनके श्रीचरणों में यही प्रार्थना है–

हे गुरुजी! जैसे आप कैसे भी संजोगों में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज से सदैव जुड़े रहे, ऐसे ही हम आपसे व प.पू. दीदी से चिपके रहें; क्योंकि यदि आपसे जुड़े रहेंगे, तो स्वभाविक है कि आप हम में कोई कसर नहीं रहने देंगे– यह पूर्ण विश्वास है।

अंत में प.पू. गुरुजी के शब्दों में गद्गद् हृदय से...

भले ही भक्ति भी ऐसी न कर पाएँ हम, चाहे स्थिति पर ऐसी न पहुँच पाएँ हम,
साथ हमारे युगों युगों तक इस धरती पर आप इसी रूप रहना– यही प्रार्थना, यही याचना...

– साध्वी बंसरी, अक्षरज्योति

सौरभ - ४९

स्वामिश्रीजी

जब से प.पू. गुरुजी और प.पू. आनंदी दीदी का मेरे जीवन में प्रवेश हुआ है, तब से मेरा तो सारा जीवन ही बदल गया है। उनके आशीर्वाद से असंभव बातें संभव हो गई हैं।

मेरे सभी गम और आसूँ मानो उन्होंने लेकर मुझे बहुत-बहुत सुखी कर दिया है। जीवन में आनंद-आनंद भर दिया है।

मैं पहले किराए के घर में रहती थी। अमदावाद में मैंने किराए के ग्यारह मकान बदले हैं। दिसंबर २००६ के अंत में प.पू. गुरुजी ने सभी हरिभक्तों को स्वामिनारायण भगवान के पवित्र जन्मस्थल छपिया की धर्मयात्रा कराई थी। उसमें मैं भी गई थी। यात्रा में जाने से पहले मैं किराए का मकान देख कर गई थी और उसका डिपोज़िट भी देकर गई थी। पहली जनवरी को दिल्ली से अमदावाद लौटी और तुरंत ही मुझे घर बदलना था। पर, जैसे ही मैं अपने क्लीनिक पहुँची, मकान मालिक मुझे डिपोज़िट के पैसे लौटाने आया और कहने लगा कि मेरा तो घर बिक गया है। अब आप दूसरी जगह व्यवस्था कर लें। एक-दो दिन मैंने दूसरे मकान ढूँढे। एक जगह सारी बात पक्की हुई और ११ जनवरी २००७ को घर बदलना था। १० जनवरी को ही वह भाई आकर बोला–बहन! मेरे बेटे की शादी पक्की हो गई है, सो, अब घर किराए पर नहीं दे पाऊंगा। दूसरी ओर, मैं जिस घर में रहती थी, वह बिक जाने के कारण किसी भी संजोग में १५ जनवरी तक खाली कर ही देना था। मुझे तो बहुत टेन्शन हो गई कि अब मैं कहाँ जाऊँ? लेकिन, प.पू. गुरुजी और प.पू. आनंदी दीदी में मुझे खूब ही श्रद्धा और विश्वास। प.पू. गुरुजी से बात कहलवाने में संकोच होता था। आख़िर १३ जनवरी को प.पू. आनंदी दीदी को उनका जन्मदिन 'मुबारक' करने के लिए मैंने फोन किया। जन्मदिन मुबारक करने की बजाय मैं फोन पर ही खूब जोर से रोने लगी। बस, उस दिन मैं आख़िरी बार रोई! मैंने प.पू. दीदी को सारी बात बताई और प.पू. गुरुजी को कहलवाने के लिए कहा। तब **प.पू. दीदी** ने मुझसे कहा–

सीमा दीदी, आप घर के बारे में सोचना ही बंद कर दो। सब महाराज पर छोड़ दो। महाराज को अपने भगत के आसूँ पसंद नहीं हैं। आप निश्चिंत होकर क्लीनिक पर जाइए।

बस, उसके बाद मेरे आसूँ बंद हो गए। प.पू. दीदी ने यह भी कहा–

हमारे गुरुजी हर एक समस्या के निवारण के लिए धुन का ही आसरा लेने के लिए कहते हैं। सो, आप खूब बल रख कर काकाजी, पप्पाजी और गुरुजी को याद करके धुन करो।

और... उसी दिन शाम को मुझे मणिनगर के अच्छे एरिया में किराए के घर की चाबी मिल गई! फिर प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी के आशीर्वाद से वही घर सप्टेंबर में चमत्कारिक रूप से दस्तावेज के साथ मेरा अपना हो गया!

सच, प.पू. गुरुजी ने हमारी अपनी हैसियत से भी अधिक सुख दिया है। बस, **वह सुख हमें झेलना आना चाहिए...** मैं खुद को बहुत भाग्यवान मानती हूँ कि मुझे प.पू. गुरुजी मिले। अब एक ही इच्छा है कि महाराज मुझे ऐसा बल दें कि मैं प.पू. गुरुजी जैसा कहते हैं, वैसा वर्तूं और ऐसे वर्तन से उनकी प्रसन्नता प्राप्त करूँ!

...११ अगस्त रविवार की शाम हम घर में बैठे थे! तभी दिल्ली मंदिर से प.पू. गुरुजी के सेवक अभिषेकभाई

का फोन आया कि १५, १६ और १७ अगस्त–तीन दिन की छुट्टी आ रही है; सो, रक्षाबंधन के पर्व पर आप लोगों को गुरुजी बुला रहे हैं। मैंने फोन पर 'हाँ' तो भर दी, लेकिन मन में उदासी थी। मन में विचार आने लगे कि गुरुजी तो अंतर्यामी हैं; उन्हें तो पता ही होगा कि महिने की १०वीं तारीख तक में सभी की तनख़्वाह, घर के लोन की किश्त चुकानी होती है और दूसरे खर्चे भी होते हैं, सो मेरे पास ज्यादा बॅलन्स नहीं होता और फिर राजधानी ट्रेन में आने के लिए कह रहे हैं। तो फिर, उन्हें ऐसी स्थिति बना देनी चाहिए कि उनकी आज्ञा हो तो हम प्लेन से भी दिल्ली पहुँच जाएँ। मन के एक कोने में दृढ़ निष्ठा तो थी ही कि महाराज किसी भी प्रकार मेरा काम कर देंगे। और... उस दिन मेरे क्लीनिक में इतने सारे पेशन्ट्स आए कि ट्रेन की टिकिट के अतिरिक्त भी मेरे पास बॅलन्स बचा रहा। प.पू. गुरुजी ने रक्षाबंधन के पर्व पर प.पू. आनंदी दीदी के वरद् हस्त से प.पू. काकाजी का सिक्का मुझे दिलवाया। **उस दिन के बाद आज तक मुझे कभी भी आर्थिक परेशानी नहीं रही...**

सच, प.पू. गुरुजी तो अंतर्यामी रूप से हमारी बात जान कर कितना सुखी करते हैं! **बस, प.पू. गुरुजी और प.पू. आनंदी दीदी के प्रति १५० प्रतिशत निष्ठा कायम रहे और उनकी गोद में बैठ कर ख़ुशी की लहर को हमेशा के लिए प्राप्त करें।**

– डॉ. सीमा भट्ट, अमदावाद

[મૂળ ગુજરાતી] **સ્વામિશ્રીજી**

...જ્યારથી પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. આનંદીદીદીનો જીવનમાં પ્રવેશ થયો છે, ત્યારથી મારૂં તો આખું જીવન જ બદલાઈ ગયું છે. અશક્ય વાતો એમના જ આશીર્વાદથી શક્ય બની છે.

મારૂં બધું જ દુઃખ અને આંસુ જાણે એમણે લઈને મને ખૂબ ખૂબ સુખી કરી દીધી છે. જીવનમાં આનંદ-આનંદ ભરી દીધો છે.

હું પહેલાં ભાડાના ઘરમાં રહેતી હતી. અમદાવાદમાં મેં ભાડાના અગિયાર મકાન બદલ્યા છે. ડિસેંબર ૨૦૦૬ના અંતમાં પ.પૂ. ગુરૂજીએ બધા હરિભક્તોને સ્વામિનારાયણ ભગવાનના પવિત્ર જન્મસ્થળ છપૈયાની ધર્મયાત્રા કરાવી હતી. હું પણ ગયેલી. ૧લી જાન્યુઆરીએ દિલ્હીથી નીકળી અમે અમદાવાદ પાછા આવ્યા. આવીને તરત જ મારે ઘર બદલવાનું હતું. યાત્રા પહેલાં હું ભાડાનું મકાન જોઈને આવી હતી અને ડિપોઝીટના પૈસા પણ આપી દીધા હતા. જેવી હું દવાખાને પહોંચી કે એ ભાઈ ડિપોઝીટના પૈસા મને પાછા આપવા આવ્યા અને કહ્યું કે મારું તો ઘર વેચાઈ ગયું છે; તમે બીજી વ્યવસ્થા કરી લેજો. એક-બે દિવસમાં મેં બીજું ઘર શોધ્યું. બધી વાતચીત નક્કી થઈ અને ૧૧ જાન્યુ. ૨૦૦૭ના ઘર બદલવાનું નક્કી કર્યું, ત્યાં ૧૦ જાન્યુ.ના એ ભાઈ આવ્યા અને કહે કે બ્હેન! મારા છોકરાનું લગ્ન નક્કી કર્યું છે, એટલે હવે ઘર ભાડે અપાય એમ નથી. બીજી બાજુ, હું જે ઘરમાં રહેતી હતી તે વેચાઈ ગયું હોવાથી કોઈ પણ સંજોગોમાં ૧૫ જાન્યુ. સુધીમાં ખાલી કરીને આપવાનું જ હતું. મને તો ખૂબ ટેન્શન થઈ ગયું કે હવે હું ક્યાં જાઉં? પણ, પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. આનંદીદીદી પર મને ખૂબ જ શ્રદ્ધા અને

વિશ્વાસ. પ.પૂ. ગુરૂજીને વાત કહેવડાવવામાં સંકોચ થાય. આખરે ૧૩મી જાન્યુઆરીએ પ.પૂ. આનંદીદીદીને જન્મદિવસ વીશ કરવા મેં ફોન કર્યો. જન્મદિવસ મુબારક કરવાને બદલે હું તો ચોધાર આંસુએ ફોન પર રડવા લાગી. બસ, એ હું છેલ્લું રડી! મેં પ.પૂ. દીદીને બધી વાત કરી અને પ.પૂ. ગુરૂજીને કહેવા જણાવ્યું. ત્યારે **પ.પૂ. દીદી**એ મને કહ્યું–

સીમા દીદી, આપ ઘર કે બારે મેં સોચના હી બંદ કર દો. સબ મહારાજ પે છોડ દો. મહારાજ કો અપને ભગત કે આંસુ પસંદ નહીં હૈ. આપ નિશ્ચિંત હોકર ક્લીનિક પે જાઈએ.

બસ, ત્યાર પછી મારા આંસુ બંધ થઈ ગયા. પ.પૂ. દીદીએ એ પણ કહેલું–

આપણા ગુરૂજી દરેક સમસ્યાના નિવારણ માટે ધૂનનો જ આશરો લેવાનું કહે છે. માટે તમે ખૂબ જ બળ રાખી કાકાજી, પપ્પાજી અને ગુરૂજીને યાદ કરી ધૂન કરો.

અને... એ જ દિવસે સાંજે મને મણીનગરના સારા એરિયામાં ભાડાના ઘરની ચાવી મળી ગઈ! પછી એ જ ઘર પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. દીદીના આશીર્વાદથી સપ્ટેંબરમાં ચમત્કારિક રીતે દસ્તાવેજ સાથે મારૂં પોતાનું થઈ ગયું!!

ખરેખર, પ.પૂ. ગુરૂજીએ આપણને આપણી હેસિયત કરતાં પણ વધારે સુખ આપ્યું છે. બસ, એ **સુખ આપણને ઝીલતા આવડવું જોઈએ...** હું મારી જાતને ખૂબ જ નસીબદાર માનું છું કે મને પ.પૂ. ગુરૂજી મળ્યા. હવે એક જ ધગશ છે કે પ.પૂ. ગુરૂજી જેમ કહે છે તેમ વર્તું અને એવા વર્તનથી એમનો રાજીપો મેળવું એવું બળ મહારાજ આપે.

...૧૧મી ઑગષ્ટના રવિવારે સાંજે અમે ઘરમાં બેઠા હતાં. ત્યાં દિલ્હી મંદિરેથી પ.પૂ. ગુરૂજીના સેવક અભિષેકભાઈનો ફોન આવ્યો કે ૧૫, ૧૬ અને ૧૭ ઑગષ્ટ–ત્રણ દિવસ રજા આવે છે, તેથી રક્ષાબંધન પર્વ પર તમને બોલાવે છે. મેં ફોન પર 'હા' તો કરી દીધી, પણ મનમાં મૂંઝવણ હતી. મનમાં થાય કે ગુરૂજી તો અંતર્યામી છે; એમને ખબર જ હશે કે મહિનાની ૧૦મી તારીખ સુધીમાં બધાંના પગાર, ઘરની લોનના હફ્તા હોય ને બીજાં બધાં ખર્ચા હોય, એટલે પાસે વધારે બૅલન્સ ન હોય અને પાછા રાજધાનીમાં આવવાનું કહેવડાવે છે. તો પછી એવી જ સ્થિતિ કરાવી આપવી જોઈએ ને કે એમની આજ્ઞા થાય તો અમે પ્લેનમાં પણ દિલ્હી પહોંચી જઈએ. મનમાં એક ખૂણે દૃઢ નિષ્ઠા તો હતી જ કે મહારાજ કોઈ પણ રીતે મારું કામ કરી આપશે જ. તો, એ બે દિવસ મારા દવાખાનામાં એટલા બધાં પેશન્ટ્સ આવ્યા કે ટ્રેનની ટિકિટ ઉપરાંત બીજાં રૂપિયા ય મારી પાસે બૅલન્સ રહ્યા. રક્ષાબંધનના પર્વ પર પ.પૂ. આનંદીદીદીના હસ્તે પ.પૂ. કાકાજીનો સિક્કો મને અપાવ્યો. **તે દિવસ પછી આજ સુધી મને ક્યારે ય આર્થિક ભીંસ રહી નથી...**

ખરેખર, પ.પૂ. ગુરૂજી તો અંતર્યામીપણે આપણી વાત જાણી લઈને કેટલા સુખી કરે છે. **બસ, પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. આનંદીદીદી પ્રત્યે ૧૫૦ પ્રતિશત નિષ્ઠા કાયમ જ રહે અને એમના ખોળામાં બેસીને ખુશીની લ્હેરોને કાયમ માણ્યા જ કરીએ.**

– ડૉ. સીમા ભટ્ટ, અમદાવાદ

✡✡✡

१५ फरवरी– गुणातीत साधु परम पूज्य अक्षरविहारीस्वामिजी को उनके प्राकट्य दिन पर अनंत प्रणाम!

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की दृष्टि से–
चौबीस घंटे अक्षरविहारीस्वामिजी की एक तार निरंतर (कॉन्स्टन्ट) पप्पाजी के साथ जुड़ी रहती है... उन्होंने किसी चीज, वस्तु, पदार्थ का नहीं, बल्कि दैवी गुणों का संग्रह किया है... गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों की उन्होंने सेवा की है, लेकिन अपनी सेवा के लिए वे किसी से कहते नहीं।

हे अक्षरविहारीस्वामिजी! गुरुहरि योगीजी महाराज को राजी करने के लिए माहात्म्ययुक्त सेवा करने में ही आपने परमपद माना और आध्यात्मिक समता की स्थिति प्राप्त की। साधना की शुरुआत से आपने इस लोक की रिद्धि-सिद्धि, ऐश्वर्य को नश्वर मानते हुए एक ही मापदंड रखा कि केवल श्रीजी महाराज और प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप का संबंध ही सत्य! यूँ लोक और परलोक के मूल्याकंनों पर सेरे लगा कर गुणातीतभाव को अपने वर्तन से प्रगटाया है। हर प्रसंग पर सकारात्मक सोच रखते हुए आपने अपना आनंद कभी कम नहीं होने दिया और अन्यों को भी आत्मा की उन्नति की राह पर अग्रसर किया। प्रत्यक्ष गुरुहरि की प्रसन्नता पाने के लिए 'दासत्वभक्ति' को ही अपना एकमात्र ध्येय व साधन अपनाते हुए आपकी जयंती मनाएँ–ऐसी अतंर से प्रार्थना।

७ मार्च, होली – अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का प्राकट्य दिन, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन!

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के पास जूनागढ़ में कई कितने साधु थे, परंतु उन्होंने अपनी ज्ञान विरासत अनादि महामुक्त भगतजी महाराज, पू. जागास्वामी और पू. कृष्णजी अदा को किया। उसका रहस्य क्या? इन विभूतियों के जीवन का कोई भी पहलू देखेंगे, तो ख्याल आएगा कि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की आज्ञा, रुचि, रहस्य और अभिप्राय के मुताबिक ही वे जिए थे। स्वामी की अपार महिमा के ज्ञाता होने के कारण, संबंध वाले को सदैव ब्रह्म की मूर्ति मानने में उन्हें कभी कोई दुविधा या अड़चन नहीं आई। जड़ हो या चेतन, केवल संबंध देख कर वे झुक जाते। ऐसे महामुक्त **भगतजी महाराज के प्राकट्य पर्व** पर अहम्‌रहित जीवन जीने का संकल्प करें। साथ ही, अजन्मे-कालातीत युगपुरुष, विभूतिपुरुष **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन ७ मार्च** पर प्रार्थना करें –
हे काकाजी, आपका जीवन तो स्वामीसेवकभाव युक्त समर्पण से भरसक, गुरुभक्ति का आदर्श स्वरूप! क्षितिज की भाँति उसका छोर पाना असंभव है। हम तो आपके नादान और अबोध बालक हैं। आपकी स्मृतियाँ हमारे जीवन का केन्द्र बनें। स्थूल देह में रहते हुए आपने हमारे संपूर्ण विकास और कल्याण के लिए जो परिश्रम किया, उसका मनन-चिंतन करते हुए **धुलेन्डी – प.पू. साहेब के प्राकट्य दिन** के निमित्त हम प्रगट प्रभु के रंग में सही अर्थ में रंग जाने के लिए अंतर से पुकार करें...

प.पू. साहेब यानि – सब में रसबस दिखाई देते हुए भी भीतर से तो एक प्रभु में ही लीन एकरूप! प.पू. बापा कहते– *युवक मेरा हृदय हैं...* प.पू. बापा ने प.पू. साहेब को भगवा कपड़े नहीं दिए, लेकिन अंतर ऐसा भगवा कर दिया कि आज मुमुक्षु उनमें अपने आप खिंचे जाते हैं। इतना ही नहीं, प्रभु के मार्ग पर चलने के लिए तैयार हो जाते हैं। इतिहास साक्षी है कि ऋषि-मुनि सालों तक साधना कर-करके भी अपनी वृत्तियो को काबू नहीं कर सके। अपने मार्ग से फिसल गए... युवा शक्ति को आसानी के नियम-मर्यादा में रखना, जगत में रहते हुए माया से अलिप्त रखना, वो तो प्रभुधारक गुणातीत विभूति के अतिरिक्त किसी और के द्वारा करा पाना संभव ही नहीं। अपने वर्तन से प.पू. साहेब का परिचय करवाते युवक आज के समाज के लिए आदर्श रूप हैं और अपनी आध्यात्मिक प्रगति

करा रहे हैं। यह सब देख कर ख्याल आता है कि प.पू. साहेब की अनुपम पात्रता देख कर ही प.पू. बापा ने युवकों के कार्यक्षेत्र के लिए उन्हें चुना... सिंहनी का दूध तो स्वर्णपात्र में ही टिकता है न!

साधकों को सचेत करते हुए लालबत्ती के रूप में प.पू. साहेब का एक ही सिद्धांत है कि दूसरों की कोई भी झंझट में पड़ना नहीं, बराबरी या अन्य मत्थापच्ची में पड़ना ही नहीं। केवल गुणग्राहक दृष्टि रखते हुए हर एक में से गुण लिया करना। सच्ची साधुता प्राप्त करने हेतु, इस सिद्धांत को वर्तन में लाने के लिए ८ **मार्च, धुलेन्डी–प.पू. साहेब प्राकट्य पर्व** पर उनके श्रीचरणों में आशिष याचना करें।

✡✡✡

भगवत्स्वरूप प.पू. हरिभाई साहेब को श्रद्धा नमन!

१८ दिसंबर २०११, सायं ४:०० बजे फोन पर पू. वशीभाई से प.पू. गुरुजी को खबर मिली कि प.पू. हरिभाई साहेब ने अचानक हार्ट अटैक आने से स्थूल शरीर छोड़ दिया है... यह सुन कर प.पू. गुरुजी थोड़ी देर तक तो आश्चर्य से सन्न रह गए। क्योंकि थोड़े दिन पहले ही, विद्यानगर में 'पराभक्ति पर्व' पर, उनके दर्शन हुए थे और अब 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' निमित्त सभी को दर्शन देने के लिए वे माणावदर से दिल्ली आने वाले थे कि अचानक यह!

शिस्त, सेवा एवं समर्पण के प्रतीक प.पू. हरिभाई साहेब का स्मरण करते ही एक इतिहास नज़रसमक्ष आ जाता है कि प.पू. बापा के प्रति उनकी स्वरूपनिष्ठा कैसी अजोड़ थी। संस्था में जब हम सब इकट्ठे थे, तब 'माणावदर' के लिए कहा जाता कि *'माणावदर तो दादुभाई साहेब का!'* दूसरी ओर–प.पू. काकाजी भी कई बार कहते– *'माणावदर मेरा निजी!'*

दरअसल, प.पू. हरिभाई साहेब ने गुणातीत समाज में नींव का पत्थर बन कर सेवा की है। पल-पल प्रभु को अंतर्यामी मान कर, प्रभु के प्रति वफादारी से सभी की निष्कामभाव से सेवा और प्रार्थना करते रहे। प.पू. काकाजी ने प.पू. हरिभाई साहेब के नेतृत्व में माणावदर में 'एक रुचिवाला' मंडल तैयार करवाया था, जिसने प.पू. बापा की एक आवाज़ पर, अपना कलेजा चीर कर, अपने प्यारे अट्ठारह बेटों को साधु बनाने के लिए सौंप दिया! और तो और, उन साधुओं के लिए भी संस्था में यही कहा जाता– ***'ये तो दादुभाई के साधु!'*** जब भी प.पू. काकाजी सौराष्ट्र के दौरे पर जाते, तो प.पू. हरिभाई साहेब उन्हें लेने के लिए राजकोट तक अचूक आते और पूरे विचरण के दौरान उनके साथ रह कर राजकोट तक छोड़ने भी जाते! उन दिनों कई तो उन्हें **'छोटे दादुभाई साहेब'** भी कहते!

गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा से सत्संग के विकास के लिए प.पू. हरिभाई साहेब ने बहुत भागदौड़ की... अपमान, गालियाँ आदि भी सही। पर, इन सब की परवाह किए बिना १९६६ तक सौराष्ट्र का यह सिंह प.पू. काकाजी के साथ सत्संग के कार्य में जुटा ही रहा। यहाँ तक कि अपनी संतान भी 'गुणातीत समाज' को समर्पित कर दी! दो बेटियाँ प.पू. पप्पाजी की निश्रा में गुणातीत ज्योत में और एक पुत्र प.पू. साहेब की निश्रा में अनुपम मिशन में भगवान भजते हुए प.पू. हरिभाई साहेब का वारसा संभाले हुए हैं। यूँ, प.पू. हरिभाई साहेब द्वारा अदा की गई भक्ति भूले न भुला पाएँगे।

उन्होंने प.पू. बापा और प.पू. काकाजी के प्रति बुद्धि से परे की भक्ति अदा की। प.पू. गुरुजी अकसर उनका प्रसंग दोहराते भी रहते हैं कि एक बार प.पू. काकाजी ने राजकोट में उनसे कहा कि रेलवे

स्टेशन से कुछ पोस्टल स्टेम्प लेकर आओ। खूब सोचने की बात थी कि पोस्टल स्टेम्प तो पोस्ट ऑफिस में मिलती है और प.पू. हरिभाई साहेब तो पढ़े-लिखे थे। फिर भी, अपना तनिक भी दिमाग़ लगाए बिना, वे रेलवे स्टेशन गए और वहाँ जाकर स्टेम्प माँगी! कमाल की बात कि उस कर्मचारी के पास एक दिन पहले ही कुछ पोस्टल स्टेम्प आई थी और उसके पास उतनी स्टेम्प्स थी, जितनी प.पू. काकाजी ने मंगवाई थी!! कर्मचारी ने भी वे उन्हें दे दीं। खूब मर्मभरी बात यह है कि प.पू. हरिभाई साहेब ने प.पू. काकाजी के वचन में ज़रा-भी तर्क नहीं लगाया, तभी तो उन्हें प.पू. काकाजी के अंतर्यामी स्वरूप का अनुभव भी हुआ।

जिन्होंने सभी के दास बन कर, वीरता से घर और देह मंदिर बनाया, ऐसे प.पू. हरिभाई साहेब के अक्षरधामगमन होने पर, उनके श्रीचरणों में यही श्रद्धा सुमन प्रस्तुत करें कि उनके ऐसे जीवन प्रसंगों की, अपने प्रगट प्रभु के प्रति भक्ति अदा करने करने हेतु, निरंतर जुगाली करते रहें–ऐसा बल, बुद्धियोग सभी गुणातीत स्वरूप दें–ऐसी प्रार्थना!

✡ ✡ ✡

सुहास पराभक्ति पर्व की!

भगवान के भक्तों की भक्ति यानि–पराभक्ति! और... पराभक्ति के मूर्तस्वरूप **गुरुहरि पप्पाजी महाराज** के ९५वें प्राकट्य उत्सव के जिन्होंने दर्शन किए, सेवा और समागम का लाभ लिया, वे सभी निहाल हो गए... प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी भी, प.पू. पप्पाजी के प्रति भक्ति अदा करने व उत्तरभारत के मुक्तों को यह अमूल्य लाभ दिलवाने के लिए, करीब ६५ भक्तों के साथ ११ नंवबर को ब्रह्मज्योति पहुँच गए थे।

गुरुहरि योगीस्वरूप प.पू. पप्पाजी के प्रति भक्ति अदा करते हुए, **११ नवंबर २०११** की सुबह ब्रह्ममुहूर्त में, उत्सव का प्रारंभ हुआ। प.पू. पप्पाजी की मूर्ति को पुष्पों से सुशोभित कलात्मक रथ में विराजमान करके, और प.पू. पप्पाजी को खूब पसंद श्वेतांबर धारण करके, भाइयों ने प्रभुकृपा और गुणातीत ज्योत की प्रदक्षिणा करके, प्रभातफेरी शुरू की। पूरा रास्ता 'स्वामिनारायण' मंत्र के उद्घोष से गूंज उठा! साथ ही एक वर्ष से सभी मुक्त जो महामंत्र लिख रहे थे, उन ११ करोड़ मंत्रों की पोथियों को लाल रंग के आसन में सजा कर, गृहस्थ भाभियाँ व किशोर बहनें सिर पर धारण करके चल रही थीं। 'ब्रह्मज्योति' होते हुए, डांडिया रास करते हुए महामंत्र पोथी की शोभायात्रा 'पप्पाजी तीर्थ' पर पहुँची। वहाँ अक्षत और पुष्प से स्वागत करते हुए उन सभी पोथियों को महापूजा के लिए रखा गया। ९५९५ मंत्रपोथियों के कुंभ का भी यहाँ पूजन हुआ। महापूजा संपन्न होने के बाद **प.पू. दीदी** के वरद् हस्तों **महापूजा की वीडियो** डी वी डी का अनावरण हुआ और **प.पू. वशीभाई** ने **२०१२ के कॅलेन्डर** का अनावरण किया। तत्पश्चात् गुणातीत प्रकाश के व्रतधारी भाइयों ने वे मंत्रपोथियाँ शाश्वत् धाम की नींव में पधराई।

सायं गुणातीत मिशन लंडन की ओर से विशिष्ट विडीयो दर्शन कराया गया। १९८० से २००२ दौरान सोलह बार लंडन की भूमि पर विहार करके प.पू. पप्पाजी ने जो तीर्थत्व प्रदान किया, अपनी उम्र या नादुरस्त तबियत की परवाह न करते हुए, वहाँ के मुक्तों की परवरिश करने के लिए जो अनथक् परिश्रम किया, डेढ़ घंटे तक उसका दर्शन करके सभी की आँखें नम हो गईं और भक्ति अदा करने के लिए लंडन के मुक्तों को सभी ने अंतर से धन्यवाद दिया।

उत्सव के दूसरे दिन यानि **१२ नंवबर** की सुबह 'महिमागान सभा' में सभी बहनों, भाभियों एवं हरिभक्तों ने, गुणातीत ज्योत की वडील बहनों की निश्रा में, अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं और उनसे आशीर्वाद प्राप्त

किए। सायं '**जेनुं प्रागट्य श्रीजी संकल्पे**' सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा प.पू. पप्पाजी के जीवन और कार्य का सभी ने दर्शन किया। करीब पौने तीन घंटे का यह कार्यक्रम सभी को अंतर तक खूब छू गया।

तीसरे दिन **१३ नवंबर**–उत्सव की मुख्य सभा का दृश्य तो अद्वितीय ही था। 'स्वागत हो गुणातीत स्वरूपों...' स्वागत भजन गाते हुए बाल-किशोरों ने सभी स्वरूपों का स्वागत किया। और... इतने में ही मंच के मध्य से गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति भूगर्भ से प्रगट हुई। वे क्षण सभी को चिरंजीव स्मृति दे गए। गुरुहरि पप्पाजी का पुष्प हार से स्वागत करने के बाद, मंच पर उपस्थित सभी स्वरुपों, वडील संतों और गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया गया। पराभक्ति पर्व की शाश्वत् स्मृति रूप में 'परावाणीप्रसाद' ऑडियो, 'पगले पगले तीरथ' विडियो, 'अमृत वचनम्' ऑडियो सीडी और 'पराभक्तिनी सौरभ' पुस्तक का अनावरण स्वरूपों-मुक्तों के वरद् हस्तों द्वारा हुआ। मुक्तों द्वारा 'अनुभवगान' सुन कर, सभी ने प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के एवं ध्वनिमुद्रण द्वारा गुरुहरि पप्पाजी के आशीर्वाद प्राप्त किए। तत्पश्चात् 'पराभक्ति पर्व 95' अक्षरअंकित गुणातीत समाज के प्रतीक के रूप में, आठ केक गुरुहरि पप्पाजी को अर्पण किए गए। भावात्मक एकता के प्रतीक के रूप में गुणातीत समाज के छः केन्द्रों के प्रतिनिधियों के रूप में मुक्तों, संतों, व्रतधारी युवकों, समर्पित गृहस्थों एवं व्रतधारी बहनों द्वारा केक कटिंग हुई।

उत्सव की पूर्णाहुति में अद्भुत ध्वज समारोह हुआ। सभी स्वरूपों और मुक्तों ने गुणातीत समाज का ध्वज लहराते हुए ध्वजगान गाया और पप्पाजी का हो जय जयकार, पप्पाजी के संकल्प का हो जय जयकार, संप, सुहृद्‌भाव, एकता का हो जय जयकार के नाद के साथ, चिदाकाश में विहार करते हुए पप्पाजी तीर्थ की पावन धरा से तीन दिन की अविस्मरणीय स्मृतियाँ लेकर, सभी मुक्तों ने धन्यता का अनुभव किया।

'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' में दिल्ली आ रहे मुक्तों के लिए जरूरी सूचना...

'**योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव**' निमित्त पूरा गुणातीत कुनबा **2 से 5 फरवरी 2012** तक दिल्ली मंदिर में एकत्रित होगा। हमारी यही एक भावना है कि किसी को भी कोई असुविधा न हो। सो–

1. भाइयों और बहनों के ठहरने की व्यवस्था अलग-अलग की गई है। कृपया आप अपना सामान अलग-अलग लेकर आएँ।
2. अपने बैगादि सामान पर अपने नाम का लेबल व पता अवश्य लगाएँ।
3. कमरा बंद करने के लिए ताला-चाबी साथ में लाएँ, ताकि जरुरत पड़ने पर इसका उपयोग किया जा सके।
4. कपड़ों पर वॉटरप्रूफ स्याही से अपना नाम लिखें, जिससे कि खोने की संभावना न रहे।
5. सर्दी पड़ रही होगी, सो स्वेटर, शाल, गरम कपड़े, जुराबें, मफलर इत्यादि साथ लेकर आएँ।
6. दैनिक जीवन की जरूरत की वस्तुएँ जैसे तौलिया, ब्रश, पेस्ट, साबुन, तेल, शैम्पू, कोल्डक्रीम, कंघी तथा **जरूरी दवाइयाँ** अवश्य लेकर आएँ।
7. छोटे बच्चों की जरूरत की वस्तुएँ जैसे बिस्तर पर बिछाने का प्लास्टिक, दूध की बोतल इत्यादि साथ लाएँ।
8. उत्सव के दौरान सभी को 'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' का बैच लगाना अनिवार्य होगा, जिसे **रजिस्ट्रेशन** ऑफिस से आप प्राप्त कर पाओगे।
9. मंदिर आने पर, अपने ठहरने के स्थान की जानकारी '**एड्मिनिस्ट्रेटिव**' काउंटर से प्राप्त करें।
10. **अपने साथ आए बच्चों की जेब में मंदिर के एड्रेस का कार्ड हमेशा रखें।**
11. सभा के दौरान सभी को दर्शन का व्यवस्थित लाभ मिले, सो कृपया व्यक्तिगत फोटो या वीडियो खींचने-खिंचवाने का आग्रह न रखें। डीवीडी तैयार होने पर स्मृति के लिए जरूर उपलब्ध होगी।
12. **कार्यक्रमों के दौरान आप कृपया अपना मोबाईल बंद या वाईब्रेटर पर रखें, ताकि सभी उपस्थित जन शांति से सभा का लाभ ले सकें!**
13. आपके रहने की व्यवस्था जहाँ पर की गई हो, कृपया वहीं ठहर कर हमें अपना सहयोग दें...

यह उत्सव हम सब का अपना है... एक परिवार की तरह इकट्ठे होकर आनंद करना है और भक्ति अदा करनी है।

આવો દિલ્હી.. ૩, ૪, ૫ – ફેબ્રુઆરી ૨૦૧૨

(કાકા હે ! આકાશ છો તમ, બહુ આવો યાદ પ્રીતમ...)

ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની પ્રગટની યુગલ ઉપાસનાના સ્વરૂપસિદ્ધ,
બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના રાજદુલારા અને બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજના પ્રાણજ્યોતિ એવા પ.પૂ. કાકાશ્રી!
એમણે સર્વપ્રથમ ઝંપલાવી અસલી નારાયણને જોયા ને પરમ પૂજ્ય યોગીબાપા રૂપે એ પ્રગટ પ્રભુને ઓળખી-પામી-રાખી-વશ કરી
આપણને ઓળખાવ્યા, આપ્યા ને એમાં રહેતાં કર્યાં ! પોતાને થયેલા સાક્ષાત્કારની તો જાણે લ્હાણી કરી!
તેથી જ, જોગી જગતના તેઓ સર્જક બન્યા-સુકાની બન્યા!!
આપણ સહુ માટે અરે! અનેક ભક્તો-મુક્તો માટે સંકલ્પ પરની દિવ્યભૂમિકાની પ્રેરણામૂર્તિ બન્યા ને દ્રષ્ટાઓના દ્રષ્ટા બન્યા!!!
એમને લઈને તો 'યોગી પરિવાર'માંથી પાંગરેલા 'ગુણાતીત સમાજ'માં આજે આપણું અસ્તિત્વ છે.
એ **ગુરૂહરિ પ.પૂ. કાકાશ્રીના આ ઐતિહાસિક અને અપૂર્વ સાક્ષાત્કારની હીરક જયંતી** ૨૦૧૨ની ત્રીજી ફેબ્રુઆરીના શુક્રવારે આવી રહી છે.
આપણે સહુ ભેગા મળી **'યોગી પરિવાર હીરક આનંદોત્સવ'રૂપે એ ૨૦૧૨ના શુક્ર-શનિ-રવિવારે એમ ૩, ૪ અને ૫ ફેબ્રુઆરી**ના ત્રણ દિવસ
દિલ્હીના આપણા મંદિરે સર્વે પ્રત્યક્ષ ગુણાતીત સ્વરૂપો, ગુણાતીત સમાજના સહુ જ્યોતિર્ધરોની નિશ્રામાં
અને
દેશ-વિદેશના અનેક મુકતોની હાજરીમાં અનેરા ઉત્સાહથી ભક્તિભાવપૂર્વક ઊજવીશું.
વળી, બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજ દ્વારા ૧૯૬૧માં દીક્ષિત ૫૧ યોગેશ્વરો પૈકીના
અને
ગુરૂહરિ પ.પૂ. કાકાશ્રીના દિવ્ય માનસપુત્ર ને સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોના લાડીલા
ને
અનેક સાધક મુક્તોના આદર્શ તેમજ કુટુંબભાવથી ઓતપ્રોત એવા વિશાળ ભક્ત સમુદાયના હૃદય સિંહાસને વિરાજેલા
ગુરૂ, સુહૃદ્ અને પથપ્રદર્શક એવા આપણાં સહુના વ્હાલા **પરમ પૂજ્ય ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાકટ્ય દિવસ** પણ આ વર્ષે જ આવી રહ્યો છે.
ગુરૂભક્તિના આદર્શ એવા પરમ પૂજ્ય ગુરૂજીની અંતરની ઈચ્છા અને આજ્ઞાને અનુસરી
એમનો આ ૭૫મો પ્રાકટ્ય દિવસ **આ મહોત્સવ અંતર્ગત જ ૫મી ફેબ્રુઆરીના સાંજે ઊજવીશું.**

પરમ પૂજ્ય હંસાદીદીના શબ્દોમાં–**'કાકા રે, કાકા રે, આજ આવ્યું ટાણું ; નજરાણું તમને દેવાનું...'**

તો, આ દિવ્ય મહોત્સવે સપરિવાર મિત્રમંડળ સહિત **૨૦૧૨ની ફેબ્રુઆરીના આ દિવસોમાં દિલ્હી આવવું રખે ચૂકતા...**
આવો... પધારો... ધન્ય થાઓ...

आओ दिल्ली...

दिनाँक 3-4-5 फरवरी, 2012 के शुक्र-शनि-रविवार को
गुरुवर्य ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज और गुरुवर्य ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज के
लाड़ले दिव्य मानस सपूत, बृहद् गुणातीत समाज के अजोड़ सर्जक
एवं
हम सभी के प्राणाधार गुरुहरि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के
ऐतिहासिक और अपूर्व साक्षात्कार की हीरक जयंती महोत्सव
दिल्ली मंदिर की कलशविधि और इसी के अंतर्गत
ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज द्वारा दीक्षित,
ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के लाड़ले
व
हम सभी के आदर्श, सुहृद्, पथप्रदर्शक प.पू. गुरुजी का 75वाँ प्राकट्य दिन मनाने...

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	9.1.2012, सोमवार	–	**पौषी पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन**
(2)	दि.	13.1.'12, शुक्रवार	–	लोहड़ी
(3)	दि.	14.1.'12, शनिवार	–	मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन
(4)	दि.	19.1.'12, गुरुवार	–	एकादशी – व्रत **ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि**
(5)	दि.	28.1.'12, शनिवार	–	वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, **ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन**
(6)	दि.	**3-4-5 फरवरी** **शुक्र-शनि-रवि**	–	**'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव-2012'** **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती,** **दिल्ली मंदिर की कलशविधि एवं प.पू. गुरुजी का 75वाँ प्राकट्योत्सव** ***(3 फरवरी 2012 – एकादशी, व्रत)***
(7)	दि.	15.2.'12, बुधवार	–	**प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का प्राकट्य दिन**
(8)	दि.	18.2.'12, शनिवार	–	एकादशी, व्रत
(9)	दि.	20.2.'12, सोमवार	–	महाशिवरात्रि, व्रत
(10)	दि.	22.2.'12, बुधवार	–	**प.पू. गुरुजी की 75वीं प्राकट्य तिथि**
(11)	दि.	4.3.'12, रविवार	–	एकादशी, व्रत
(12)	दि.	7.3.'12, बुधवार	–	होली, होलिका दहन, **ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की प्राकट्य तिथि** **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन**
(13)	दि.	8.3.'12, गुरुवार	–	धुलेन्डी, *दिल्ली मंदिर में* ***चंदनोत्सव*** *सुबह 8:30 बजे से...* **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. साहेब की प्राकट्य तिथि**
(14)	दि.	13.3.'12, मंगलवार	–	**प.पू. गुरुजी का 75वां प्राकट्य दिन**

(Air Mail) '**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'*Taad-dev*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052